Genesis. in Hindi.

Translated by Rev. W. Bowley.

R. Calcutta, 1829.

उत्पत्ति की पुस्तक ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ आरंभ में ईश्वर ने आकाश और पृथिवी को उत्पन्न किया।
२ और पृथिवी बेडौल और सूनी थी और गहिराव के ऊपर
अंधियारा था और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर
३ डोलता था। और परमेश्वर ने कहा कि उंजियाला
४ होवे और उंजियाला होगया। और परमेश्वर ने उंजियाले
को देखा कि अच्छा है और परमेश्वर ने उंजियाले और
५ अंधियाले के मध्य में बिभाग किया। और परमेश्वर ने
उंजियाले को दिन और अंधियाले को रात कहा और सांझ
६ और बिहान पहिला दिन हुआ। फेर परमेश्वर ने
कहा कि जलों के मध्य में आकाश होवे और जलों को जलों
७ से बिभाग करे। तब परमेश्वर ने आकाश को बनाया और
उन जलों को जो आकाश के तले थे उन जलों से जो ऊपर
८ थे बिभाग किया और ऐसा होगया। और परमेश्वर ने
आकाश को स्वर्ग कहा और सांझ और बिहान दूसरा दिन
९ हुआ। फेर परमेश्वर ने कहा कि समस्त जल जो स्वर्ग के
तले हैं एकही स्थान में एकट्ठे होवें और सूखी दिखाई देवे
१० और ऐसा होगया। और परमेश्वर ने सूखी को भूमि कहा
और एकट्ठे कियेगये जल को समुद्र कहा और परमेश्वर ने
११ देखा कि अच्छा है। और परमेश्वर ने कहा कि भूमि घास
को और साग पात को जिनमें बीज हो उगावे और फल के
वृक्षों को जो अपनी अपनी भांति के समान फल देवें जिनके
बीज भूमि पर आपमें होवें उगावे और ऐसा होगया।

१२ और भूमि ने घास और साग पात को अपनी अपनी भांति
के समान जिनमें बीज हों और फल के वृक्षों को जिसका
बीज उसमें होवे उसकी भांति के समान उगाया और
१३ परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। सो सांझ और बिहान
१४ तीसरा दिन ऊआ। और परमेश्वर ने कहा कि स्वर्ग के
आकाश में ज्योति देनेवाली वस्तें होवें कि दिन और रात के
मध्य में विभाग करें और वे चिन्हों और ऋतुन और दिनों
१५ और बरसों के कारण होवें। और वे स्वर्ग के आकाश में
ज्योति के कारण होवें कि पृथिवी को उंजियाला करें और
१६ ऐसा होगया। और परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योति बनाईं
एक बड़ी ज्योति दिन की प्रधानता के लिये और उसे छोटी
ज्योति रात की प्रधानता के लिये होवे और उसने तारे भी
१७ बनाये। और परमेश्वर ने उन्हें स्वर्ग के आकाश में रक्खा कि
१८ पृथिवी को उंजियाला करें। और दिन पर और रात पर
प्रभुता करें और उंजियाले को अंधियाले से बिभाग करें और
१९ परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। सो सांझ और बिहान
२० चौथा दिन ऊआ। और परमेश्वर ने कहा कि जल
बऊताई से रेंगनेवाले जीवधारी और पक्षियों को जो पृथिवी
के ऊपर स्वर्ग के आकाश पर उड़ें जल बऊताई से उपजावें।
२१ सो ईश्वर ने बड़ी बड़ी मछलियों को और हरएक जीवधारी
को जो रेंग के चलते हैं जिन्हें जलों ने उनकी भांति भांति
के समान बऊताई से उपजाया और हरएक पक्षी को
उसकी भांति भांति के समान उत्पन्न किया और परमेश्वर ने
२२ देखा कि अच्छा है। और परमेश्वर ने उनको वर देके कहा
कि फलमान होओ और बढ़ो और समुद्र के जलों को भरो
२३ और पक्षी पृथिवी पर बढ़ें। और सांझ और बिहान
२४ पांचवां दिन ऊआ। और परमेश्वर ने कहा कि पृथिवी
हरएक जीवधारी को उसकी भांति भांति के समान अर्थात

पशु और रेंगनेवाले जंतु को और बनैले पशुन को उनकी
२५ भांति के समान उत्पन्न करे और ऐसा होगया। कि
परमेश्वर ने बनैले पशुन को उनकी भांति भांति के समान
और पशु को उनकी भांति के समान और पृथिवी के हरएक
जंतु को जो पृथिवी पर रेंगताहै उसकी भांति के समान बनाया
२६ और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। तब परमेश्वर
ने कहा कि हम मनुष्य को अपने स्वरूप में अपने समान
बनावें और वुह समुद्र की मछलियों और आकाश के पछियों
और समस्त पशु और सारी पृथिवी पर और पृथिवी पर
२७ की हरएक रेंगनेवाली बस्तु पर प्रधान होवे। तब परमेश्वर
ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया परमेश्वर के स्वरूप में
उसने उसे उत्पन्न किया उसने उन्हें नर और नारी बनाये।
२८ और परमेश्वर ने उन्हें बर दिया और परमेश्वर ने उन्हें
कहा कि फलमय होओ और बढ़ो और पृथिवी को भरपूर
करो और उसे बश में करो और समुद्र की मछलियों और
आकाश के पछियों और हरएक जीवधारी पर जो भूमि
२९ पर रेंगता चलताहै प्रभुता करो। और परमेश्वर ने
कहा लेउ मैं ने हरएक बीजधारी साग पात को जो समस्त
पृथिवी पर है और हरएक बृक्ष को जिसमें फल है जो
बीज उपजावताहै तुम्हें दिया और यह तुम्हारे खाने के लिये
३० होगा। और भूमि के हरएक जीवधारी और आकाश के
हरएक पछी को और भूमि के हरएक रेंगके चलनेवाले को
और जिसमें जीवकी श्वास है और हरएक प्रकार की
३१ हरियाली भी खाने को दिई और ऐसा हुआ। फिर
परमेश्वर ने हरएक बस्तु पर जिसे उसने बनायाथा दृष्टि
किई और देखा कि बहुत अच्छी और सांझ और बिहान
छठवां दिन हुआ।

२ दूसरा पर्व।

१ सो स्वर्ग और पृथिवी और उनकी सारी सेना संपूर्ण
२ हुईं। और ईश्वर ने अपने कार्यों को जो उसने कियाथा
सातवें दिन में समाप्त किया और उसने सातवें दिन में
अपने सारे कार्यों से जो उसने कियाथा बिश्राम किया।
३ और ईश्वर ने सातवें दिन पर आशीष दिया और पवित्र
ठहराया इस कारण कि उसीमें उसने अपने सारे कार्यों
से जो ईश्वर ने उत्पन्न किया और बनाया बिश्राम किया।
४ सो स्वर्ग और पृथिवी की उत्पत्ति ये हैं जब वे उत्पन्न किये
गये जिस दिन में यहोवा ईश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को
और खेत के हरएक घास पात को जो पृथिवी पर न था
और भूमि की हरएक हरियाली को जो आगे न थी उत्पन्न
५ किया। क्योंकि यहोवा ईश्वर ने अब लों पृथिवी पर मेंह न
बरसाया था और मनुष्य न था कि पृथिवी को जोते बोवे।
६ परंतु कुहासा पृथिवी से उठताथा और समस्त भूमि को
७ सींचताथा। तब यहोवा ईश्वर ने भूमि की धूल से मनुष्य को
बनाया और उसके नथुनों में जीवन का श्वास फूंका सो मनुष्य
८ जीवता प्राण हुआ। और यहोवा ईश्वर ने अदन में पूरब
की ओर एक बाटिका लगाई और उस मनुष्य को जिसे उसने
९ बनायाथा उसमें रक्खा। और यहोवा ईश्वर ने हरएक
वृक्ष को जो दृष्टि में सुन्दर और खाने में अच्छा था और
उस बाटिका के मध्य में जीवन का वृक्ष और भले बुरे के
१० ज्ञान का वृक्ष भूमि से उगाया। और उस बाटिका को
सींचने के लिये अदन से एक नदी निकली और वहांसे
११ बिभाग होके चार मोहाने हुए। पहिली का नाम फैसून
१२ जो हवीले की भूमि को जहां सोना होताहै घेरतीहै। और
उस भूमिका सोना चोखा होताहै और वहां मोती और
१३ बिलार होताहै। और दूसरी नदी का नाम जैहून है यह

१४ वही है जो हबस की भूमि को घेरती है। और तीसरी
नदी का नाम हद्दकल है यह वही है जो असूर की पूरब
१५ ओर जाती है और चौथी नदी फुरात है। और यहोवा
ईश्वर ने मनुष्य को लिया और अदन की बाटिका में रक्खा
१६ कि उसे सुधारे और उसकी रखवाली करे। और यहोवा
ने मनुष्य को आज्ञा देके कहा कि तू इस बाटिका के हरएक
१७ वृक्ष का फल खायाकर। परंतु भले और बुरे के ज्ञान के
वृक्ष से मत खाना क्योंकि जिस दिन तू उसे खायगा तू मरते
१८ मरेगा। और यहोवा ईश्वर ने कहा कि मनुष्य को अकेला
रहना अच्छा नहीं मैं उसके लिये उपकारिणी बनाता हों।
१९ तब यहोवा ईश्वर जिसने भूमि से हरएक बनैले पशु और
आकाश के पक्षी बनाये थे उनको मनुष्य के पास लाया कि
देखे कि उनके क्या क्या नाम रखता है और जो कुछ कि
मनुष्य ने हरएक जीते जंतु को कहा वही उसका नाम हुआ।
२० और मनुष्य ने हरएक पशु का और आकाश के पक्षी और
बन्य पशु का नाम रक्खा पर आदम के लिये उसके समान
२१ उपकारिणी न निकली। फिर यहोवा ईश्वर ने मनुष्य को
बड़ी नीन्द में डाला और वुह सोगया तब उसने उसकी
पसुलियों में से एक निकाली और उसकी संती मांस भर
२२ दिया। और यहोवा ईश्वर ने मनुष्य की उस पसुली से जो
उसने लिई थी एक नारी बनाई और उसे नर पास लाया।
२३ तब नर बोला यह तो मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे
मांस में का मांस है वुह नारी कहलावेगी क्योंकि यह नर से
२४ निकाली गई। इसकारण नर अपने माता पिता को छोड़ेगा
और अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे दोनों एक मांस
२५ होंगे। और मनुष्य और उसकी पत्नी दोनों के दोनों नंगे थे
और लज्जित न थे।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ और सर्प्प भूमि के हरएक पशु से जिसे यहोवा ईश्वर ने
बनायाथा चतुर था सो उसने स्त्री से कहा क्या ईश्वर ने
सत्य कहाहै कि तुम इस बाटिका के समस्त वृक्षों का फल
२ मत खाओ। स्त्री ने सर्प्प से कहा कि हम तो इस बाटिका के
३ वृक्षों का फल खाते हैं। परंतु उस वृक्ष का फल जो बाटिका
के बीचोंबीच है ईश्वर ने कहाहै कि तुम उसे न खाना और
४ न छूना ऐसा न होवे कि तुम मरजाओ। तब सर्प्प ने स्त्री को
५ कहा कि तुम न मरोगे। क्योंकि ईश्वर जानताहै कि तुम
जिस दिन उसे खाओगे तुम्हारी आंखें खुलजायेंगी और
तुम भले और बुरे की पहिचान में ईश्वर के समान होजाओगे।
६ और जब स्त्री ने देखा कि वुह वृक्ष खाने के योग्य और दृष्टि
में सुन्दर और बुद्धि देने में चाहने के योग्य तो उसके फल में
से लिया और खाया और अपने पति को भी जो उसके
७ संग था दिया और उसने खाया। तब उन दोनों की आंखें
खुलगईं और वे जानगये कि हम नंगे हैं सो उन्हों ने गूलर
के पत्तों को मिला के सीआ और अपने लिये ओढ़ना बनाया।
८ और उन्हों ने उसी दीन के ठंढ़ में यहोवा ईश्वर के चलने का
सन्नाटा सुना तब मनुष्य और उसकी पत्नी ने अपने को
९ यहोवा ईश्वर के आगे से बाटिका के वृक्षों में छिपाया। सो
प्रभु ईश्वर ने मनुष्य को पुकारा और कहा कि तू कहां है।
१० वुह बोला कि मैं ने तेरा शब्द बाटिका में सुना और डरा
११ क्योंकि मैं नंगा था इसकारण मैं ने अपने को छिपाया। उस
ने कहा कि किसने तुझे जताया कि तू नंगा है क्या तू ने उस
वृक्ष से कुछ खाया जिसे मैं ने आज्ञा किईथी कि तू उसे न
१२ खाना। मनुष्य ने कहा कि इस स्त्री ने जो तू ने मेरे संग रक्खीथी
१३ मुझे उस वृक्ष से कुछ दिया और मैं ने खाया। तब प्रभु ईश्वर
ने स्त्री को कहा कि यह तू ने क्या दिया स्त्री बोली कि सर्प्प ने

१४ मुझे बहकाया और मैं ने खाया। तब यहोवा ईश्वर ने
सर्प्प को कहा कि इस लिये कि तू ने यह किया सो तू सारे
पशु और सब भूमि के पशुन से अधिक स्रापित होगा तू
अपने पेट के बल चलेगा और तू अपने जीवन भर धूल
१५ खायाकरेगा। और मैं तुझ में और स्त्री में और तेरे बंश
और उसके बंश में बिरोध डालोंगा वुह तेरे सिर को
१६ कुचिलेगा और तू उसकी एड़ी को कुचिलेगा। और उसने
स्त्री को कहा कि मैं तेरी पीड़ा और गर्भ धारण को बढ़ाता
रहोंगा तू पीड़ा से बालक जनेगी और तेरी बांछा तेरे
१७ पति पर होगी वुह तुझ पर प्रभुता करेगा। फेर उसने
आदम से कहा इस लिये कि तू ने अपनी पत्नी की बात
सुनी और उस वृक्ष का फल खाया जिस्से मैं ने तुझे आज्ञा
करके कहा कि तू उस्से न खाना तेरे कारण भूमि स्रापित है
१८ तू अपने जीवन भर उस्से पीड़ा के साथ खायगा। वुह तेरे
लिये कांटे और ऊंटकटारे उगायेगी और तू खेत का साग
१९ पात खायगा। तू अपने मुंह के पसीने से रोटी खायगा जबलों
तू मट्टी में फेर आवे क्योंकि तू उस्से निकालागया क्योंकि तू
२० धूल है और धूल में फेर जायगा। और मनुष्य ने अपनी
पत्नी का नाम हव्वा रक्खा इस लिये कि वुह समस्त जीवतों की
२१ माता थी। और प्रभु ईश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के
२२ लिये चमड़े के ओढ़ने बनाये और उन्हें पहिनाये। और प्रभु
ईश्वर ने कहा कि देखो मनुष्य भले बुरे के पहिचान में हम्में
से एक के तुल्य हुआ अब ऐसा नहोवे कि वुह अपना हाथ
डाले और जीवन के वृक्ष से लेकर कुछ खावे और अमर
२३ होजाय। इस लिये यहोवा ईश्वर ने उसको अदन की
बाटिका से बाहर निकाला कि वुह उस मिट्टी में जिसमें से
२४ वुह निकालागया जोते बोये। सो उसने मनुष्य को निकाल
दिया और अदन की बाटिका की पूर्ब्ब ओर को करोबीम

ठहराये जिनके पास चारों ओर घूमनेवाला चमकताऊआ
खड्ग था जिसतें जीवन के वृक्ष की रखवाली करें।

४ चौथा पर्व्व।

१ और आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया और वुह
गर्भिणी ऊई और उसे कीन उत्पन्न ऊआ और बोली कि
२ मैं ने यऊहा से एक पुरुष पाया। और फेर वुह उसके
भाई हाबील को जनी और हाबील भेड़ों का चरवाहा ऊआ
३ और कीन भूमि जोतता बोताथा। और कितने दिनों के
पीछे यों ऊआ कि कीन भूमि के फलों में से यऊहा ईश्वर के
४ लिये भेंट लाया। और हाबील भी अपनी भेड़ बकरियों
में से पहिलौंठी और मोटी मोटी कईएक लाया और यऊहा
ईश्वर ने हाबील को और उसकी भेंट को ग्रहण किया।
५ परंतु कीन को और उसकी भेंट को ग्रहण न किया इस
लिये कीन रिसियागया और उसका स्वरूप उदास ऊआ।
६ तब यऊहा ने कीन को कहा तू क्यों क्रुद्ध है और तेरा स्वरूप
७ क्यों उदास है। यदि तू भला करता तो क्या तू ग्राह्य न होता
और यदि तू ने अच्छा न किया तो पाप द्वार पर है और
उसकी इच्छा तेरे वश में होगी और तू उस पर प्रभुता
८ करेगा। तब कीन ने अपने भाई हाबील से बातें किईं और
यों ऊआ कि जब वे दोनों खेत में थे तब कीन अपने भाई
९ हाबील पर झपटा और उसे घात किया। तब यऊहा
ईश्वर ने कीन को कहा तेरा भाई हाबील कहां है वुह बोला
१० मैं क्या जानों क्या मैं भाई का रखवाल ऊं। तब उसने कहा
तू ने क्या किया तेरे भाई के रुधिर का शब्द भूमि से मुझ को
११ पुकारताहै। और अब तू पृथिवी का स्रापित है कि उसने
१२ अपना मुंह पसारा कि तुझ से तेरे भाई का लोऊ लेवे। सो
जब तू भूमि पर खेतीबारी करेगा तो वुह अपना लाभ

तुझे न देगी और तू पृथिवी पर भगोड़ा और बहेतू रहेगा।
१३ तब कीन ने यहूहा से कहा कि मेरा दंड मेरे सहाव से
१४ अधिक है। देख तू ने आज भूमि से मुझे खदेर दिया है
और मैं तेरे समीप से गुप्त होऊंगा और भूमि पर भगोड़ा
और बहेतू होऊंगा और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे
१५ पावेगा मुझे मारडालेगा। तब यहूहा ने उसे कहा इसलिये
जो कोई कीन को मारडालेगा तो उस्से सातगुना पलटा
लियाजायगा और यहूहा ने कीन के ऊपर एक चिह्न रक्खा
१६ नहो कि कोई उसे पाके मारडाले। तब कीन यहूहा के
आगे से निकल गया और नूदी की भूमि में अदन की पूर्ब्ब
१७ ओर जा रहा। फेर कीन ने अपनी पत्नी को जाना वुह
गर्भिणी हुई और उस्से ख़नूख़ उत्पन्न हुआ तब उसने एक
नगर बनाया और उस नगर का नाम ख़नूख़ रक्खा जो
१८ उसके बेटे का नाम था। और ख़नूख़ से ईराद उत्पन्न हुआ
और ईराद से मुहयाईल और मुहयाईल से मथूसाईल
१९ और मथूसाईल से लामख़। और लामख़ ने दो पत्नियां
किईं पहिली का नाम आदा और दूसरी का नाम ज़िला
२० था। और आदा से याबाल उत्पन्न हुआ वुह उन्हों का पिता
था जो तंबूओं में रहते और पशु की चरवाही करतेथे।
२१ और उसके भाई का नाम यूबाल था वुह बीन और और
२२ बाजा के बजवैयन का पिता था। और ज़िला से तोबलक़ाईन
उत्पन्न हुआ जो पीतल और लोहे के कार्य्यकारी का
सिखावनिहार था और तोबलक़ाईन की एक बहिन नआमा
२३ थी। और लामख़ ने अपनी पत्नी आदा और ज़िला से कहा
कि हे लामख़ की पत्नियो मेरी बात सुनो और मेरे बचन पर
कान धरो कि मैं ने एक पुरुष को घाव खाके और एक तरुण
२४ को दुख उठाके मारडाला। यदि कीन के बधिक पर सात
गुना पलटा होगा तो निश्चय लामख़ के बधिक से सतहत्तर

२५ गुना पलटा लियाजायगा। और आदम ने अपनी पत्नी को
फेर जाना वुह एक पुत्र जनी और उसका नाम शीश रक्खा
और बोलि कि ईश्वर ने हाबिल की संती जिसको कीन ने
२६ मारडाला मुझ को दूसरा पुत्र दिया। और शीश के भी
एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसने उसका नाम अनूश रक्खा उस
समय से लोग यहूहा का नाम लेने लगे।

५ पांचवां पर्व।

१ आदम की वंशावरी का पुस्तक यह है जिस दिन में ईश्वर ने
मनुष्य को उत्पन्न किया उसने उसे अपने स्वरूप में बनाया।
२ और उन्हें नर और नारी बनाया और जिस दिन वे
उत्पन्न हुए उसने उन्हें आशीष दिया और उनका नाम
३ मनुष्य रक्खा। और आदम जब एक सौ तीस बरस का
हुआ तब उसका एक पुत्र उसीके स्वरूप और उसीके
४ सूरत में उत्पन्न हुआ और उसका नाम शीश रक्खा। और
आदम का वय शीश की उत्पत्ति के पीछे आठ सौ बरस की
५ हुई और उसे पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न हुईं। और
आदम की समस्त वय नव सौ तीस बरस की थी और वुह
६ मरगया। और शीश जब एक सौ पांच बरस का हुआ तब
७ उसे अनूश उत्पन्न हुआ। और शीश अनूश की उत्पत्ति के
पीछे आठ सौ सात बरस जीआ और उसे पुत्र और
८ पुत्रियां उत्पन्न हुईं। और शीश की समस्त वय नव सौ बारह
९ बरस की थी कि वुह मरगया। और अनूश जब नब्बे बरस
१० का हुआ तब उसे कीनान उत्पन्न हुआ। और कीनान की
उत्पत्ति के पीछे अनूश आठ सौ पंदरह बरस जीआ और
११ उसे पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न हुईं। और अनूश की समस्त
१२ वय नव सौ पांच बरस की थी और वुह मरगया। और
कीनान सत्तर बरस का हुआ और उसे माहलाईल उत्पन्न

१३ ऊआ। और माहललाईल की उत्पत्ति के पीछे कीनान आठ
सै। चालीस बरस जीआ और उसे पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न
१४ ऊईं। और कीनान की समस्त बय नव सै। दस बरस की थी
१५ और वुह मरगया। और माहललाईल जब पैंसठ बरस का
१६ ऊआ तब उसे यारद उत्पन्न ऊआ। और माहललाईल
यारद की उत्पत्ति के पीछे आठ सै। तीस बरस जीआ और
१७ उसे पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न ऊईं। और माहललाईल की
समस्त बय आठ सै। पंचानवे बरस की थी कि वुह मरगया।
१८ जब यारद एक सै। बासठ बरस का ऊआ तब उसे खनूख
१९ उत्पन्न ऊआ। और खनूख की उत्पत्ति के पीछे यारद आठ
सै। बरस जीआ और उसे पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न ऊईं।
२० और यारद की समस्त बय नव सै। बासठ बरस की थी कि
२१ वुह मरगया। जब खनूख पैंसठ बरस का ऊआ तो उसे
२२ मथूशालः उत्पन्न ऊआ। और खनूख मथूशालः की उत्पत्ति
के पीछे तीन सै। बरस लों ईश्वर के साथ साथ चला और
२३ उसे पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न ऊईं। और खनूख की समस्त
२४ बय तीन सै। पैंसठ बरस की थी। और खनूख ईश्वर के साथ
साथ चलताथा और वुह न मिला क्योंकि ईश्वर ने उसे
२५ लेलिया। और जब मथूशालः एक सै। सतासी बरस का
२६ ऊआ तब उसे लामख़ उत्पन्न ऊआ। और लामख़ की
उत्पत्ति के पीछे मथूशालः सात सै। बयासी बरस जीआ और
२७ उसे बेटे और बेटियां उत्पन्न ऊईं। और मथूशालः की
समस्त बय नव सै। उनहत्तर बरस की थी कि वुह मरगया।
२८ और लामख़ जब एक सै। बयासी बरस का ऊआ तब उसका
२९ एक पुत्र उत्पन्न ऊआ। उसने उसका नाम नूह रक्खा और
कहा कि यह हमारे हाथों के परिश्रम और कार्य्य के बिषय
में और जो पृथिवी के कारण से हैं जिस पर ईश्वर ने स्राप
३० दियाहै हमे शांत करेगा। और नूह की उत्पत्ति के पीछे

लामक़ पांच सौ पंचानवे बरस जीआ और उस्से पुत्र और
३१ पुत्रियां उत्पन्न हुईं। और लामक़ की समस्त बय सात सौ
३२ सतहत्तर बरस की थी और वुह मरगया। नूह जब पांच
सौ बरस का हुआ तब नूह से साम और हाम और याफस
उत्पन्न हुए।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब लोग पृथिवी पर बहुत बढ़नेलगे
२ और उनसे बेटियां उत्पन्न हुईं। तो ईश्वर के पुत्रों ने मनुष्य
की पुत्रियों को देखा कि वे सुंदर हैं और उन सभों में जिन्हें
३ उन्होंने चाहा उन्हें पत्नी किया। तब ईश्वर ने कहा कि मेरा
आत्मा सदा मनुष्यन को छोड़ेगा इसकारण कि वे निश्चय मांस
४ हैं तथापि उनके दिन एक सौ बीस बरस के होंगे। और
उन दिनों में बीर पृथिवी पर थे और उसके पीछे जब
ईश्वर के पुत्र मनुष्यन की पुत्रियों से मिले तो उनसे बालक
५ उत्पन्न हुए वे महा बीर हुए जो आगे से नामी हैं। और
ईश्वर ने देखा कि मनुष्य की बुराई पृथिवी पर बहुत हुई
और उनके मन की चिंता और भावना प्रतिदिन केवल बुरी
६ होतीहैं। तब यहूहा मनुष्य को पृथिवी पर उत्पन्न करने से
७ पछताया और उदासीन हुआ। तब यहूहा ने कहा कि मैं
मनुष्य को जिसे मैं ने उत्पन्न किया और पशु और रेंगनेवालों
और आकाश के पंछियों को पृथिवी पर से मिटाडालोंगा
८ क्योंकि मैं पछताताहों कि उनको बनाया। पर नूह ने
९ यहूहा की दृष्टि में अनुग्रह पाया। नूह की बंशावली यह है
कि नूह अपने समय में धर्म्मी और सिद्ध पुरुष था और
१० ईश्वर के संग संग चलताथा। और नूह से तीन पुत्र साम
११ और हाम और याफस उत्पन्न हुए। और पृथिवी ईश्वर की
१२ दृष्टि में बिगड़गईथी पृथिवी अंधेर से भरपूर थी। और

ईश्वर ने पृथिवी पर दृष्टि किई और देखा कि वुह अंधेर से
भरीऊईहै क्योंकि हरएक मांस की रीति पृथिवी पर
१२ बिगड़ी ऊईथी। और ईश्वर ने नूह से कहा समस्त मांस का
अंत मेरे आगे आपऊंचाहै क्योंकि उनके कारण पृथिवी
अंधेर से भरगईहै और देख मैं उनको पृथिवी समेत बिगाड़
१४ डालोंगा। अब तू गुमथाद की लकड़ी से एक नौका अपने
लिये बना और उस नौका में कई पाटन कर और उसके
१५ भीतर और बाहर राल लगा। और इस परिमाण की बना
कि उस नौका की लंबाई तीन सौ हाथ और चौड़ाई पचास
१६ हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की होवे। और उसी नौका
में एक खिड़की बना और ऊपरवारसे हाथ भर में उसे
समाप्त कर और उसकी एक एक ओर पर द्वार बना और
उसमें नीचे की पाटन और दूसरी और तीसरी पाटन बना।
१७ और देख मैं अर्थात मैं बाढ़का पानी पृथिवी पर लाताऊं
कि समस्त मांस को जिन में जीवन का श्वास है आकाश के तले
विनाश करडालों और हरएक वस्तु जो पृथिवी पर है नष्ट
१८ होजाय। परंतु मैं तुझे अपना वाचा बांधोंगा तू नौका में आ
तू और तेरे पुत्र और तेरी पत्नी और तेरे पुत्रों की पत्नियां
१९ साथ आवें। और समस्त पशु में से हरएक जीव जंतु दो दो
अपने साथ नौका में लेना कि वे तेरे साथ बचरहें वे नर
२० और नारी होवें। और पच्छियों में से भांति भांति के और
चौपायों में से भांति भांति के और पृथिवी के हरएक रेंगने
वालों में से भांति भांति के हरएक दो दो तेरे पास आवें कि
२१ जीते रहें। और तू अपने संग समस्त भोजन जो खायेजातेहैं
अपने पास एकट्ठा कर वुह तुम्हारे और उनके लिये भोजन
होगा सो जैसा ईश्वर ने आज्ञा किईथी नूह ने वैसाही
किया।

७ सातवां पर्व्व।

१ और यहोवा ने नूह से कहा कि तू अपने सारे घर समेत
नौका में आ क्योंकि मैं ने अपने आगे तुझे इस समय में धर्मी
२ देखा। हरएक पवित्र पशु में से सात सात नर और उनकी
जोड़ी और पशु में से जो पवित्र नहीं दो दो नर और उनकी
३ जोड़ी अपने साथ ले। और आकाश के पक्षियों से सात सात
नर और उनकी जोड़ी जिसतें समस्त पृथिवी पर बीज उन
४ का धरा रहे। क्योंकि मैं सात दिन के पीछे पृथिवी पर
चालीस दिन रात मेंह बरसाओंगा और हरएक जीवते
जंतु को जो अब है जिसे मैं ने बनाया है पृथिवी पर से मिटा
५ देऊंगा। और जैसा यहोवा ने आज्ञा किई थी नूह ने वैसा ही
६ किया। और जब पानियों का बाढ़ पृथिवी पर हुआ नूह
७ छ सौ बरस का था। तब नूह और उसके बेटे और उसकी
पत्नी और उसके बेटों की पत्नियां पानियों के बाढ़ के कारण
८ से उसके संग नौका में प्रवेश कियां। और पवित्र पशुन से
और उनमें से जो पवित्र नहीं हैं और पंक्षियों से और पृथिवी
९ के हरएक कीड़े मकोड़ों में से। दो दो नर और उनकी जोड़ी
जैसा ईश्वर ने नूह को आज्ञा किई नौका में प्रवेश कियां।
१० और जब सात दिन बीतगये यूं हुआ कि बढ़ के पानी
११ पृथिवी पर बहुत हुए। और जब नूह की बय छ सौ बरस
की हुई दूसरे महीने की सत्तरहवीं तिथि उसी दिन महा
गहिराये के सारे सोते फूट निकले और स्वर्ग के द्वार खुल
१२ गये। और पृथिवी पर चालीस दिन और चालीस रात की
१३ झड़ी लगी। उसी दिन नूह और नूह के पुत्र साम और
हाम और याफस और नूह की पत्नी और उसके बेटों की
१४ तीनों पत्नियों ने उनके साथ नौका में प्रवेश किया। और वे
हरएक बनैला पशु अपने भांति के समान समस्त चौपाये
और हरएक रेंगनेवाले जंतु जो पृथिवी पर रेंगते हैं अपनी

भांति के समान और हरएक पंछी अपनी भांति के समान
१५ हरएक भांति की हरएक चिड़ियां। और वे नूह के पास
समस्त मांस में से दो दो जिन में जीवन का श्वास था नौका
१६ में आये। से। वे जिन्हों ने प्रवेश कियाथा समस्त मांस से जोड़ा
जोड़ा जैसा कि ईश्वर ने उसे आज्ञा किईथी और यहवाह ने
१७ उसको बाहर से बंद किया। और बाढ़ का पानी चालीस
दिनताईं पृथिवी पर था और पानी बढ़गया और नौका
१८ को उभार लिया और वुह भूमि पर से ऊपर उठगई। और
जब पानी बढ़ा और पृथिवी पर बज़ताई से बढ़गया तब
१९ नौका पानी के ऊपर चलनेलगी। और जब कि पानी
पृथिवी पर अत्यंत बढ़ा और समस्त ऊंचे ऊंचे पहाड़ जो
२० समस्त आकाश के नीचे थे छपगये। और पानी उन पहाड़ों
२१ पर जो छपगये पंदरह हाथ बढ़े। और समस्त शरीर जो
पृथिवी पर चलतेथे पक्षी और पशु और बन्य पशु और
हरएक रेंगनेवाले जीव जंतु जो पृथिवी पर रेंगते हैं और
२२ समस्त मनुष्य मरगये। और सब जिनके नथुनों में जीवन के
२३ श्वास का अात्मा था और सूखी पर थे मरगये। और हरएक
जीव जंतु जो पृथिवी पर थे मनुष्य से लेके पशु और कीड़े
मकोड़े और आकाश के पक्षियों तक नष्ट ज़ए केवल नूह
२४ और जो उसके साथ नौका में थे बचरहे। और पानी डेढ़
सौ दिन लों पृथिवी पर बढ़ते रहे।

८ आठवां पर्ब।

१ फेर ईश्वर ने नूह को और हरएक जीवते जंतु को और सारे
चौपाये को जो उसके संग नौका में थे चेत किया और ईश्वर
ने पृथिवी के ऊपर एक पवन बहाया और जल ठहरगये।
२ और गहिराव के सोतेभी और आकाश के झरोखे बंद होगये
३ और आकाश से मेह थमगया। और जल पृथिवी पर से

छण छण घटे चलेजातेथे और डेढ़ सौ दिनों के बीते पर जल
४ घटनेलगे। और सातवें महीने के सत्तरहवें दिन नौका
५ अराशत के पहाड़ों पर ठहरगई। और जल दसवें महीनें
तक घटते चलेजातेथे और दसवें महीने के पहिले दिन
६ पहाड़ों की चोटियां दिखाईदिईं। और चालीस दिन के
पीछे यूं ऊआ कि नूह ने नौका का झरोखा जो उसने बनाया
७ था खोला। और एक काग को उड़ादिया वुह जबलों कि
८ पृथिवी पर के जल सूखे आया जाया करताथा। फेर उसने
एक कबूतरी अपने पास से उड़ादिई कि देखे कि भूमि पर
९ से पानी घटगये कि नहीं। परंतु कबूतरी ने अपना चंगुल
टेकने को ठेकाना न पाया और वुह उसके पास नौका पर
फिर आई क्योंकि जल समस्त पृथिवी पर था तब उसने
अपना हाथ बढ़ा के उसे लेलिया और अपने पास नौका में
१० लाया। फेर वुह और सात दिन लों संतोष किया उसके पीछे
११ उस कबूतरी को फिर नौका से उड़ादिया। वुह कबूतरी
संध्याकाल में उसके पास फिर आई कि जैतून की एक पत्ती
उसके मुंह में थी तब नूह ने जाना कि अब जल पृथिवी पर
१२ से घटगये। और वुह और भी सात दिन ठहरा उसके पीछे
उसने उस कबूतरी को उड़ादिया वुह उसके पास कभी
१३ फिर न आई। और छः सौ एक बरस के पहिले महीने के
पहिले दिन यूं ऊआ कि जल पृथिवी पर से सूखगये और
नूह ने नौका की छत उठा दिई और देखा कि पृथिवी ऊपर
१४ से सूखगई। सो दूसरे महीने के सताईसवें दिन पृथिवी
१५ सूखगईथी। तब ईश्वर नूह को यह कहके बोला।
१६ कि अब नौका से निकल और तेरी पत्नी और तेरे पुत्र और
१७ तेरे पुत्रों की पत्नियां तेरे संग। और हरएक जीवते जंतु
समस्त शरीरमें से क्या पंछी क्या चौपाये और क्या कीड़े
मकोड़े जो भूमि पर रेंगते चलतेहैं सब को अपने संग ले

निकल जिसतें बहुत से पृथिवी पर बच्चे देवें और फलें और
१८ पृथिवी पर बढ़ें। तब नूह और उसके पुत्र और उसकी
१९ पत्नी और उसके बेटों की पत्नीयां उसके संग निकलीं। और
हरएक बनैला पशु और हरएक रेंगनेवाली बस्तु और
हरएक पंछी और जो कुछ कि पृथिवी पर रेंगते हैं सब
२० अपने अपने भांति के समान नौका से निकल गये। तब नूह
ने यहूहा के लिये एक बेदी बनाई और समस्त पवित्र चौपाये
और हरएक पवित्र पंछियों में से लिये और होम के
बलिदान उस बेदी पर चढ़ाये और यहूहा ने सुगंध सूंघा।
२१ और यहूहा ने अपने मन में कहा कि मनुष्य के लिये मैं
पृथिवी को फेर कभी स्थापित न करोंगा इसकारण कि मनुष्य
के मन की भावना बचपने से बुरी है और जिस रीति से मैंने
२२ समस्त जीवधारियों को मारा फेर कभी न मारोंगा। पर
जबलों कि पृथिवी है बोना और काटना और शीत और
ग्रीष्म और ग्रीष्मकाल और शीतकाल और दिन और रात
थम न जायंगे।

९ नवां पर्व्व।

१ और ईश्वर ने नूह को और उसके बेटों को आशीष दिया
और उन्हें कहा कि फलो और बढ़ो और पृथिवी को भरो।
२ और डर और तुम्हारा भय पृथिवी के समस्त पशु पर और
आकाश के सारे पंछियों पर और उन सभों पर जो पृथिवी
पर चलते हैं और समुद्र की समस्त मछलियों पर पड़ेगा और
३ तुम्हारे बश में कियेगये। और हरएक बस्तु जो भूमि पर
चलती है और जीती है तुम्हारे भोजन के लिये है मैंने हरी
४ तरकारी के समान समस्त बस्तु तुम्हें देदिया। परंतु तुम मांस
५ को उसके जीव समेत जो लोहू है मत खाना। और निश्चय
तुम्हारे जीवन के लोहू का मैं पलटा लेउंगा और हरएक

पशु और मनुष्य के हाथ से मैं पलटा लेउंगा हरएक मनुष्यन
६ के भाई से मनुष्यन के प्राण का मैं पलटा लेउंगा। और
जो कोई मनुष्य का लोहू बहावे उसका लोहू मनुष्यही
बहावेगा क्योंकि मनुष्य ईश्वर के रूप में बनाया गयाहै।
७ और तुम फलो और बढ़ो और पृथिवी पर बहुताई
८ से जन्मो और उसमें बढ़ो। और ईश्वर ने नूह को और
९ उसके बेटों को उसके संग कहा। कि मैंहीं तुम से और
१० तुम्हारे पीछे तुम्हारे बंश से। और हरएक जीवते जंतु से जो
तुम्हारे संग है क्या पक्षी और क्या पशु और पृथिवी के समस्त
११ चौपायों से और सभों से जो नौका से बाहर जातेहैं। मैं
अपनी बाचा स्थापित करताहों। और मेरी बाचा यह है कि
१२ फेर कोई जीवधारी बाढ़ के पानियों से नष्ट न कियाजायगा
और फेर पृथिवी को नष्ट करने के लिये जलमय न होगा।
१३ और ईश्वर ने कहा इस बाचा का जो मैं अपने और तुम्हारे
और हरएक जीवते जंतु के मध्य में तुम्हारे संग हैं सनातन
१४ पीढ़ियों के लिये चिह्न यह है। कि मैं अपने धनुष को बदली
में रखताहों वुह मेरे और पृथिवी के मध्य में बाचा का
१५ चिह्न है। और जब मैं बदली को आकाश में फैलाओंगा तो
१६ मेरा धनुष बदली में दिखाई देगा। और मैं अपनी बाचा
को जो मेरे और तुम्हारे और हरएक जीवधारी के मध्य में
है चेत करोंगा और फेर जलमय का जल न होगा कि समस्त
१७ जीवधारियों को नष्ट करे। सो धनुष बदली में होगा
और मैं उसे देखोंगा जिसतें मैं उस सनातन बाचा को जो
ईश्वर और पृथिवी के हरएक जीवधारी के मध्य में है स्मरण
१८ करोंगा। सो ईश्वर ने नूह से कहा कि उस नियम का जो
मेरे और समस्त जीवधारी के जो पृथिवी पर हैं मध्य में है
१९ यह चिह्न है। और नूह के बेटे जो नौका से उतरे साम और
२० हाम और याफ़स थे हाम किनान का पिता था। नूह के

२१ यही तीन बेटे थे और उन्हीं से समस्त एथिवी बसगई। फेर
नूह खेतीबारी करने लगा और उसने एक दाख की बाटिका
२२ लगाई। और उसका रस पीया और उसे अमल ऊआ
२३ और अपने तंबू में नग्न था। और किनान के पिता हाम ने
अपने पिता की नंगापन देखी और अपने दो भाइयों को
२४ जो बाहर थे जनाया। तब साम और याफस ने एक ओढ़ना
लिया और अपने दोनों कंधों पर धरा और पीठ के बल
जाके अपने पिता की नंगापन ढांपी सो उनके मुंह पीछे थे
२५ और उन्होंने अपने पिता की नंगापन न देखी। जब नूह
अपने अमल से जागा तो जो छोटे बेटे ने उसके साथ कियाथा
२६ उसे जानगया। और उसने कहा कि किनान स्रापित होगा
२७ कि वुह अपने भाइयों के दासों का दास होगा। फेर उसने
कहा कि यहूहा साम का ईश्वर धन्य हूजियो और किनान
२८ उसका दास होगा। और ईश्वर याफस को फैलावेगा
और वुह साम के तंबुओं में बास करेगा और किनान उनका
२९ दास होगा। और नूह जलमय के पीछे साढ़े तीन सौ बरस
३० जीआ। और नूह की समस्त बय नव सौ पचास बरस की
थी और वुह मरगया।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ अब नूह के बेटों की बंशाउरी यही है साम और हाम और
याफस और उनके पुत्र जो जलमय के पीछे उत्पन्न ऊएथे।
२ याफस के बेटे जोमर और याजूज और माहात और
३ यूनानियः और सेन और ख़ुरासान और फारस। और
४ जोमर के बेटे सफालबः और फरंजः और इरमन। और
याबान के बेटे मर्सीसः और तरसूस और कबरस और
५ अज्ञतः। सो इन्हीं से अन्य देशियों के टापू हरएक अपनी
भाषा के और अपने परिवार के समान उनके कुल में बिभाग

६ होगये। और हाम के बेटे हवश: और मिसर और फ़ि
७ और किनान थे। और हवश: के बेटे सबः और जबीलः और
ज़ग़ाव और फ़ाकू और दमस थे और रामा के बेटे सिंद
८ और हिंद थे। और कोश से नमरूद उत्पन्न हुआ वुह पृथिवी
९ पर प्रबल होनेलगा। और वुह ईश्वर के आगे शक्तिमान व्याधा
हुआ इसीलिये कहाजाता है जैसा कि प्रभु के आगे नमरूद
१० शक्तिमान और व्याधा। और उसका राज्य बाबुल और
बरस और अकाज़ और खलनी शंनार की भूमि से आरंभ
११ हुआ। और उसी भूमि से आशूर निकला उसने नीनवी
१२ और रहवः और अवलः का नगर बनाया। और नीनवी
और अवलः के मध्य में मदायन बनाया सो यह बड़ा नगर
१३ है। और मिसर से तम्मोसी और अस्कंदरानी और भनसी
१४ और क़रमनी। और यमनी और साईदी जिनसे फलस्ती
१५ और दीमातो निकले उत्पन्न हुए। और किनान से सैदून
१६ उसका पहिला बेटा और हीस। और यबूसी और अमूरी
१७ और जर्जीसी। और हेवी और अरकी और तराबलसी
१८ और अरूदी। और हमसी और हमाई उत्पन्न हुए उसके
१९ पीछे किनानियों के घराने फैले। और किनान के सिवाने
सैदा से खलूस लों और गरः लों सदूम और अमूरा और
२० अदमा और सबूइयम और लाशअ लों हुए। सो हाम के
बेटे अपने घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने
२१ देशों और अपनी मंडलियों में ये हैं। और साम से भी बेटे
उत्पन्न हुए वुह समस्त अबर के वंश का पिता था और याफ़स
२२ उसका बड़ा भाई था। और साम के वंश खूजिस्तान और
मौसल और अरफखसद और लूज़ और अरमन थे।
२३ और अराम के वंश गोतः और हौवलः और जरामुक़ः
२४ और मास थे। अरफखशद से शालह उत्पन्न हुआ और
२५ शालह से आबर। और आबर से दो बेटे उत्पन्न हुए

एक का नाम फालिग़ था इसलिये कि उसके समय में भूमि
२६ बांटिगई और उसके भाई का नाम क़हतान था। और
क़हतान से अल्मूदाद और शलफ और हसरमौत और
२७ यारह। और हद़ोराम और ओज़ाल और दक़ला।
२८ और ओबाल और अबीमायल और शबा। और अदफीर
२९ और हवीला और यूबाब उत्पन्न हुए ये सब कहतान के
३० बेटे थे। उनके निवास के स्थान मेशे से लेके सफ़ार लों जो पूरब
३१ का पहाड़ है थे। सो साम के बेटे अपने घरानों और
अपनी भाषाओं के समान अपने अपने देशों और अपनी
३२ अपनी मंडलियों में रहते थे। सो नूह के बेटों के घरानों की
उत्पत्ति और उनकी मंडलियों में ये हैं और जलमय के
पीछे मंडलियां उन्हीं से भिन्न हुई हैं।

११ ग्यारहवां पर्व्व।

१ और समस्त पृथिवी पर एकही बोली और एकही भाषा
२ थी। जब उन्होंने पूरब से यात्रा किई तो ऐसा हुआ कि
उन्होंने शीनार की भूमि में एक चौगान पाया और वहां
३ ठहरे। तब एक ने दूसरे से कहा कि चलो हम ईंटें बनावें
और आग में पकावें सो उनके लिये ईंट पत्थर की संती
४ और गारागच की संती था। फेर उन्होंने कहा कि आओ
हम एक नगर और एक गुर्गज जिसकी चोटी स्वर्ग को पहुंचे
अपने लिये बनावें और अपना नाम करें ऐसा नहो कि
५ हम सारे पृथिवी पर छिन्न भिन्न होजावें। तब यहुहा
उस नगर और उस गुर्गज को जिसे आदम के संतान
६ बनाते थे देखने को उतरा। फेर यहुहा ने कहा कि देखो
यह एकही जाति है और उन सब की एकही बोली है अब
वे ऐसा ऐसा कुछ करनेलगे सो वे जिस काम का मन करेंगे
७ उस्से अलग न कियेजावेंगे। आओ हम उतरें और वहां

उनकी भाषा में बिभेद डालें कि वे एक दूसरे की भाषा न
८ समुझें। तब यहवा ने उनको वहां से समस्त पृथिवी पर
छिन्न भिन्न किया सो वे उस नगर के बनाने से अलग रहे।
९ इस लिये उसका नाम बाबुल है क्योंकि यहवा ने वहां
समस्त जगत की भाषाओं को गड़बड़ किया और यहवा ने
१० वहां से उनको समस्त पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया। और
साम की वंशावली यह है कि जब साम सौ बरस का होचुका
तब जलमय के दो बरस पीछे उससे अरफखशाद उत्पन्न
११ हुआ। और साम अरफखशाद की उत्पत्ति के पीछे पांच
१२ सौ बरस जीआ उससे बेटा बेटी उत्पन्न हुए। जब
अरफखशाद पैंतीस बरस का हुआ तब उससे शालह उत्पन्न
१३ हुआ। और अरफखशाद शालह की उत्पत्ति के पीछे चार
सौ तीन बरस जीआ और उससे बेटे और बेटियां उत्पन्न
१४ हुईं। शालह जब तीस बरस का हुआ उससे आबर उत्पन्न
१५ हुआ। और शालह आबर की उत्पत्ति के पीछे चार सौ
तीस बरस जीआ और उससे बेटे और बेटियां उत्पन्न हुईं।
१६ और आबर से चौंतीस बरस के बय में फालिग उत्पन्न हुआ।
१७ और आबर फालिग की उत्पत्ति के पीछे चार सौ तीस बरस
१८ जीआ और उससे बेटे और बेटियां उत्पन्न हुईं। फालिग
१९ तीस बरस का था कि उससे रऊ उत्पन्न हुआ। और फालिग
रऊ की उत्पत्ति के पीछे दो सौ नव बरस जीआ और उससे
२० बेटे और बेटियां उत्पन्न हुईं। रऊ जब बत्तीस बरस का
२१ हुआ उससे सरोग उत्पन्न हुआ। और रऊ सरोग की
उत्पत्ति के पीछे दो सौ सात बरस जीआ और उससे बेटे
२२ और बेटियां उत्पन्न हुईं। सरोग जब तीस बरस का हुआ
२३ उससे नाहूर उत्पन्न हुआ। और सरोग नाहूर की उत्पत्ति
के पीछे दो सौ बरस जीआ और उससे बेटे और बेटियां
२४ उत्पन्न हुईं। नाहूर जब उंतीस बरस का हुआ उससे तारह

२५ उत्पन्न ऊआ। और नाहूर तारह की उत्पत्ति के पीछे एक
सा उंनीस बरस जीआ और उसे बेटे और बेटियां उत्पन्न
२६ ऊईं। तारह जब सत्तर बरस का ऊआ उसे अबराम और
२७ नाहूर और हारान उत्पन्न ऊए। तारह की बंशाउरी
यह है कि तारह से अबराम और नाहूर और हारान
२८ उत्पन्न ऊए और हारान से लूत उत्पन्न ऊआ। और
हारान अपने पिता तारह के आगे जीतेजी अपनी जन्म
२९ भूमि अर्थात कसदानियों के ऊर में मरगया। और अबराम
और नाहूर ने पत्नियां किईं अबराम की पत्नी का नाम
साराय था और नाहूर की पत्नी का नाम मल्का जो हारान
३० की बेटी थी वही मल्का और यस्का का पिता था। परंतु
३१ साराय बांझ थी उसके कोई संतान न था। और तारह ने
अपने बेटे अबराम को और अपने पोते हारान के बेटे लूत
को और अपनी बहू अबराम की पत्नी साराय को लिया
और उन्हें अपने साथ कसदानियों के ऊर से किनान की
भूमि में लेचला और वे हरान में आये और वहां रहे।
३२ और तारह दो सौ पांच बरस का होके हरान में मरगया।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ अब यहोवा ने अबराम से कहा कि तू अपने देश और अपने
पिता के घर से उस भूमि को जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।
२ और मैं तुझ से एक बड़ा कुल बनाओंगा और तुझे आशीष
देओंगा और तेरा नाम बड़ा करोंगा और तू एक आशीर्बाद
३ होगा। और उनको जो तुझे आशीष देते हैं आशीष देऊंगा
और उनको जो तुझे स्राप देतेहैं स्राप देओंगा और पृथिवी के
४ समस्त घराने तुझसे आशीष पावेंगे। सो जैसा यहोवा ने कहा
था अबराम सिधारा और लूत भी उसके संग गया और
अबराम जब हरान से निकला तब पचहत्तर बरस का था।

५ फेर अबराम ने अपनी पत्नी साराय और अपने भतीजे
लूत और उनकी सारी संपति को जो उन्होंने बटोरीथी
और उन प्राणियोंको जिनको उन्होंने हरान में पायाथा
संग लिया और निकले कि किनान की भूमि को जावें सो वे
६ किनान की भूमि में आये। और अबराम ने उस भूमि से
होके नाबलस के ठिकाने में और ममरी के चौगान को
शकीम के स्थान लों फिरा और तब किनानी उस भूमि में थे।
७ फेर यहूहा अबराम को दिखाई दिया और कहा कि मैं
यह भूमि तेरे बंश को देऊंगा तब वहां उसने यहूहा के लिये
८ जो उसे दिखाई दियाथा एक बेदी बनाई। फेर वहां से एक
पहाड़ पर जो बैतईल के पूरब है गया और अपना तंबू
बैतईल की पच्छिम ओर खडा किया और अई उसकी पूरब
९ ओर था वहां भी उसने यहूहा का नाम लिया। और
१० अबराम ने जाते जाते दक्षिण की ओर यात्रा किई। उस
समय में उस भूमि में एक काल पड़ा और अबराम मिसर
की ओर उतर पड़ा कि वहां रहे क्योंकि उस भूमि में बड़ा
११ काल था। और जब वुह मिसर के निकट पहुंचा उसने
अपनी पत्नी साराय से कहा देख मैं जानताहूं कि तू देखने में
१२ सुन्दर स्त्री है। और यों होगा कि जब मिसरी तुझे देखेंगे
वे कहेंगे कि यह उसकी पत्नी है सो मुझे मार डालेंगे और
१३ तुझे जीता रक्खेंगे। तू कहियो कि मैं उसकी बहिन हूं जिसतें
तेरे कारण से मेरा भला हो और मेरा प्राण तेरे हेतु से
१४ जीवता रहेगा। फेर अबराम जब मिसर में जा पहुंचा तब
१५ मिसरियों ने उस स्त्री को देखा कि अत्यंत सुन्दर है। और
फरऊन के अध्यक्षों ने भी उसको देखा और फरऊन के आगे
उसका सराहना किया सो उस स्त्री को फरऊन के घर में
१६ लेगये। और उसने उसके कारण से अबराम का उपकार
किया कि भेड़ बकरी और बैल और गधे और दास

१७ और दासी और गधियां और ऊंट उसने पाये। तब
यहूहा ने फरऊन और उसके घराने पर अबराम की पत्नी
१८ साराय के कारण बड़ी मरियां डालीं। तब फरऊन ने
अबराम को बुलाकर कहा कि तू ने मुझे यह क्या किया तू ने
१९ मुझे क्यों न जताया कि वुह मेरी पत्नी है। और क्यों कहा
कि वुह मेरी बहिन है यहां लों कि मैं उसे लियाहोता कि
उसे पत्नी बनाऊं देख यह तेरी पत्नी है तू उसे ले और
२० चला जा। तब फरऊन ने अपने लोगों को उसके विषय में
आज्ञा किई उन्होंने उसको और उसकी पत्नी को उस सब
समेत जो उसका था जानेदिया।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

१ फेर अबराम मिसर से अपनी पत्नी और समस्त सामग्री
समेत और लूत को अपने संग लियेहुए दक्षिण को चला।
२ और अबराम बहुत से चौपाए और सोना चांदी में बड़ा
३ धनी था। और वुह यात्रा करते दक्षिण से बैतईल लों
उसी स्थान को जहां आरंभ में उसका तंबू था बैतईल और
४ अई के मध्य में। उस बेदी के स्थान में जिसे उसने पहिले
वहां बनाया था आया और वहां अबराम ने यहूहा का
५ नाम लिया। और लूत जो अबराम के संग था उसके भी
६ भेड़ और बकरी और गाय बैल और तंबू थे। सो उस
भूमि में उनकी समाई न हुई कि वे एकट्ठे वास करें क्योंकि
उनकी सामग्री बहुत थी इस लिये वे एकट्ठे निवास न कर
७ सके। और अबराम के पशु के चरवाहों में और लूत के
पशु के चरवाहों में झगड़ा हुआ उस समय में किनानी और
८ फरज़ी उस भूमि में बसतेथे। तब अबराम ने लूत से कहा
मेरे और तेरे बीच और मेरे चरवाहों में और तेरे चरवाहों
९ में झगड़ा न हो क्योंकि हम भाई हैं। क्या यह समस्त भूमि

तेरे आगे नहीं मुझसे अलग हो यदि तू बाईं ओर जावे तो
मैं दहिनी ओर जाऊं यदि तू दहिनी ओर जावे तो मैं बाईं
१० ओर जाऊं। तब लूत ने आंख उठाके अर्दन का सारा
चैागान देखा कि वुह सब उससे आगे कि ईश्वर ने सदूम
और गमरा को नष्ट किया यहूहा की बाटिका के समान
सर्वत्र अच्छी रीति से सींचा हुआ था और मिसर की उस
११ भूमि के तुल्य था जो जगर की ओर है। तब लूत ने अर्दन का
सारा चैागान चुना और पूरब की ओर चला और वे एक
१२ दूसरे से अलग हुए। अबराम किनान की भूमि में रहा
और लूत ने चैागान के नगरों में निवास किया और सदूम
१३ की ओर तंबू खड़ा किया। पर सदूम के लोग यहूहा के
१४ आगे अत्यंत कुकर्मी और पापी थे। तब अबराम से लूत के
अलग होने के पीछे यहूहा ने उसे कहा कि अब अपनी
आंखें उठा और उस स्थान से जहां तू है उत्तर और दक्षिण
१५ और पूरब और पश्चिम की ओर देख। क्योंकि मैं यह समस्त
भूमि जिसे तू देखता है तुझे और तेरे वंश को सदा लों
१६ देऊंगा। और मैं तेरे वंश को पृथिवी की धूल के समान
बहुत करूंगा यहांलों कि यदि कोई पृथिवी की धूल को गिन
१७ सके तो तेरे वंश को भी गिने। उठ की पृथिवी की लंबाई
और चैाड़ाई से होके फिर क्योंकि मैं उसे तुझे देऊंगा।
१८ तब अबराम ने तंबू उठाया और ममरी के चैागानों में जो
हिबरून में प्रगट है आ रहा और वहां यहूहा के लिये एक
बेदी बनाई।

१४ चैादहवां पर्व।

१ और शीनूर के राजा अमराफाल के दिनों में यों हुआ कि
सुरियान का राजा अरयूख और खोजिस्तान का राजा
कदरलाऊमर और लोगों के राजा सदआल के समय में

२ यों ऊआ। उन्होंने सदूम के राजा बारा और अमूरा के
राजा बरशा और अदमा के राजा शैनाब और सबूईन के
राजा शमबर और बला के राजा से जो जगर है युद्ध किया।
३ ये सब सदूम की नीचाई में जहां ओखारी समुद्र है एकट्ठे
४ ऊए। वे बारह बरस लों कदरलाऊमर की आज्ञा में थे
५ और तेरहवें बरस उस्से फिरगये। और चौदहवें बरस में
कदरलाऊमर और वे राजा जो उसके साथ थे आये और
रफाईमों अशतरत करनीममें और जजीकोहाम में और
६ आमीमों को किरियातीम के चौगान में। और हूरानियों
को उनके कोहशआर में पारान के चौगान लों जो बन के पास
७ है मारा। और फिरे और ऐनमिसपाटो को जो कादिस है
आये और अमालकियों के समस्त देश और अमरियों के भी
८ जो अजीजतामर में रहताथा मारलिया। और सदूम का
राजा और अमूरा का राजा और अदमा का राजा और
सबूईम का राजा और बाला का राजा जो जगर निकला।
९ इलाम के राजा कदरलाऊमर के संग और गोगों के राजा
सदाल के संग और शीनर के राजा अमराफाल और
इलासार के राजा अरियूख ने चार राजाओं ने पांच के संग
१० युद्ध के लिये सदूम की नीचाई में युद्ध में मिले। और सदूम
की नीचाई में चहले के गढ़हे सदूम और अमूरा के राजा
भागे और वहां गिरे और बचेऊए लोग भाग के पाहाड़
११ पर गये। उन्होंने सदूम और आमूरा की समस्त संपत्ति
और भोजन की वस्तें लूट लिईं और अपने मार्ग पकड़े।
१२ और उन्होंने अबराम के भतीजे लूत को जो सदूम में
रहताथा पकड़ लिया और उसकी संपत्ति को लूट के चले
१३ गये। तब एक ने भाग के इबरानी अबराम को संदेश दिया
क्योंकि वुह ममरी के चौगान में रहताथा जो अमूरी था
और अशकूल और आनीर का भाई जो अबराम के साथ

१४ बाचा और नियम में मिलेथे। और जब अबराम ने सुना कि
उसके भाई को पकड़ लेगये अपने घर के तीन सौ अठारह
दासों को लिया और बनियास लों उनका पीछा किया।
१५ तब वह और उसके सेवक सब कई जूथ हुए और उन पर
पड़े और हूबा लों जो दमिश्क की बाईं ओर है उन्हें मारते
१६ हुए रगेदे चलेगये। और सारी संपत्ति और अपने भाई
लूत को भी उस धन समेत और स्त्रियों को भी और लोगों
१७ को फेर लाये। और कदरलाऊमर और उन राजाओं को
जो उसके संग थे मारके फिर आवने के पीछे सदूम का राजा
उसको आगे से लेने के लिये शबा की नीचाई लों जो राजा
१८ की नीचाई है निकला। और मलकीसिदक और सूलीम
का राजा रोटी और दाख का रस निकाल लाया वुह
१९ अति महान ईश्वर का याजक था। और उसको आशीष
दिया और बोला कि आकाश और पृथिवी के धनी अत्यंत
२० महान ईश्वर का अबराम धन्य होवे। और अति महान
ईश्वर को धन्य जिसने तेरे शत्रुन को तेरे हाथों में करदिया
२१ तब उसने समस्त वस्तुन का दसवां भाग उसे दिया। फेर
सदूम के राजा ने अबराम से कहा कि प्राणियों को मुझे दे
२२ और संपत्ति आप ले। तब अबराम ने सदूम के राजा से कहा
कि मैं ने अपना हाथ यहूहा अति महान ईश्वर के आगे जो
२३ स्वर्ग और पृथिवी का अधिकारी है उठाया। कि मैं एक
तागे से लेके जूते के बंद लों तेरी समस्त संपत्ति से कुछ न
लेउंगा सो मत कहियो कि मैं ने अबराम को धनमान किया।
२४ परंतु जो कुछ कि तरुणों ने खाया और उन मनुष्यन के भाग
जो मेरे संग अर्थात आनीर और अश्कूल और ममरी को
वे अपने भाग लेवें।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

१ इन बातोंके पीछे यहूहा के बचनने अबराम पर स्वप्नमें
पहुंचके कहा हे अबराम तू मत डर कि मैं तेरी ढाल और
२ तेरा अत्यंत बड़ा प्रतिफल हूं। तब अबराम ने कहा कि हे
प्रभु ईश्वर तू मुझे क्या देगा मैं तो निर्बंश जाताहूं और मेरे
३ घर का भंडारी दमिश्कीइली आज़र है। फिर अबराम ने
कहा कि देख तूने मुझे कोई बंश न दिया और देख जो मेरे
४ घर में उत्पन्न हुआ वही मेरा अधिकारी है। देखो यहूहा
का बचन उसे यूं कहतेहुए आया यह तेरा अधिकारी न
होगा परंतु वुह जो तेरे आंत से निकलेगा तेरा अधिकारी
५ होगा। फिर उसने उसको बाहर ले जाकर कहा आकाश की
ओर देख और तारों को गिन यदि तू गिनसके फिर उसने
६ उसे कहा कि तेरा बंश ऐसाही होगा। तब वुह यहूहा पर
७ बिश्वास लाया और यह उसके लिये धर्म्म गिनागया। फिर
उसने उसे कहा कि मैं वुह यहूहा हूं जो तुझे कलदानियों
के उरसे निकाल लाया कि यह भूमि तुझे अधिकार में
८ देऊं। तब उसने कहा कि हे यहूहा मेरे ईश्वर मैं क्योंकर
९ जानों कि उसका मैं अधिकारी होऊंगा। तब उसने उसे
कहा कि तू एक बछिया तीन बरसवाली और एक बकरी
तीन बरसवाली और एक मेढ़ा तीन बरसवाला और एक
१० पंडुक और एक कबूतर का बच्चा मेरे लिये ले। सो उसने
उसके लिये ये सब लिये और एक एक के दो दो भाग किये
और हरएक भाग को उसके दूसरे भाग के साम्ने धरा
११ परंतु पंछियों का भाग न किया। और जब पंछी उन
१२ लोथों पर उतरे अबराम ने उन्हें हांक दिया। और जब सूर्य
अस्त होने पर था तब अबराम पर भारी नींद पड़ी और
१३ देखो बड़ा भयंकर अंधकार उसपर छागया। तब उसने
अबराम को कहा निश्चय जान कि तेरा बंश औरों के देश में

परदेशी होगा और उनकी सेवा करेगा और वे उन्हें चार
१४ सा बरस लों सतावेंगे। परंतु मैं उन लोगों का भी जिस की
वे सेवा करेंगे न्याय करूंगा और वे अंत को बड़ी संपत्ति लेके
१५ निकलेंगे। और तू अपने पितरों में कुशल से जायगा और
१६ तू बज्जत पुरनिया होके गाड़ाजायगा। और वे चौथी
पीढ़ी में इधर फेर आवेंगे क्योंकि अमूरियों के पाप अबलों
१७ भरपूर नहीं ऊए। और जब सूर्य अस्त ऊआ तो यों ऊआ
कि अंधेरा होगया और देखो एक धूआं उठता भट्ठा और
एक प्रज्वलित दीपक उन टुकड़ों के मध्य में से होके चला
१८ गया। उसी दिन यज्ञहा ने अबराम के संग बाचा करके कहा
कि मैं ने तेरे बंश को यह भूमि मिसर की नदी से लेके
१९ फुरात की बड़ी नदी लों दिई। कीनी और कुनीज़ी और
२० कदमूनी। और हत्ती और फरज़ी और रफामी और
२१ अमूरी। और किनानी और जर्जसी और जबसी।

१६ सोलहवां पर्ब।

१ और अबराम की पत्नी सारा कोई लड़का उसके लिये न
जनी और उसकी एक मिसरी लौंडी थी जिस का नाम
२ हाजरः था। तब सारा ने अबराम से कहा कि देख यज्ञहा
ने मुझे जन्ने से रोकाहै मैं तेरी बिनती करतीहों कि अब
मेरी लौंडी पास जाइये क्या जाने मेरा घर उस्से बस जावे
३ और अबराम ने सारा का शब्द सुना। सो अबराम की
पत्नी सारा ने उसके पीछे कि अबराम ने किनान की भूमि में
दस बरस निवास किया मिसरी हाजरः ने अपनी लौंडी को
लिया और अपने पति अबराम को दिया कि उसकी पत्नी
४ होवे। तब वुह हाजरः के पास गया वुह गर्भिणी ऊई और
जब उसने आप को गर्भिणी देखा तो उसकी स्वामिनी उसकी
५ दृष्टि में निंदित ऊई। तब सारा ने अबराम से कहा कि मेरा

दोष तुझ पर होवे कि मैं ने अपनी लौंडी जो तुझ को दिई
और जब उसने अपने को गर्भिणी देखा तो मैं उसकी दृष्टि
६ में निंदित ऊई मेरे और तेरे बीच यहोवा न्याय करे। तब
अबराम ने सारा से कहा कि देख तेरी लौंडी तेरे हाथ में है
जो तुझे अच्छा लगे उस्से कर और जब सारा ने उसे संताया
७ वुह उसके साम्ने से भागगई। और यहोवा के दूत ने एक पानी
के सोते के पास बन में उस सोते के पास जो सूर के मार्ग में
८ है उसे पाया। और कहा कि हे सारा की लौंडी हाजरः
तू कहां से आई है और किधर जागी वुह बोली कि मैं
९ अपनी स्वामिनी सारा के सामने से भागिहूं। और यहोवा
के दूत ने उसे कहा कि तू अपनी स्वामिनी के पास फिर आ
१० और उसके बश में रह। फिर यहोवा के दूत ने उसे कहा
कि मैं तेरा बंश अत्यंत बढ़ाऊंगा ऐसा कि वुह बऊताई के
११ कारण गिनती में न आवेगा। और यहोवा के दूत ने उसे
कहा कि देख तू गर्भिणी है और तू एक बेटा जनेगी उसका
नाम इस्माईल रखना क्योंकि यहोवा ने तेरा दुख सुना।
१२ और वुह एक बनैला मनुष्य होगा और उसका हाथ हरएक
मनुष्य से विरुद्ध होगा और सभों का हाथ उस्से विरुद्ध
होगा परंतु वुह अपने सब भाइयों के संयोग में निवास
१३ करेगा। तब उसने उस यहोवा का नाम जो उसके संग
बातचीत करताथा यूं लिया कि हे परमेश्वर तू मुझे देखताहै
और उसने कहा कि हां मैं ने अपने देखनेवाले का पीछा
१४ देखा। इसी कारण उस कूएं का नाम भी रक्खा कि मेरे
देखनेवाले और जीवते का कूआं है देखो वुह कादस और
१५ बारद के मध्य में है। सो हाजरः अबराम के लिये एक पुत्र
जनी और अबराम ने अपने बेटे का नाम जिसे हाजरः जनी
१६ इस्माईल रक्खा। और जब हाजरः से अबराम के लिये
इस्माईल उत्पन्न ऊआ तब अबराम छियासी बरस का था।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब।

१ और जब अबराम निन्नावे बरस का हुआ तब यहुहा
अबराम को दिखाई दिया और कहा कि मैं सर्ब्बसामर्थी
२ ईश्वर और तू मेरे आगे चल और सिद्ध हो। और मैं
अपने और तेरे मध्य में एक बाचा बनाओंगा और मैं तुझे
३ अत्यंत बढ़ाओंगा। तब अबराम औंधा गिरा और ईश्वर ने
४ उसे बातें करके कहा। कि मैं जो हों मेरी बाचा तेरे संग
५ है कि तू बहुत से लोगों का पिता होगा। और तेरा नाम
फिर अबराम न होगा परंतु तेरा नाम इबराहीम होगा
६ क्योंकि मैं ने तुझे बहुत से लोगों का पिता बनाया। और मैं
तुझे अत्यंत फलमान करोंगा और तुझे मंडलियां बनाऊंगा
७ और राजा तुझ में से निकलेंगे। और मैं अपनी बाचा अपने
और तेरे मध्य में और तेरे पीछे तेरे पुत्र और तेरे बंश के
उनकी पीढ़ियों में सदा के लिये एक बाचा जो उनके
साथ सदा लों रहे ठहराऊंगा कि मैं तेरा और तेरे
८ पीछे तेरे बंश का ईश्वर होंगा। और मैं तुझे और तेरे पीछे
तेरे बंश को यह भूमि जिसमें तू परदेशी है अर्थात किनान की
समस्त भूमि देऊंगा कि वुह सर्ब्बदा तेरा अधिकार होवे
९ और मैं उनका ईश्वर होंगा। फिर ईश्वर ने इबराहीम से
कहा कि तू जो है मेरी बाचा को स्थिर रख तू और तेरे
१० पीछे तेरा बंश उनकी पीढ़ियों में। सो मेरी बाचा जो तेरे
साथ और तेरे पीछे तेरे बंश के साथ जिसे तुम स्थिर रक्खोगे
यह है कि तुम्में से हरएक बालक का खतनः कियाजाय।
११ और तुम अपने शरीर की खलड़ी कटवाओ और वुह मेरे
१२ और तुम्हारे मध्य में बाचा का चिन्ह होगा। और तुम्हारी
पीढ़ियों में हरएक बालक जो आठ दिन का होय तुम्हों में
खतनः कियाजाय घर में उत्पन्न होय अथवा किसी परदेशी से
१३ जो तेरे बंश का न हो दाम से मोल लियाजाय। अवश्य है

कि जो तेरे घर में उत्पन्न ज़आ हो और जो तेरे दाम से मोल
लियागया हो उनका खतनः कियाजाय और मेरी बाचा
१४ तुम्हारे मांस में सर्वदा के लिये होगी। और वुह लड़का
जो खतनः कियाज़आ न हो जिसके आगे के चर्म का खतनः
न किया हो अपने लोग से कटजावे कि उसने मेरी बाचा
१५ तोड़ी। फिर ईश्वर ने इबराहीम से कहा तेरी पत्नी
सारा जो है तू उसे सारा न कहाकर परंतु उसका नाम
१६ सारः रख। और मैं उसे आशीष देउंगा और तुझे एक
पुत्र उसे भी देउंगा निश्चय मैं उसे आशीष देउंगा कि
१७ उस्से कई जाति होंगी और लोग के राजा उस्से होंगे। तब
इबराहीम औंधे मुंह गिरा और हंसा और अपने मन में
कहा क्या सौ बरस के वृद्ध से लड़का उत्पन्न होगा और क्या
१८ सारः जो नब्बे बरस की है जनेगी। फिर इबराहीम ने
ईश्वर से कहा कि हाय कि इस्माईल तेरे आगे जीता रहे।
१९ तब ईश्वर ने कहा कि तेरी पत्नी सारः तेरे लिये निःसंदेह
एक बेटा जनेगी और तू उसका नाम इसहाक़ रखना और
मैं उसके साथ भी एक बाचा बांधोंगा जो सर्वदा की बाचा के
लिये उस्से और उसके पीछे उसके बंश के लिये स्थिर करोंगा।
२० और इस्माईल जो है मैंने उसके बिषय में तेरी सुनी देख
अब मैंने उसे आशीष दिया और उसे फलमान करोंगा
और उसे अत्यंत बढ़ाओंगा और उस्से बारह अध्यक्ष
२१ उत्पन्न होंगे और उसे बड़ी मंडली बनाओंगा। परंतु
इसहाक़ के साथ जिसे सारः तेरे लिये दूसरे बरस इसी
ठहरायेज़ए समय में जनेगी अपनी बाचा स्थिर करोंगा।
२२ फिर ईश्वर ने उस्से बातें करना समाप्त किया और
२३ इबराहीम के पास से ऊपर जातारहा। तब इबराहीम ने
अपने पुत्र इस्माईल को और उन सभों को जो उसके घर में
उत्पन्न ज़ए और सब जो उसके दाम से मोल लियेगये उसके

घर में थे इबराहीम ने लिया और उनमें से हरएक नर का
आगे का चर्म्म काटा उसी दिन जैसा कि उसे ईश्वर ने कहा
२४ था खतनः किया। और जब उसके आगे का चर्म्म काटागया
२५ तब इब्राहीम निन्नावे बरस का था। और उसका पुत्र
इस्माईल तेरह बरस का था जब उसके आगेका चर्म्म काटा
२६ गया। सो उसी दिनमें इबराहीम और उसके पुत्र
२७ इस्माईल का खतनः कियागया। और उसके घर के सारे
पुरुषों का जो घर में उत्पन्न हुए और जो परदेशियों के जो
दाम से मोल लियेगये उसके साथ खतनः कियागया।

१८ अठारहवां पर्व्व।

१ फिर यहूहा उसे ममरा के चैागान में दिखाई दिया वुह तंबू
२ के द्वार पर दिन को घाम के समय में बैठाथा। कि उसने
अपनी आंखें ऊपर करके दृष्टि किई तो देखा कि तीन मनुष्य
उसके पास खड़े थे उन्हें देख कर उन्हें आगे मिलने के लिये
३ तंबू के द्वार पर से दैाड़ा। और भूमि पर दंडवत किया और
कहा हे मेरे प्रभु यदि अब तेरी दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया
तो मैं तेरी बिनती करताहों कि अपने दास के पास से
४ चले न जाइयो। इच्छा हो तो थोड़ा जल लायाजाय अपने
५ चरण को धोइये और वृक्ष के नीचे बिश्राम कीजिये। और
मैं एक टुकड़ा रोटी लाऊं और आप तृप्त हूजिये उसके
पीछे आगे जाइयो क्योंकि आप इसी कारण अपने दास के
६ पास आयेहैं तब वे बोले जैसा तू ने कहा वैसाही कर। सो
इबराहीम तंबू में सारः पास तुरंत गया और उसे कहाशीघ्र
७ कर तीन सेर मैदा लेके गूंध और उसके फुलके पका। फिर
इबराहीम झुंड की ओर दैाड़ा गया और एक छोटा अच्छा
कोमल बछड़ा लेके दास को दिया उसने भी उसके तैयार
८ करने में चटक किया। तब उसने मखन और दूध और

वुह बछड़ा जो पकाया था लिया और उनके आगे धरा और
आप उनके पास वृक्ष के तले खड़ा रहा सो उन्होंने खाया।
९ तब उन्होंने उस्से पूछा तेरी पत्नी सारः कहां है वुह बाला
१० देखिये तंबू में है। उसने कहा कि जन्ने की रीति के समय में
निश्चय मैं तुझ पास फिर अऊंगा और देख तेरी पत्नी सारः
एक बेटा जनेगी और सारः तंबू के द्वार पर उसके पीछे
११ सुनतीथी। और इबराहीम और सारः बूढ़े और पुरनिये
१२ थे और सारः से स्त्री का व्यावहार जातारहाथा। तब
सारः हंसके अपने मन में बोली क्या अब मुझे बुढ़ापे में कि
१३ मेरा पति भी बूढ़ा है फिर आनंद होगा। तब यहूवा ने
इबराहीम से कहा कि सारः क्यों मुसकिराई और कहा क्या मैं
१४ जो बुढ़िया हों सच मुच बालक जनोंगी। क्या यहूवा के आगे
कोई बात असाध्य है मैं ठहरायेहुए समय में तुझ पास फिर
१५ आऊंगा और जन्ने के समय में सारः का बेटा होगा। तब
सारः यह कहके मुकरगई कि मैं तो नहीं हंसी तब उसने
१६ कहा नहीं परंतु तू हंसीहै। तब वे मनुष्य वहां से उठकर
सदूम की ओर देखनेलगे और इबराहीम उन्हें बिदा
१७ करने को उनके साथ चला। फिर यहूवा ने कहा क्या जो
१८ मैं करताहों क्या इबराहीम से छिपाओं। इबराहीम तो
निश्चय एक बड़ा और बलवान मंडली होगा और पृथिवी की
१९ समस्त जाति उसमें आशीष पावेगी। कि मैं उसे जानताहों
कि वुह अपने पीछे अपने बेटों और अपने घराने को आज्ञा
करेगा कि यहूवा के मार्ग का पालन करें कि न्याय और
प्रभुता करें कि यहूवा इबराहीम पर जो कुछ उसने उसको
२० कहाहै पहुंचावे। फिर यहूवा ने कहा इस कारण कि सदूम
और अमूरा का चिल्लाना बड़ा है और इस कारण कि उनके
२१ पाप अत्यंत गरू हुए। मैं अब उतर के देखोंगा कि उसके
चिल्लाने के समान जो मुझ लों पहुंचाहै उनका है कि नहीं।

२२ तब उन मनुष्यों ने वहां से अपने मुंह फेरे और सदूम की
ओर गये परंतु इबराहीम तब भी यहूहा के आगे खड़ा
२३ होरहाथा। और इबराहीम ने पास जाके कहा कि क्या तू
२४ धर्मियों को कुकर्मियों के संग नष्ट करेगा। क्या जाने नगर में
पचास धर्मी होयं क्या तू उसको नष्ट करेगा और उन पचास
२५ धर्मियों के लिये जो उसमें हैं उस स्थान को न छोड़ेगा। यह
तुझ से दूर होय कि तू ऐसा करे कि धर्मियों को बुरों के संग
मारे और कि धर्मी बुरों के तुल्य होवें इस रीति से करना
तुझ से दूर होय क्या समस्त पृथिवी का न्यायी यथार्थ न करेगा।
२६ तब यहूहा ने कहा यदि मैं सदूम के नगर में पचास धर्मी
पाओं तो मैं उनके कारण समस्त स्थान को छोड़ देऊंगा।
२७ फिर इबराहीम ने उत्तर में कहा कि देख मैं अपने यहूहा के
आगे बोलने में ढिठाई किई यद्यपि मैं धूल और राखहों।
२८ क्या जाने पचास धर्मियों से पांच घाट होवें तो क्या उन पांच
के कारण से सारे नगर को नाश करेगा तब उसने कहा
यदि मैं पैंतालीस भी वहां पाओं तो मैं उसे नाश न करोंगा।
२९ फिर उसने उसे कहा क्या जाने चालीस वहां पायेजावें तब
३० उसने कहा मैं चालीस के कारण ऐसा न करोंगा। फेर
उसने कहा हाय यहूहा क्रुद्ध न होवे तो मैं फिर कहों क्या
जाने वहां तीस होवें तब उसने कहा यदि मैं वहां तीस भी
३१ पाओं तो ऐसा न करोंगा। फिर उसने कहा कि देख मैं ने
अपने यहूहा के आगे बोलने में ढिठाई किई क्या जाने बीसही
वहां पायेजावें तब उसने कहा मैं बीस के कारण उसे नाश न
३२ करोंगा। फिर उसने कहा हाय यहूहा क्रुद्ध न होवे तो मैं
अब की बार फिर कहों क्या जाने वहां दसही पायेजावें तब
३३ उसने कहा मैं दस के कारण उसे नाश न करोंगा। तब
यहूहा इबराहीम से बातचीत समाप्त करके चलागया और
इबराहीम अपने स्थान को फिरा।

१९ उन्नीसवां पर्व।

१ फिर सांझ को दो दूत सदूम में आये और लूत सदूम के
द्वार पर बैठा था और उन्हें देखकर लूत उनसे भेंट करने
२ को गया और भूमि पर दंडवत किया। और कहा कि हे
स्वामियो अपने दास के घर की ओर चलिये और रात भर
ठहरिये और चरण धोइये और तड़के उठके अपने मार्ग
चले जाइये तब उन्होंने कहा कि नहीं परंतु हम समस्त रात
३ गली में रहेंगे। पर जब उसने बहुतसी बिनती किई तब वे
उसके ओर फिरे और उसके घर में आये तब उसने उनके
लिये जेवनार किया और अखमीरी रोटी उनके लिये
४ पकाई और उन्होंने खाई। परंतु उनके लेटने से आगे
सदूम के नगर के मनुष्यों ने क्या तरुण और क्या बूढ़े सब
५ लोगों ने चारों ओर से आके उस घर को घेरा। और लूत
को पुकारकर कहा कि जो पुरुष तेरे यहां आज रात
आये हैं कहां हैं हमारे पास उनको ले आ कि हम उन्हें
६ जानें। और लूत द्वार से उन पास निकला और अपने पीछे
७ द्वार बंद किया। और कहा कि हे भाइयो ऐसी दुष्टता
८ न कीजियो। देखो मेरी दो बेटियां हैं जिन्होंने पुरुष को न
जाना है चाहो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर लाऊं और
जो चाहो सो उनसे करो केवल उन मनुष्यन से कुछ न करो
क्योंकि वे इस कारण मेरी छत की छाया तले आये हैं।
९ उन्होंने कहा कि हट जा और कहा कि यह एक जन
आया था कि हम्में बास करे सो अब प्रभुता किया चाहता है
अब हम तेरे साथ उनसे अधिक बुराई करेंगे तब वे उस
पुरुष पर अर्थात लूत पर ऊल्लर करके आये और द्वार
१० तोड़ने को झपटे। परंतु उन पुरुषों ने अपने हाथ बाढ़ा के
११ लूत को घर में खींच लिया और द्वार बंद कर दिया। और
क्या छोटे और क्या बड़े समस्त मनुष्यों को जो घर के द्वार

पास थे अंधापन से मारा यहांलों कि वे द्वार ढूंढते ढूंढते
१२ थकगये। तब उन पुरुषों ने लूत को कहा कि तेरा
कोई और यहां है दामाद अथवा बेटे अथवा बेटियां जो
कोई कि इस नगर में तेरा है तो लेकर इस नगर से निकल
१३ जा। क्योंकि हम इस स्थान को बिनाश करेंगे इस कारण कि
इनका चिल्लाना यहोवा के आगे बड़ा है और यहोवा ने हम
१४ को भेजा है कि इसे बिनाश करें। तब लूत निकला और
अपने दामादों से जिन्हों ने उसकी बेटियों से बिवाह कियाथा
बोला और कहा कि उठो और इस स्थान से निकलो क्योंकि
यहोवा इस नगर को नष्ट करेगा परंतु वुह अपने दामादों
१५ के आगे ऐसा कोई ठट्ठा करनेवाला दिखाई दिया। और
जब बिहान हुआ दूतों ने लूत को उतावली करवा के कहा
कि उठ अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियां जो यहां हैं
१६ ले कि तू कहीं इस नगर के पाप में भस्म न होजा। और जब
लों वुह बिलंब करताथा तो उन पुरुषों ने उसका और
उसकी पत्नी का और उसकी दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा
क्योंकि यहोवा की कृपा उस पर थी और उसे निकालकर
१७ उस नगर के बाहर डालदिया। और उन्हें बाहर निकाल
के उसे यों कहा कि अपने प्राण के लिये भाग पीछे अपने
मत देखियो और उस चौगान पर कहीं न ठहरियो परंतु
१८ पहाड़ पर भागजा ऐसा न होवे कि तू भस्म हो। तब लूत
१९ ने उनसे कहा हे मेरे प्रभु ऐसा नहीं। देखिये कि अब
आप के दास ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है कि तू ने
अपनी दया बढ़ाई है जो तू ने मेरे प्राण बचाने में किई है
मैं अब पहाड़ पर नहीं जासक्ता न होवे कि कोई बिपत
२० मुझ पर पड़े और मैं मरजाऊं। अब देखिये कि यह नगर
भागने को समीप है और वुह छोटा है आज्ञा हो तो मैं
वहां भागकर जाऊं वुह क्या छोटा नहीं सो मेरा प्राण बच

२१ आयगा। उसने उसको कहा कि देख इस बात के बिषय में
भी मैं ने तुझे ग्रहण किया है कि मैं इस नगर को जिसकी
२२ तू ने कही उलट न देऊंगा। शीघ्र कर और उधर भाग
क्योंकि जबलों तू वहां न पहुंचे मैं कुछ कर नहीं सक्ता इस
२३ कारण उस नगर का नाम जुआर रक्खा। सूर्य पृथिवी पर
२४ उदय हुआ था कि जब लूत जुआर में प्रवेश किया। तब यहूहा
ने यहूहा की ओर से सदूम और गमरा पर गंधक और
२५ आग स्वर्ग से बरसाई। और उन नगरों को और नगरों के
समस्त निवासियों को और सारे चौगान को और जो कुछ
२६ कि भूमि पर उगता था उलट दिया। परंतु उसके पत्नी ने
उसके पीछे से फिर के देखा और वुह निमक का खंभा बन
२७ गई। और इबराहीम उठ के बिहानही उस स्थान
२८ में जहां वुह यहूहा के आगे खड़ा हुआ था आपहुंचा। और
उसने सदूम और गमरा और चौगान की समस्त भूमि के
ओर दृष्टि किई तो देखा कि उस भूमि से भट्ठी कासा धूआं
२९ उठरहाथा। और यों हुआ कि जब ईश्वर ने चौगान के
नगरों को नष्ट किया तब ईश्वर ने इबराहीम को स्मरण किया
और उन नगरों को जहां लूत रहताथा नष्ट करते हुए लूत
३० को उस बिपत्ति से छुड़ाया। फिर लूत ने अपनी
बेटियों समेत जुआर से पहाड़ पर जाके निवास किया
क्योंकि वुह जुआर में भी रहने को डरा तब वुह और उसकी
३१ दो बेटियां एक कंदला में जा रहे। और पहिलौठी ने
छोटकी से कहा कि हमारा पिता वृद्ध है और भूमि पर
कोई पुरुष नहीं रहा जो हमारे पास आवे जैसे समस्त
३२ जगत की रीति है। सो आओ हम अपने पिता को दाख
का रस पिलावें और हम उसके साथ लेटें कि हम अपने
३३ पिता से कोई बंश जोगावें। तब उन्हों ने उस रात अपने पिता
को दाख का रस पिलाया और पहिलौठी गई और अपने

पिता के साथ लेटी उसने उसके लेटतेऊए और उठतेऊए
३४ न पहिचाना। और जब दूसरा दिन ऊआ पहिलौंठी ने
छोटकी से कहा कि देख मैं कल रात अपने पिता के साथ
लेटी हम उसको आजरात भी दाख का रस पिलावें और
आज तू जाकर उसके साथ लेट कि हम अपने पिता का
३५ वंश जोगावें। तब उन्हों ने अपने पिता को उस रात भी दाख
का रस पिलाया और छोटकी उठकर उसके साथ लेटी
३६ उसने उसके भी लेटतेऊए और उठतेऊए न पहिचाना। सो
३७ लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भिणी ऊईं। और
पहिलौंठी एक बेटा जनी और उसका नाम मुआब रक्खा कि
३८ वुह मुआबियों का आज लों पिता है। और छोटकी जो थी
वुह भी एक पुत्र जनी और उसका नाम बिनअम्मी रक्खा
और वुह आज लों अमान के वंश का पिता है।

२० बीसवां पर्व।

१ फिर इबराहीम ने वहां से दक्षिण के देश को यात्रा किई
और कादश और शूर के बीच ठहरा और गीरार में जा
२ रहा। और इबराहीम अपनी पत्नी सारः के विषय में बोला
कि मेरी बहीन है सो गिरार के राजा अबीमलक् ने भेजकर
३ सारः को लेलिया। परंतु रात को ईश्वर अबीमलक् के
स्वप्न में आया और उसे कहा कि देख तू इस स्त्री के कारण
जिसे तू ने लियाहै मरचुका क्योंकि वुह एक मनुष्य की पत्नी है।
४ परंतु अबीमलक् उसके पास न आयाथा तब उसने कहा
५ कि हे यऊहा क्या तू धर्मी लोगों को भी मारडालेगा। क्या
उसने मुझे नहीं कहा कि वुह मेरी बहीन है वुह आपही
बोली कि वुह मेरा भाई है मैं ने अपने मन की सच्चाई और
६ हाथ की निर्दोषता से ऐसा किया। तब ईश्वर ने उसे स्वप्न में
कहा कि मैं भी जानताहों कि तू ने अपने मन की सच्चाई से

ऐसा कियाहै क्योंकि मैं ने भी अपने बिरुद्ध में तुझे पाप करने
से रोका और इसलिये मैं ने तुझ को उसे छूने न दिया।
७ इस कारण उस पुरुष को उसकी पत्नी फेर दे क्योंकि वुह
आगमज्ञानी है और वुह तेरे लिये प्रार्थना करेगा और तू
जीता रहेगा परंतु यदि तू उसे फेर न देगा तो यह जान
८ कि तू और तेरा समस्त निश्चय मरेगा। तब अबीमालख़ ने
भोर को तड़के उठकर अपने समस्त सेवकों को बुलाया और
९ ये सारी बातें उनके कानों में कहीं तब वे बजत डरगये। तब
अबीमालख़ ने इब्राहीम को बुलाया और उसे कहा कि यह
क्या है तू ने हम से क्या कियाहै और मैं ने तेरा क्या अपराध
किया कि तू मुझ पर और मेरे राज्य पर एक बड़ा पाप
१० लायाहै तू ने मुझ से अनुचित काम किये। फिर अबीमालख़ ने
इब्राहीम से कहा तू ने क्या देखा कि तू ने यह काम किया।
११ इब्राहीम बोला इस कारण कि मैं ने समझा कि निश्चय
ईश्वर का भय इस स्थान में नहीं है सो वे मेरी पत्नी के लिये
१२ मुझे मारडालेंगे। और तथापि वुह मेरी बहिन निश्चय है
मेरे पिता की पुत्री है परंतु मेरी माता की पुत्री नहीं सो
१३ मेरी पत्नी ऊई। और जब ईश्वर ने मेरे पिता के घर से मुझे
भ्रमाया तो यूं ऊआ कि मैं ने उसे कहा कि मुझ पर तेरा
यह अनुग्रह होगा कि हरकहीं जिधर हम जावें मेरे
१४ विषय में कह कि वुह मेरा भाई है। तब अबीमालख़ ने भेड़
बकरी गाय बैल और दास दासियां लेकर इब्राहीम को
दिया और उसकी पत्नी सारः को भी उसे फेरदिया।
१५ फिर अबीमालख़ ने कहा कि देख मेरी भूमि तेरे आगे है
१६ जहां तेरा मनभावे तहां रह। और सारः से कहा कि देख
मैं ने तेरे भाई को सहस्र चांदि दिई देख वुह तेरे लिये
उन सभों से जो तेरे साथ हैं और सभों से आंखों का ओट
१७ है सो सो वुह यूं दपटीगई। तब इब्राहीम ने ईश्वर की

प्रार्थना किई और ईश्वर ने अबीमालख् और उसकी पत्नी
और उसकी दासियों को चंगा किया और वे जन्ने लगीं।
१८ क्योंकि यहोवा ने अबीमालख् के घर के सारे गर्भों को इबराहीम
की पत्नी सारः के लिये बंद करदिया था।

२१ एकईसवां पर्व।

१ और जैसा उसने कहाथा वैसा यहोवा ने सारः से भेंट किया
और यहोवा सारः के विषय में जो कुछ कहाथा पूरा किया।
२ क्योंकि सारः गर्भिणी हुई और इबराहीम के लिये उसके
बुढ़ापे में ठीक उसी समय में जो ईश्वर ने उसे कहाथा एक
३ पुत्र जनी। और इबराहीम ने अपने पुत्र का नाम जिसे
४ सारः उसके लिये जनीथी इसहाक् रक्खा। और इबराहीम
ने आठवें दिन जैसा ईश्वर ने आज्ञा किईथी अपने बेटे
५ इसहाक् की सुन्नत किई। जब उसका पुत्र इसहाक् उसे
६ उत्पन्न हुआ तब इबराहीम सौ बरस का वृद्ध था। तब
सारः बोली कि ईश्वर ने मुझे हंसाया और सारे सुनवैये
७ मेरे संग हंसेंगे। फिर वुह बोली कि कौन इबराहीम से
कहा होता कि सारः बालक को दूध पिलावेगी क्योंकि मैं
८ उसके बुढ़ापे में पुत्र जनी। और वुह लड़का बढ़ा और
उसका दूध छुड़ायागया और इसहाक् के दूध छुड़ाने के दिन
९ इबराहीम ने बड़ा जेवनार किया। तब सारः ने देखा
कि मिसरी हाजरः का पुत्र जो वुह इबराहीम के लिये
१० जनीथी चिड़ाताहै। उसने इबराहीम से कहा तू इस लौंडी
को और उसके बेटे को निकाल दे क्योंकि यह लौंडीबच्चा मेरे
११ पुत्र इसहाक् के साथ अधिकारी न होगा। और इबराहीम
को यह बात जो उसके पुत्र के विषय में थी अत्यंत कड़वी
१२ लगी। तब ईश्वर ने इबराहीम से कहा वुह बात तेरे लड़के
के और तेरी लौंडी के विषय में तुझे कड़वी न लगे जो बातें

सारः ने तुझे कहीं सो मानले क्योंकि तेरा बंश इसहाक् से
१३ गिनाजायगा। और मैं उस लौंडी के बेटे से भी एक जाति
१४ उत्पन्न करोंगा क्योंकि वुह तेरा बंश है। तब इबराहीम
ने बड़े तड़के उठकर रोटी और एक बर्त्तन में पानी लिये
और हाजरः के कांधे पर धर दिया और लड़के को भी उसे
सौंप के उसे बिदा किया वुह चल निकली और बीरशबअ के
१५ बन में भरमते फिरी। और जब बर्त्तन का पानी चुकगया
तब उसने उस लड़के को एक झाड़ियों के तले डालदिया।
१६ और आप उसके सन्मुख एक तीरभर पर दूर जा बैठी
क्योंकि वुह बोली कि मैं इस बालक के मृत्यु को न देखों और
१७ वुह उसके सन्मुख बैठके बड़े शब्द से रोई। तब ईश्वर ने
उस बालक का शब्द सुना और ईश्वर के दूत ने स्वर्ग पर से
हाजरः को पुकारा और उसे कहा कि हे हाजरः तुझे क्या
ऊआ मत डर कि ईश्वर ने उस बालक के शब्द को वहीं जहां
१८ वुह है सुना। उठ और उस लड़के को उठा और हाथों से
१९ संभाल के रख कि मैं उसको एक बड़ी जाति बनाओंगा। फिर
ईश्वर ने उसकी आंखें खोलीं तब उसने पानी का एक कूआं
देखा और उसने जाके उस बर्त्तन को पानी से भरा और
२० उस लड़के को पिलाया। सो ईश्वर उस लड़के के साथ था
कि वुह बढ़ा और बन में रहाकिया और धनुषधारी ऊआ।
२१ फिर उसने फारान के बन में आके निवास किया और उसकी
माता ने मिसर की भूमि से उसके लिये एक पत्नी लिई।
२२ फिर उस समय में यों ऊआ कि अबीमालख् और उसकी
सेना के प्रधान फिखोल ने इबराहीम को कहा सब कार्यों में
२३ जो तू करता है ईश्वर तेरे संग है। अब तू यहां मुझे ईश्वर
की किरिया खा कि तू मुझे और मेरे बेटों और मेरे पोतों से
छल न करेगा परंतु उस अनुग्रह के समान जो मैं ने तुझ
पर किया है तू मुझे और उस भूमि से जहां तूने निवास

२४ कियाहै करे। तब इबराहीम बोला कि मैं किरिया
२५ खाओंगा। तब इबराहीम ने पानी के एक कूएं के लिये जिसे
अबीमालख् के सेवकों ने बरबस्ती से लेलियाथा अबीमालख् को
२६ झिड़का। अबीमालख् ने कहा मैं नहीं जानताहों किसने
यह काम किया तू ने भी तो मुझे न कहाथा और मैं ने भी
२७ तो आजही सुना। फिर इबराहीम ने भेड़ और गाय बैल
लेके अबीमालख् को दिये और उन दोनों ने आपुस में बाचा
२८ बांधा। तब इबराहीम ने भेड़ की झुंड के सात बच्चे अलग
२९ रक्खे। और अबीमालख् ने इबराहीम को कहा कि तू ने भेड़
३० के सात बच्चे क्यों अलग किये। उसने कहा इस कारण कि तू
उन भेड़ के सात बच्चों को मेरे हाथ से ले कि वे मेरा साक्षी
३१ होवें कि मैं ने यह कूआं खोदाहै। इस कारण उसने उस स्थान
का नाम बीरश्बअ् रक्खा क्योंकि उन दोनों ने वहां आपुस में
३२ किरिया खाई। सो उन्होंने एक नियम बीरश्बअ् में किया
तब अबीमालख् और उसका प्रधान सेनापति फिखोल उठे
३३ और फलस्तियों की भूमि में फिरगये। तब उसने बीरश्बअ्
में कुंज लगाया और वहां यहोवा का जो सनातन का ईश्वर
३४ है नाम लिया। और इबराहीम फलस्तियों की भूमि में
बहुत दिन लों रहाकिया।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

१ इन बातों के पीछे यूं हुआ कि ईश्वर ने इबराहीम की
परिक्षा किई और उसे कहा हे इबराहीम वुह बोला
२ प्रत्यक्ष हों। फिर उसने कहा तू अपने बेटे को अपने
एकलौते इसहाक् को जिसे तू प्यार करताहै और मोराईया
की भूमि में जा और वहां पहाड़ों में से एक पहाड़ पर जो
मैं तुझे बताओंगा उसे होम के बलिदान के लिये चढ़ा।
३ तब इबराहीम ने बड़े तड़के उठकर अपने गदहे पर काठी

रक्खी और अपने तरुणों में से दो को लिया और अपने पुत्र
इसहाक को साथ लिया और होम के लिये बलिदान की
लकड़ियां चीरीं और उठकर जहां ईश्वर ने उसे आज्ञा
४ किई थी उस स्थान को चलागया। तीसरे दिन जो इब्राहीम
५ ने अपनी आंखें ऊपर किईं तो उस स्थान को दूर से देखा। तब
इब्राहीम ने अपने तरुणों से कहा तुम गदहे के साथ यहीं
ठहरो मैं इस लड़के के साथ वहां लों जाताहों और प्रार्थना
६ कर के फिर तुम्हारे पास आतेहैं। तब इब्राहीम ने होमके
बलिदान की लकड़ियां लेकर अपने पुत्र इसहाक पर
लादीं और आग और छूरी अपने हाथ में लिई और दोनो
७ साथ साथ गये। और इसहाक अपने पिता इब्राहीम से
यों कहिके बोला कि हे मेरे पिता वुह बोला हे मेरे बेटे
यहीं हों उसने कहा कि भला आग और लकड़ियां तो हैं
८ पर होम के बलिदान के लिये मेम्ना कहां है। इब्राहीम
बोला कि हे मेरे पुत्र ईश्वर होम के बलिदान के लिये मेम्ना
९ आपही सिद्ध करेगा सो वे दोनों साथ साथ चलेगये। और
उस स्थान में जहां ईश्वर ने कहाथा आये तब इब्राहीम ने
वहां एक बेदी बनाई और उन लकड़ियों को वहां चुना और
अपने पुत्र इसहाक को बांधके उस बेदी में लकड़ियों पर
१० धरा। और इब्राहीम ने छूरी लेके अपना हाथ बढ़ाया
११ कि अपने बेटे को घात करे। तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग पर से
उसे पुकारा कि इब्राहीम इब्राहीम वुह बोला यहीं हूं।
१२ तब उसने कहा तू अपना हाथ लड़के पर मत बढ़ा और
उसे कुछ मत कर क्योंकि अब मैं जानताहों कि तू ईश्वर से
डरताहै कि तू ने अपने एकलौते को मुझ से न रखछोड़ा।
१३ तब इब्राहीम ने अपनी आंखें ऊपर करके देखा और क्या
देखताहै कि अपने पीछे एक मेंढ़ा कांटों में सींगों से अंटका
ऊआथा इब्राहीम ने जाकर उस मेंढ़े को लिया और होम

के बलिदान के लिये अपने बेटे की संती बलिदान चढ़ाया।
१४ और इबराहीम ने उस स्थान का यह नाम रक्खा कि यहूहा
सहेजेगा जैसा कि आज लों कहाजाताहै कि पहाड़ पर
१५ यहूहा देखाजायगा। फिर यहूहा के दूत ने दोहरा के स्वर्ग में
१६ से इबराहीम को पुकारा। और कहा कि यहूहा कहताहै
कि मैं ने अपनीही किरिया खाईहै क्योंकि इस कारण
तू ने यह कार्य किया और अपने पुत्र अपने एकलौते को न
१७ रखछोड़ा। मैं तुझे आशीष पर आशीष देउंगा और आकाश
के तारों और समुद्र के तीर के बालू के समान तेरे बंश को
अत्यंत बढ़ाऊंगा और तेरे बंश अपने शत्रुन के फाटक के
१८ अधिकारी होंगे। और तेरे बंश में पृथिवी के समस्त लोग
१९ आशीष पावेंगे इस कारण कि तू ने मेरा शब्द माना। उसके
पीछे इबराहीम अपने तरुणों के पास फिर आया और
एकट्ठे बीरशबअ को गये और इबराहीम ने बीरशबअ में
२० निवास किया। और इन बस्तुन के पीछे ऐसा हुआ
कि इबराहीम को संदेश पहुंचा कि मलका भी तेरे भाई
२१ नाहूर से बालक जनी। हूज़ उसका पहिलौंठा और उसका
२२ भाई बूज़ कमूएल अराम का पिता। और कसद और हाज़ू
२३ और फिलदाश और जदलाफ और बतूएल। और
बतूएल से रबका उत्पन्न हुई मलका इबराहीम के भाई
२४ नाहूर से ये आठ उत्पन्न हुई। और उसकी सुरैतिन से
जिसका नाम रौअमा था उसे तबअ और जाहम और
ताहश और माआका उत्पन्न हुए।

२३ तेईसवां पर्व।

१ और सारः एक सौ सताईस बरस जीई सारः के जीवन के
२ बरस उतनेही थे। और सारः कुरयात अरबा में जो हबरून
कहलाती है मरगई तब इबराहीम सारः के लिये बिलाप

३ करने के और रोने के लिये आया। फिर इबराहीम अपने
४ मृतक से उठ खड़ा हुआ और हेस के बेटों से कहा। कि मैं
परदेशी और तुम्हों निवासी हों तुम अपने मध्य में मुझे एक
समाधि का स्थान सौंप दो कि मैं अपने मृतक को अपनी
५ दृष्टि से अलग गाड़ों। हेस के संतान ने इबराहीम को
६ उत्तर दिया। और कहा कि हे स्वामी हमारी सुन कि
तू हमारे मध्य में ईश्वर की ओर से प्रधान है सो तू हमारे
समाधिन में से चुन के एक में अपने मृतक को गाड़ हम्में कोई
नहीं अपना समाधि तुझ से रोकेगा परंतु जिसतें तू अपने मृतक
७ को गाड़े। तब इबराहीम खड़ा हुआ और उस भूमि के लोग
८ अर्थात हेस के संतान को प्रणाम किया। और उनसे बातचीत
करके कहा कि यदि तुम्हारा मन होवे कि मैं अपने मृतक
को अपनी दृष्टि से अलग गाड़ों तो मेरी सुनो और मेरे
९ लिये ज़ोहार के पुत्र अफरून से बिनती करो। कि वुह
मखपीला की कंदला मुझे देवे और उसके खेत के सिवाने पर
है उसका भरपूर मोल लेके मेरे वश में करदे कि मैं तुम्हों में
एक समाधि का अधिकार रक्खों और अफरून हेस के
१० संतानों में बास करताथा। और अफरून हेस ने हस के
संतानों के आगे और सबके जो नगर के द्वार में प्रवेश करतेथे
११ इबराहीम को उत्तर में कहा। नहीं मेरे प्रभु तू मेरी सुन
मैं यह खेत तुझे देताहों और वुह कंदला जो उसमें है तुझे
देताहों मैं अपने लोगों के बेटों के आगे तुझे देताहों तू
१२ अपने मृतक को गाड़ तब इबराहीम उस देश के लोगों के
१३ आगे झुका। फिर उस भूमि के लोगों के सुनतेही अफरून से
यों कहिके बोला कि मेरी सुनिये परंतु यदि तू देगा तो मैं
तुझे उस खेत की रूती रोकड़ देऊंगा मुझ से ले और मैं अपने
१४ मृतक को वहां गाड़ोंगा। अफरून ने इबराहीम को उत्तर
१५ देके कहा। मेरे प्रभु मेरी सुनले उस भूमि का मोल चार

सौ शिकल चांदी है यह तेरे और मेरे आगे क्या वस्तु है
१६ सो तू अपने मृतक को गाड़। इबराहीम ने अफरून की
सुनके चांदियों को जितनी उसने हैस के संतान को सुनाकर
कहीथी अफरून को चार सौ चांदी के शिकल को जो
१७ बैपारियों में चलतेथे अफरून के लिये तोला। सो अफरून
का खेत जो मखपीला में ममरी के सन्मुख था वुह खेत और
उसकी कंदला और समस्त वृक्ष जो उस खेत में और उसके
१८ सिवाने में चारों ओर थे। हैस के संतानों के आगे और
कितने लोग नगर के द्वार में प्रवेश करतेथे उनके आगे
१९ इबराहीम के हाथ में दृढ़ कियेगये। इसके पीछे इबराहीम
ने अपनी पत्नी सारः को मखपीला के खेत की कंदला में जो
ममरी के आगे है गाड़ा वही हबरून किनान के देश में है।
२० और वुह खेत और उसमें की कंदला हैस के संतानों से
इबराहीम के हाथ में समाधिन के स्थान के लिये दृढ़ कियेगये।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

१ और इबराहीम वृद्ध और दिनी ऊआ और यहूहा ने सब
२ बातों में इबराहीम को बर दिया। और इबराहीम ने
अपने घर के सबसे पुराने सेवक को जो उसकी समस्त संपत्ति
का प्रधान था कहा मैं तेरी बिनती करताहों अपना हाथ
३ मेरी जांघ तले रख। और मैं तुझ से यहूहा की जो स्वर्ग का
ईश्वर और पृथिवी का ईश्वर है किरिया लेऊंगा कि तू
किनानियों की लड़कियों में से जिनमें मैं रहताहों मेरे बेटे के
४ लिये पत्नी मत करदे। परंतु तू मेरे देश और मेरे कुटुम
में जाइयो और मेरे बेटे इसहाक के लिये पत्नी लाइयो।
५ और उस सेवक ने उसे कहा कि क्या जाने वुह स्त्री इस देश
में मेरे संग आने को न चाहे तो मुझे अवश्य होगा कि तेरे
बेटे को उस भूमि में जहां से तू आयाहै फिर लेजाओं।

६ इबराहीम ने उसे कहा सावधान रह तू मेरे पुत्र को उधर
७ फिर मत ले जाना। कि यहूहा स्वर्ग का ईश्वर जो मुझे मेरे
पिता के घर से और मेरे घराने की भूमि से निकाल लाया
और जिसने मुझे कहा और मुझ से किरिया खा के कहा कि
मैं तेरे वंश को यह भूमि देऊंगा वही तेरे आगे अपना दूत
८ भेजेगा और वहीं से तू मेरे बेटे के लिये पत्नी लीजियो। और
यदि वुह स्त्री तेरे साथ आने को न चाहे तो तू मेरी इस
किरिया से बाहर होजायगा केवल मेरे बेटे को उधर फेर
९ मत ले जाना। उस सेवक ने अपना हाथ अपने स्वामी
इबराहीम की जांघ तले रक्खा और उस बात के विषय में उसके
१० आगे किरिया खाई। और सेवक अपने स्वामी के ऊंटों में से
दस ऊंट लिये और चलनिकला क्योंकि उसके स्वामी की
सामग्री उसके हाथ में थी सो वुह उठा और अरामनहरी
११ में नाहूर के नगर को गया। और उसने अपने ऊंटों को
नगर के बाहर पानी के कूएं के निकट सांझ के समय में जिस
१२ समय स्त्रीलोग पानी भरने जाती हैं बैठाया। और कहा कि
हे यहूहा मेरे स्वामी इबराहीम के ईश्वर मैं तेरी बिनती
करताहों आज मेरा कार्य सिद्ध कीजिये और मेरे स्वामी
१३ इबराहीम पर दया कीजिये। देख मैं पानी के कूएं पर खड़ा
हों और नगर के पुरुषों की बेटियां पानी भरने आती हैं।
१४ ऐसा कर कि वुह छोकरी जिसे मैं कहों कि अपना घड़ा
उतार कि मैं पीयों और वुह कहे कि पी और मैं तेरे ऊंटों
को भी पिलाओंगी वही हो जिसे तू ने अपने दास इसहाक़
के लिये ठहरायाहै और इसीसे मैं जानोंगा कि तू ने मेरे
१५ स्वामी पर दया किईहै। इतनी बात समाप्त न करते यों
हुआ कि देखो रबका जो इबराहीम के भाई नाहूर की
पत्नी मलका के पुत्र बथूएल से उत्पन्न हुईथी अपना घड़ा
१६ अपने कांधे पर धरेहुए बाहर निकली। और वुह कन्या

सुन्दरी और कुमारी थी जिसे किसी पुरुष ने छूआ न था वुह
उस कूएं पर गई और अपना घड़ा भर के ऊपर आई।
१७ वुह सेवक उसकी भेंट को दौड़ा और बोला मैं तेरी बिनती
१८ करताहों अपने घड़े से थोड़ा पानी पीने दे। वुह बोली कि
पी मेरे प्रभु और उसने शीघ्रता करके अपना घड़ा अपने
१९ हाथ पर उतारा और उसे पिलाया। जब उसे पिलाचुकी
तो बोली मैं तेरे ऊंटों के लिये भी जबलों वे जल से तृप्त हों
२० खींचती जाऊंगी। और उसने शीघ्रता किई और अपना
घड़ा कठरा में उड़ेल दिया और फिर कूएं पर भरने को
२१ दौड़ी और उसके सब ऊंटों के लिये खींचा। और वुह
पुरुष आश्चर्य करते चुपका रहा कि देखताथा कि यदि
२२ यहोवा ने उसकी यात्रा सफल किई है कि नहीं। और यों
हुआ कि जब ऊंट पी चुके तो उस पुरुष ने आधे मिष्काल
सोने की एक नथ और दस मिष्काल सोने के दो खड़वे
२३ उसके हाथों के लिये निकाले। और कहा कि तू किसकी
लड़की मैं बिनती करताहों मुझे बता तेरे पिता के घर में
२४ स्थान है कि हम वहां उतरें। उसने उसे कहा कि मैं बतूएल
२५ की लड़की हों जिसे मलका नाहूर के लिये जनी। उससे
अधिक उसने उसे कहा कि हमारे यहां घास चारा बहुत और
२६ रहने का स्थान है। तब उस पुरुष ने अपना सिर झुकाया
२७ और यहोवा की स्तुति किई। और कहा यहोवा मेरे स्वामी
इबराहीम का ईश्वर धन्य है जिसने मेरे स्वामी को अपनी
कृपा और अपनी सच्चाई बिना न छोड़ा मार्ग में यहोवा ने
मेरे स्वामी के भाइयों के घर की ओर मेरी अगुआई किई।
२८ तब वुह लड़की दौड़ी और अपनी माता के घर में यह बातें
२९ कहीं। और लाबान नाम रबका का एक भाई था और
३० लाबान बाहर कूएं पर उस मनुष्य कने दौड़ा। और यों
हुआ कि जब उसने वुह नथ और खड़वे अपनी बहिन के

हाथों में देखे और जब उसने अपनी बहिन रबका से ये
बातें कहते सुनी कि इस मनुष्य ने मुझे यों कहा वुह उस
पुरुष पास आया और क्या देखता है कि वुह ऊंटों के निकट
३१ कूएं पर खड़ा था। और कहा कि हे ईश्वर के धन्य दास तू
भीतर आ तू किसलिये बाहर खड़ा है तेरे और तेरे ऊंटों
३२ के लिये मैं ने स्थान सिद्ध किया है। और वुह पुरुष घर में
आया और उसने अपने ऊंटों के पलान खोले और ऊंटों के
लिये चारा दाना और उसके और लोगों के जो उसके साथ
३३ थे चरण धोने को जल दिया। और भोजन उनके आगे
रक्खागया पर वुह बोला कि मैं जबलों अपना संदेश न पहुंचाओं
३४ न खाऊंगा वुह बोला कि कहिये। तब उसने कहा कि मैं
३५ इबराहीम का सेवक हों। और यहूहा ने मेरे स्वामी को
बहुतसा बर दिया है और वुह महान हुआ है और उसने
उसे भेड़ बकरियां और गाय बैल और सोना रूपा और
३६ दास और दासियां और ऊंट और गधे दिये हैं। और मेरे
स्वामी की पत्नी सारः बुढ़ापे में उसके लिये बेटा जनी और
३७ उसने सब कुछ जो उसका था उसे दिया। और मेरे स्वामी
ने यह कहके मुझे किरिया लिई कि तू किनानियों की बेटियों
में से जिन की भूमि में मैं रहता हों किसी से मेरे बेटे का
३८ बिवाह मत करियो। परंतु तू मेरे पिता के घराने और मेरे
३९ कुटुंब में जाइयो और मेरे बेटे के लिये पत्नी लीजियो। मैं ने
अपने स्वामी से कहा क्या जाने वुह स्त्री मेरे साथ न आवे।
४० उसने मुझे कहा कि यहूहा जिसके आगे चलता हों अपना
दूत तेरे संग भेजेगा और तेरा मार्ग सफल करेगा तू मेरे
कुटुंब और मेरे पीता के घराने से मेरे बेटे के लिये पत्नी
४१ लीजियो। और जब तू मेरे कुटुंब में आवे तब तू मेरी
किरिया से बाहर होगा परंतु यदि वे तुझे न देवें तो भी तू
४२ मेरी किरिया से बाहर होजायगा। सो मैं आज के दिन कूएं

पर आया और कहा कि हे यहूहा मेरे स्वामी इब्राहीम
४२ के ईश्वर यदि तू अब मेरा जाना सफल करे। देख मैं
जल के कूएं पर खड़ा हों और यों होगा कि जब कुमारी जल
भरने निकले और मैं उसे कहों कि मैं तेरी बिनती करता हों
४३ कि तू अपने घड़े से थोड़ा पानी पीने को मुझे दे। और वुह
मुझे कहे कि तू भी पी और मैं तेरे ऊंटों के लिये भी भरोंगी
तो वही वुह स्त्री होवे जिसे यहूहा ने मेरे स्वामी के बेटे के
४५ लिये ठहरायाहै। और इतनी बात मेरे मन में समाप्त न
होतेही देखो रबका अपने कांधे पर घड़ा लेके बाहर निकली
और वुह नीचे कूएं को गई और खींचा और मैं ने उसे कहा
४६ कि मैं तेरी बिनती करताहों मुझे पिने दीजिये। उसने
शीघ्रता करके अपना घड़ा उतारा और बोली कि पी और
मैं तेरे ऊंटों को भी पिला देऊंगी सो मैं ने पीया और
४७ उसने मेरे ऊंटों को भी पिलाया। फिर मैं ने उसे पूछा और
कहा कि तू किसकी बेटी है वुह बोली कि नाहूर के बेटे
बतूएल की लड़की जिसे मलका उसके लिये जनी और मैं ने
४८ नथ उसकी नाक में और खड़वे उसके हाथों में डाले। और
मैं ने अपना सिर झुकाया और यहूहा की स्तुति किई और
अपने स्वामी इब्राहीम के ईश्वर यहूहा का धन्यमाना जिस
ने मुझे ठीक मार्ग में मेरी अगुआई किई कि अपने स्वामी के
४९ भाई की बेटी उसके बेटे के लिये लेऊं। सो अब तुम कृपा
और सचाई से मेरे स्वामी के साथ ब्यवहार किया चाहो तो
मुझे कहो और यदि नहीं तो मुझे कहो कि मैं दहिने अथवा
५० बायें हाथ फिरों। तब लाबान और बतूएल ने उत्तर
दिया और कहा कि यह बात यहूहा की ओर से है हम
५१ तुझे बुरा अथवा भला नहीं कहिसक्ते। देख रबका तेरे
आगे है इसे ले और जा और जैसा यहूहा ने कहाहै अपने
५२ स्वामी के बेटे की पत्नी कर दे। और ऐसा हुआ कि जब

इब्राहीम के सेवक ने उनकी बातें सुनीं भूमि लों यहोवा के
५३ आगे झुका। और सेवक ने रूपे के बर्त्तन और सोने के बर्त्तन
और पहिरावा निकाला और रबका को दिया और उसने
उसके भाई और उसकी माता को भी बहुमूल्य वस्तु दिईं।
५४ और उसने और उन लोगों ने जो उसके साथ थे खाया और
पीया और रातभर ठहरे और वे बिहान को उठे और
५५ उसने कहा कि मुझे मेरे स्वामी पास भेजिये। उसके भाई
और उसकी माता ने कहा कि छोकरी को हमारे संग बरस
दिन अथवा दस महीने रहने दीजिये उसके पीछे वुह
५६ जायगी। उसने उन्हें कहा कि मुझे मत रोको कि यहोवा ने
मेरी यात्रा सफल किई मुझे बिदा करो कि मैं अपने स्वामी
५७ पास जाऊं। वे बोले हम उस छोकरी को बुलाते हैं और
५८ उसी से पूछते हैं। तब उन्हों ने रबका को बुलाया और उसे
कहा तू इस पुरुष के साथ जायगी वुह बोली कि जाऊंगी।
५९ सो उन्हों ने अपनी बहिन रबका और उसकी दाई और
इब्राहीम के सेवक और उसके लोगों को बिदा किया।
६० और उन्हों ने रबका को आशीष दिया और उसे कहा कि तू
हमारी बहिन है सहस्रों लाखों की माता हो और तेरा बंश
६१ उनके द्वारों का जो उस्से बैर रखते हैं अधिकारी हो। और
रबका और उसकी सहेलियां उठीं और ऊंटों पर चढ़के
उस मनुष्य के पीछे हुईं और उस पुरुष ने रबका को लिया
६२ और अपना मार्ग पकड़ा। और इसहाक़ सजीवन देखनेवाले
के कूएं पर मार्ग में आ निकलाथा क्योंकि वुह दक्षिण की
६३ भूमि में रहताथा। और इसहाक़ संध्याकाल को ध्यान
करने के लिये खेत को निकला उसने अपनी आंखें ऊपर किईं
६४ और देखा कि ऊंट चले आते हैं। रबका ने अपनी आंखें
उठाईं और जब उसने इसहाक़ को देखा तो ऊंट से उतरी।
६५ क्योंकि उसने सेवक से पूछाथा कि यह जन जो खेत से हमारी

भेट को चला आता है कौन है सेवक ने कहा कि मेरा स्वामी है
६५ इस लिये उसने घूंघट डाला और अपने तईं ढांपा। तब
६६ सेवक ने सबकुछ जो उसने कियाथा इसहाक़ से कहा। उस
६७ समय इसहाक़ उसे अपनी माता सारः के तंबू में लाया और
रबका को लिया वुह उसकी पत्नी ऊई उसने उसे प्यार
किया और इसहाक़ ने अपनी माता के मरनेके पीछे उसे
शांति पाई।

२५ पचीसवां पर्ब।

१ तब इबराहीम ने कतूरा नाम की एक पत्नी लिई।
२ और उसे ज़मरान और यक़शान और मीदान और
मिदियान और इशबाक़ और शूअ़ उत्पन्न ऊए। और
३ यक़शान से शबा और ददान उत्पन्न ऊए और ददान के
बेटे अशूरीम और लतूशीम और लामीम। और मदयान
४ से ईफा और ईफर और हनूख और अबीदाअ़ और
अलदाआ उत्पन्न ऊए ये सब कतूरा के लड़के थे। और
५ इबराहीम ने सब जो कुछ कि उसका था इसहाक़ को दिया।
६ परंतु दासियों के बेटों को इबराहीम ने दान दिये और
अपने जीतेजी उनको अपने बेटे इसहाक़ पास से पूरब के
देश में भेजदिया। और इबराहीम के जीवन के दिन जिनमें
७ वुह जीता रहा एक सौ पचहत्तर बरस थे। तब इबराहीम
८ ने अच्छे वृद्ध बय में परिपूर्ण और वृद्ध मनुष्य होके प्राण
त्याग किया और अपने लोगों में संग्रह कियागया। और
९ उसके बेटों इसहाक़ और इसमाईल ने मखपीला की कंदला
में हतीज़ोहार के बेटे अफरून के खेत में है और ममरी के
सन्मुख उसे गाड़ा। यही खेत इबराहीम ने हेस के बेटों से
१० मोल लियाथा इबराहीम और उसकी पत्नी सारः वहीं
गाड़ेगये। और इबराहीम के मरनेके पीछे यों ऊआ कि
११

ईश्वर ने उसके बेटे इसहाक को आशीष दिया और
इसहाक सजीवन देखवैया के कूएं के निकट रहताथा।
१२ और इबराहीम के बेटे इस्माईल के वंश के नाम जिसे
सारः की लौंडी मिसरी हाजरः इबराहीम से जनीथी ये
१३ हैं। उनकी उत्पत्ति की रीति के समान इस्माईल के बेटों के
नाम ये हैं इस्माईल का पहिलौंठा नबायूस है और क़ेदार
१४ और अदबील और बसाम। और मशमाअ और दूमा
१५ और मस्सा। और हादार और तीमा और जीतूर
१६ और नाफश और क़ीदमा। ये इस्माईल के बेटे हैं और
उनके नाम उनके नगरों और उनके गढ़ियों में ये हैं और
१७ ये अपनी जातियों के बारह प्रधान थे। और इस्माईल के
जीवन के बरस एक सौ सैंतीस थे कि उसने अपना प्राण
त्याग किया और मरगया और अपने लोगों में संग्रह
१८ कियागया। और वे हवीलः से शूर लों जो मूसिल के मार्ग
में मिसर के आगे है बसतेथे सो वुह अपने सारे भाइयों के
१९ आगे मरगया। और इबराहीम के बेटे इसहाक की
वंशावरी यह है कि इबराहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ।
२० इसहाक ने चालीस बरस के बय में रबका से बिवाह किया
वुह फदान आराम के सुरियानी बतूवाईल की बेटी और
२१ सुरियानी लाबान की बहिन थी। और इसहाक ने अपनी
पत्नी के लिये यहूहा से बिनती किई क्योंकि वुह बांझ थी
और यहूहा ने उसकी बिनती मानी और उसकी पत्नी
२२ रबका गर्भिणी हुई। और उसके पेट में बालक आपुस में
छटपटाने लगे तब उसने कहा यदि यों तो ऐसा क्यों हों और
२३ वुह यहूहा से पूछने गई। यहूहा ने उसे कहा कि तेरे गर्भ में
दो जाति हैं और तेरे उदर से दो रीति के लोग अलग होंगे
और एक लोग दूसरे लोग से बलवंत होगा और जेष्ठ कनिष्ठ
२४ की सेवा करेगा। और जब उसके जन्ने के दिन पूरे हुए तो

२५ देखा कि उसके गर्भ जमल थे। सो पहिला ऐसा जैसा रोम का
पहिरावा होताहै बालों में छिपाऊआ लाल रंग का निकला
२६ और उन्होंने उसका नाम ऐस रक्खा। उसके पीछे उसका
भाई निकला और उसका हाथ ऐस की एड़ी से लगा ऊआथा
और उसका नाम याक़ूब रक्खागया जब वुह उन्हें जनी तो
२७ इसहाक़ का बय साठ बरस का था। और लड़के बढ़े और
ऐस खेत का रहवया और चतुर अहेरी था और याक़ूब
२८ सूधा मनुष्य तंबू में रहा करताथा। और इसहाक़ ऐस को
प्यार करताथा क्योंकि उसके अहेर से खाताथा परंतु रबका
२९ याक़ूब को चाहतीथी। और याक़ूब ने लपसी पकाई
३० और ऐस खेत से आया और वुह थकगयाथा। और ऐस ने
याक़ूब से कहा मैं तेरी बिनती करताहों कि इस लाल
लाल में से मुझे खिला क्योंकि मैं मुर्छित हों इस लिये उसका
३१ नाम अदूम ऊआ। तब याक़ूब ने कहा कि आज अपना
३२ जन्म पद मेरे पास बेच। तब ऐस ने कहा देख मैं मरने
३३ परहों और इस जन्म पद से मुझे क्या लाभ होगा। तब
याक़ूब ने कहा कि आज मुझ पास किरिया खा उसने उस
पास किरिया खाई और अपना जन्म पद याक़ूब के हाथ
३४ बेचा। तब याक़ूब ने रोटी और मसूर की दाल की लपसी
दिई उसने खाया और पीया और उठकर चलागया यों
ऐस ने अपने जन्म पद की निंदा किई।

२६ छबीसवां पर्व।

१ और उस भूमिमें पहिले अकाल को छोड़ जो इबराहीम के
दिनों में पड़ाथा फिर अकाल पड़ा तब इसहाक अबीमालख
२ पास जो फलस्तियों का राजा था गिरार को गया। और
यऊहा ने उस पर प्रगट होके कहा नीचे मिसर को मत जा
३ परंतु जहां मैं तुझे कहों उस भूमि में निवास कर। तू इस

भूमि में निवास कर कि मैं तेरे साथ होऊंगा और तुझे
आशीष देऊंगा क्योंकि मैं तुझे और तेरे बंश को इन समस्त
देशों को देऊंगा और मैं उस किरिया को जो मैं ने तेरे पिता
४ इबराहाम से किई है पूरी करोंगा। और मैं तेरे बंश को
आकाश के तारों की नाईं बढ़ाओंगा और ये समस्त देश तेरे
बंश को देऊंगा और पृथिवी की समस्त जाति तेरे बंश से
५ आशीष पावेंगी। इस लिये कि इबराहीम ने मेरे शब्द को
माना और मेरी आज्ञाओं और मेरी बातों और मेरे
निश्चयों और मेरे नियम का पालन किया।
६।७ सो इसहाक् गिरार में रहा। और वहां के बासियों ने उस्से
उसकी पत्नी के बिषय में पूछा तब वुह बोला कि वुह मेरी
बहनी है क्योंकि वुह अपनी पत्नी कहतेऊए डरा ऐसा न
होवे कि वहां के लोग रबका के लिये उसे मारडालें क्योंकि वुह
८ देखने में सुंदर थी। और यों ऊआ कि जब वुह वहां बज्जत
दिन लों रहा तो फलस्तियों के राजा अबीमालख ने झरोके
से दृष्टि किई और देखा कि इसहाक़ अपनी पत्नी रबका से
९ कलोल करताथा। तब अबीमालख ने इसहाक़ को बुलाकर
कहा देख वुह निश्चय तेरी पत्नी है फिर तू ने क्योंकर कहा
कि वुह मेरी बहिन है इसहाक़ ने कहा इस लिये मैं ने कहा
१० कहीं ऐसा न हो कि मैं उसके लिये माराजाओं। अबीमालख
बोला यह क्या है जो तू ने हम से किया यह होसक्ताथा कि
लोगों में से कोई तेरी पत्नी के साथ कुकर्म्म करता और तू यह
११ दोष हम पर लाता। तब अबीमालख् ने अपने सब लोगों को
यह आज्ञा किई कि जो कोई इस पुरुष को अथवा उसकी
पत्नी को छूयेगा निश्चय घात कियाजायगा।
१२ तब इसहाक़ ने उस भूमि में खेती किई और उस बरस सौ
१३ गुना प्राप्त किया और यहोवा ने उसे आशीष दिया। और
वुह बढ़गया और उसकी बढ़ती होतीचलीजातीथी यहां

१४ लों कि अत्यंत बड़ा धनी होगया। क्योंकि भेड़ बकरी और
गाय बैल और बहुत से सेवकों का स्वामी हुआ और
१५ फलस्तियों ने उसे डाह किया। क्योंकि फलस्तियों ने सारे
कूएं जो उसके पिता के सेवकों ने उसके पिता इबराहीम के
समय में खोदेथे मूंददिये और उन्हें मट्टी से भरदिया।
१६ सो अबीमालख़ ने इसहाक़ से कहा कि हमारे पास से जा
१७ इस लिये कि तू हमों से भी सामर्थी है। इसहाक़ वहां से
गया और अपना तंबू गिरार की नीचाई में खड़ा किया
१८ और वहीं निवास किया। और इसहाक़ ने वे पानी के कूएं
उन्हों ने जो उसके पिता इबराहीम के समय में खोदेथे फिर
खोदे क्योंकि फलस्तियों ने इबराहीम के मरने के पीछे उन्हें
मूंददियाथा और उसने उनके वही नाम जो उसके
१९ पिता ने रक्खेथे रक्खे। और इसहाक़ के सेवकों ने नीचाई में
खोदा और वहां एक कूआं जिसमें जल का सोता था पाया।
२० और गिरार के गड़रियों ने इसहाक़ के गड़रियों से यह
कह के भगड़ा किया कि यह जल हमारा है और उसने
इसलिये कि उन्हों ने उसके साथ भगड़ा कियाथा उस कूएं
२१ का नाम भगड़ा रक्खा। और उन्हों ने दूसरा कूआं खोदा
और उसके लिये भी भगड़ा हुआ उसने उसका नाम
२२ बिरोध रक्खा। तब वहां से आगे चला और एक कूआं खोदा
उस पर उन्हों ने भगड़ा न किया उसने उसका नाम स्थान
रक्खा और उसने कहा कि अब यहूहा ने हमारे लिये स्थान
२३ बनाया और हम इस भूमि में फलवंत होवेंगे। और वुह
२४ वहां से बैरसबा को गया। और यहूहा उसी रात उस
पर प्रगट हुआ और कहा कि मैं तेरे पिता इबराहीम का
ईश्वर हों मत डर कि मैं तेरे संग हों और तुझे आशीष
देऊंगा और अपने दास इबराहीम के लिये तेरा वंश
२५ बढ़ाऊंगा। और उसने वहां बेदी बनाई और यहूहा का

नाम लिया और वहां अपना तंबू खड़ा किया और इसहाक् के
२६ सेवकों ने वहां एक कूआं खोदा। तब गिरार से अबीमालख्
और एक उसके मित्रों में से अहज्जा और उसके सेनापति
२७ फीकूल उस पास गये। और इसहाक ने उन्हें कहा तुम
किस लिये मुझ पास आये हो यद्यपि तुम मुझ से बैर रखते हो
२८ और तुम ने मुझे अपने पास से निकाल दिया है। वे बोले
कि हम ने देखा कि यहोवा निःसन्देह तेरे संग है सो हम ने
कहा कि हम और तू आपुस में किरिया खावें और तेरे
२९ साथ बाचा बांधें। जैसा हम ने तुझे नहीं छूआ और तुझ से
भलाई छोड़ कुछ नहीं किया और तुझ को कुशल से भेजा
तू भी हमें न सतावे तू अब यहोवा का आशीर्बादी दास है।
३० और उसने उनका नेउंता किया सो उन्होंने खाया पीया।
३१ और बिहान को तड़के उठे और आपुस में किरिया खाई
और इसहाक ने उन्हें बिदा किया वे उस पास से कुशल से
३२ गये। और उसी दिन यों हुआ कि इसहाक के सेवक आये
और कूएं के बिषय में जो उन्होंने खोदा था उससे बातचीत
३३ किई और कहा कि हम ने जल पाया। सो उसने उसका
नाम शबा रक्खा इस लिये वुह नगर आज लों बैरशबा
३४ कहलाता है। और एसौ जब चालीस बरस का हुआ तब
उसने बीरहत्ती की बेटी यहूदास और ईलूनहत्ती की बेटी
३५ बासमास से बिवाह किया। और वे इसहाक और रबका के
लिये मन के कड़वाहट का कारण हुईं।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब इसहाक् बूढ़ा हुआ और उसकी
आंखें धुन्धली हुईं ऐसा कि वुह देख न सकता था तो उसने
अपने जेठे बेटे एसौ को बुलाया और कहा कि हे मेरे बेटे
२ वुह बोला देखो यहीं हों। तब उसने कहा कि देख मैं बूढ़ा

२ ऊआ और मैं अपने मरने का दिन नहीं जानता। सो अब
तेरी बिनती करताहों कि अपना हथियार और निषंग
और अपना धनुष ले और बन को जा और मेरे लिये मृग
४ मांस ला। और मेरे कारण खादित भोजन जैसा मुझे
रुचि है मेरे आगे ला कि मैं खाऊं और मैं जीसे अपने
५ मरनेके आगे तुझे आशीष देऊं। और जब इसहाक़ अपने
बेटे ऐस से बातें करताथा तब रबक़ा ने सुना और जब ऐस
६ बन को मृगमांस के अहेर को गया कि ले आवे। तब रबक़ा
ने अपने बेटे याक़ूब से कहा कि देख मैंने सुना कि तेरे
७ पिता ने तेरे भाई ऐस को कहा। कि मेरे लिये मृगमांस
मार ला और मेरे लिये खादित भोजन बना कि मैं खाऊं
और अपने मरने से पहिले यहूहाके आगे तुझे आशीष
८ देऊं। सो अब हे मेरे बेटे जैसो मैं तुझे आज्ञा करतीहों
९ तू वैसेही मेरी आज्ञाका पालन कर। अब झुंड में जा
और वहां से बकरी के दो बच्चे मुझ पास ला और मैं तेरे
पिता के लिये खादित भोजन जैसा उसे प्रिय है पकवाओंगी।
१० और तू अपने पिता के आगे लाइयो कि वुह अपने मरने से
११ आगे तुझे आशीष देवे। तब याक़ूब ने अपनी माता रबक़ा से
कहा देख मेरा भाई ऐस रोंआर मनुष्य है और मेरा देह
१२ चिकना है। क्या जाने मेरा पिता मुझे टटोले और मैं उस
पास छली की नाईं ठहरों और आशीष नहीं परंतु
१३ अपने ऊपर स्राप लाऊं। उसकी माता ने उसे कहा कि
तेरा स्राप मुझ पर होवे हे मेरे बेटे तू केवल मेरी बात
१४ मान और मेरे लिये जाके ला। सो वुह गया और
अपनी माता पास लाया और उसकी माता ने जैसा कि
१५ उसके पिता की रुचि थी खादित भोजन बनाया। और
रबक़ा ने ज्येष्ठ पुत्र ऐस का अच्छा पहिरावा जो घरमें उस
पास था लिया और अपने कनिष्ठ पुत्र याक़ूब को पहिनाया।

१६ और बकरी के बच्चों का चमड़ा उसके हाथों और उसके
१७ गले की चिकनाई पर लपेटा। और स्वादित भोजन और
रोटी जो उसने सिद्ध किई थी अपने बेटे याक़ूब के हाथ
१८ दिई। और उसने अपने पिता के पास आके कहा कि हे
१९ मेरे पिता वुह बोला कि हां तू कौन है मेरे बेटे। याक़ूब
अपने पिता से बोला कि मैं तेरा पहिलौंठा एसौ हों जैसा
तू ने मुझे कहा था मैं ने किया उठ बैठिये और मेरे मृगमांस
में से कुछ भोजन कीजिये जिसतें तेरा प्राण मुझे आशीष
२० देवे। तब इसहाक़ ने अपने बेटे से कहा यह क्या है कि तू ने
ऐसा शीघ्र पाया हे मेरे बेटे वुह बोला इस लिये कि यऊहा
२१ तेरा ईश्वर मेरे आगे लाया। तब इसहाक़ ने याक़ूब को
कहा मेरे पास आ कि बेटे मैं तुझे छूओं कि तू मेरा वही
२२ बेटा एसौ है कि नहीं। याक़ूब अपने पिता इसहाक़ के पास
गया और उसने उसे टटोल के कहा कि शब्द तो याक़ूब का
२३ शब्द है पर हाथ एसौ के हाथ हैं। और उसने उसे न
पहिचाना इस लिये कि उसके हाथ उसके भाई एसौ के
हाथों की नाईं रोंआर थे सो उसने उसे आशीष दिया
२४ और कहा। कि तू मेरा वही बेटा एसौ है वुह बोला कि
२५ मैं वही हों। और उसने कहा कि तू मेरे पास ला कि मैं
अपने बेटे के मृगमांस से कुछ खाओं जिसतें जीसे तुझे आशीष
देउं सो वुह पास लाया और उसने खाया और वुह उसके
२६ लिये दाख का रस लाया और उसने पीया। फिर उसके
पिता इसहाक़ ने उसे कहा कि बेटे अब निकट आ और
२७ मुझे चूम। वुह निकट आया और उसे चूमा और उसने
उसके पहिरावा की बास पाई और उसे आशीष दिया
और कहा कि देख मेरे बेटे का गंध उस खेत के गंध की
२८ नाईं है जिस पर यऊहा ने आशीष दिया है। ईश्वर
आकाश की ओस और भूमि की चिकनाइयां और बहुत से

२९ अन्न और दाखरस तुझे देवे। लोग तेरी सेवा करें और
मंडलियां तेरे आगे झुकें तू अपने सब भाइयों का प्रभु हो
और तेरी मा के बेटे तेरे आगे झुकें जो तुझे धिक्कारताहै सो
धिक है और जो तुझे आशीष देताहै सो आशीर्वादी है।
३० और यों हुआ कि जेउंहीं इसहाक् याक़ूब को आशीष दे
चुका और याक़ूब अपने पिता इसहाक् के आगे से बाहर
३१ चला वहीं उसका भाई ऐसू अपनी अहेर से फिरा। उसने
भी स्वादित भोजन बनायाथा और उसे अपने पिता के पास
लाया और अपने पिता से कहा मेरे पिता उठिये और
अपने बेटे का मृगमांस खाइये जिसतें तेरा प्राण मुझे आशीष
३२ देवे। उसके पिता इसहाक् ने उसे पूछा कि तू कौन है वुह
३३ बोला कि मैं तेरा बेटा तेरा पहिलौंठा ऐसू हों। तब
इसहाक् अत्यंत कांपा और बोला सो वुह कौन था और
कहां है जो मृगमांस मुझ पास लेआयाथा और मैं ने सब में
से तेरे आने के आगे खाया और उसे आशीष दिया हां वुह
३४ आशीर्वादी होगा। ऐसू ने अपने पिता से ये बातें सुनतेहुए
बहुत चिल्लाया और फूट फूट कर रोया और अपने पिता
३५ से कहा मुझे भी मुझे हे मेरे पिता आशीष दे। वुह बोला
कि तेरा भाई छल से आया और तेरा आशीष लेगया।
३६ तब उसने कहा क्या उसका नाम याक़ूब ठीक नहीं हुआ
क्योंकि उसने दोहरा के मुझे अड़ंगा मारा उसने मेरा जन्मपद
लेलिया फिर उसने कहा क्या तू ने मेरे लिये कोई आशीष
३७ नहीं रखछोड़ा। तब इसहाक् ने ऐसू को उत्तर दिया और
कहा कि देख मैं ने उसे तेरा प्रभु किया और उसके सब
भाइयों को उसकी सेवकाई में दिया और झुंड और अंगूर
के रस से उसका सहाड़ा किया अब हे मेरे बेटे तेरे लिये मैं
३८ क्या करों। तब ऐसू ने अपने पिता से कहा क्या तुझ पास
एकही आशीष है हे मेरे पिता मुझे भी मुझे आशीष दे हे

३९ मेरे पिता और एस चिल्लाके रोया। तब उसके पिता
इसहाक़ने उत्तर दिया और उसे कहा कि देख भूमि की
चिकनाई और ऊपर से आकाश की ओस में तेरा तंबू होगा।
४० और तू अपने खड्ग से अपनी जीविका करेगा और अपने
भाई की सेवा करेगा और यों होगा कि जब तू राज्य पावेगा
तो उसका जूआ अपने कांधे पर से तोड़कर फेंकदेगा।
४१ सो एस ने उस आशीष के कारण से जो याक़ूब के पिता ने
उसे दिया उसका बैर रक्खा और एस ने अपने मन में कहा
कि मेरे पिता के शोक के दिन आतेहैं तब मैं अपने भाई
४२ याक़ूब को मारडालोंगा। और रबका को उसके जेठे बेटे
एस की बातें कहीगईं तब उसने अपने कनिष्ठ बेटे याक़ूब को
बुलाभेजा और कहा कि देख तेरा भाई एस तेरे बिषय में
४३ अपने को शांति देताहै कि तुझे मारडाले। सो इस लिये हे
मेरे बेटे तू अब मेरा कहा मान उठ और मेरे भाई लाबान
४४ के पास हरान में भाग जा। और थोड़े दिन जब लों कि तेरे
४५ भाई की झुंझलाहट जातारहे। और उसका क्रोध जो तेरे
कारण से है धीमा हो और उसे वुह जो तूने उसे कियाहै
भूलजाय उसके यहां रह तब मैं बुलाओंगी और तुझे वहां
भेजके लेआऊंगी मैं किस लिये एकही दिन तुम दोनों को
४६ खोओं। तब रबका ने इसहाक़ से कहा कि मैं हेस की
बेटियों के कारण अपने जीवन से सकेती में हों सो यदि
याक़ूब हेस की बेटियों में से जैसी उस भूमि की लड़कियां
किसीको बिवाह करे तो मेरे जीवन का क्या फल है।

२८ अठाईसवां पर्ब्ब।

१ और इसहाक़ ने याक़ूब को बुलाया और उसे आशीष दिया
और उसे कहा कि तू किनानी लड़कियों में से पत्नी मत
२ कीजियो। उठ और फदानअराम में अपने नाना बतूएल

के घर जा और वहां से अपने मामू लाबान की लड़कीयों से
३ बिवाह करले। और सर्वसामर्थी ईश्वर तुझे आशीष देवे और
तुझे फलमान करे और तुझे बढ़ावे जिसतें तुझ से लोगों की
४ मंडली बनावे। और इबराहीम का आशीष तुझे और तेरे
संग तेरे बंश को देवे जिसतें वुह भूमि जिस में तू परदेशी है
५ जो ईश्वर ने इबराहीम को दिई अधिकार में लेवे। फिर
इसहाक़ ने याक़ूब को बिदा किया और वुह फदानअराम
में लाबान पास गया जो अरमी बतूवाईल का बेटा और
६ याक़ूब और ऐसौ की माता रबका का भाई था। और ऐसौ ने
जब देखा कि इसहाक़ ने याक़ूब को आशीष दिया और उसे
फदानअराम में भेजा कि जिसतें वहां अपना बिवाह करे
और कि उसने उसे आशीष देके कहा कि तू किनान की
७ लड़कियों में से बिवाह मत कीजियो। और याक़ूब ने अपने
माता पिता की बात मानी और फदानअराम को गया।
८ और ऐसौ ने यह भी देखा कि किनानी लड़कियों से उसका
९ पिता इसहाक़ प्रसन्न न था। तब ऐसौ इस्माईल कने गया और
माहिलाख को जो इस्माईल के बेटे की बेटी और नबायूत की
बहिन थी बिवाह करके अपनी पत्नियों में मिलाया।
१० और याक़ूब बैरसबा से निकल के हरान की ओर गया।
११ और एक स्थान में उतरा और रातभर रहा क्योंकि सूर्य
अस्त होचुकाथा और उसने उस स्थान के पत्थरों को लिया
और अपना उसीसा किया और वहां सोने के लिये लेटगया।
१२ और स्वप्न देखा कि एक सीढ़ी पृथिवी पर रक्खी ऊई और
उसकी टोंक स्वर्ग से लगीथी और क्या देखता है कि ईश्वर के
१३ दूत उस पर से चढ़ते उतरतेथे। और देखो कि यहोवा
उसके ऊपर खड़ा था और यों बोला कि मैं यहोवा तेरे
पिता इबराहीम और इसहाक़ का ईश्वर हों मैं यह भूमि
१४ जिस पर तू लेटा है तुझे और तेरे बंश को देऊंगा। और

तेरा वंश ऐसा होगा जैसी पृथिवी की धूल है और तू पश्चिम
पूर्ब्ब उत्तर दक्षिण में फैलेगा और पृथिवी के सारे घराने
१५ तुझ्से और तेरे वंश से आशीष पावेंगे। और देख मैं तेरे
साथ हों और हर स्थान में जहां कहीं तू जावे तेरी रखवाली
करोंगा और तुझे इस देश में फिर लेआओंगा और जबलों
वुह जो मैंने तुझे कहा है पूरा न करलेउं तुझे न छोडोंगा।
१६ तब याक़ूब नींद से जागा और कहा कि यहोवा निःसंदेह
१७ इस स्थान में है और मैं न जानताथा। तब वुह थरथरा
उठा और बोला कि यह क्याही भयानक स्थान है सो कुछ
और नहीं परंतु ईश्वर का घर है और स्वर्ग का द्वार है।
१८ और याक़ूब तड़के भोर को उठा और उस पत्थर को जिसे
उसने अपना सिरहाना कियाथा खंभा खड़ा किया और
१९ उसके ऊपर तेल ढाला। और उस स्थान का नाम बैतएल
२० रक्खा पर उस्से पहिले उस नगर का नाम लूज था। और
याक़ूब ने अवधि किई और कहा कि यदि ईश्वर मेरे साथ
रहे और इस राह में जो मैं जाताहों मेरा रखवाल हो
और मुझे खाने को रोटी और पहिन्ने को कपड़ा देतारहे।
२१ ऐसा कि मैं अपने पिता के घर कुशल से फिरों तब यहोवा
२२ मेरा ईश्वर होगा। और यह पत्थर जो मैने खंभा सा
खड़ा किया ईश्वर का मंदिर होगा और मैं उस सब में से
जो तू मुझे देगा दसवां भाग अवश्य तुझे देउंगा।

२९ उन्तीसवां पर्ब्ब।

१ फिर याक़ूब ने यात्रा किई और पूरब के लोगों की भूमि में
२ आया। उसने दृष्टि किई और खेत में एक कूआं देखा और
देखा कि कूएं के पास भेड़ों के तीन झुंड बैठेहुएथे इस लिये
कि उस कूएं से झुंडों को पानी पिलातेथे और कूएं के मुंह
३ पर बड़ा पत्थर धरा था। और जब झुंड वहां एकट्ठे

होतेथे तब वे उस पत्थर को कूएं के मुंह पर से ढुलका
देतेथे और भेड़ों को पानी पिला के पत्थर को उसके मुंह
४ पर फिर रखदेतेथे। तब याक़ूब ने उनसे कहा कि भाइयो
५ तुम कहां के हो वे बोले कि हम हरान के हैं। फिर उसने
पूछा कि तुम नाहूर के बेटे लाबान को जानतेहो वे बोले
६ जानतेहैं। उसने पूछा कि वुह अच्छा है वे बोले कि अच्छा है
७ और देख उसकी बेटी राहील भेड़ों को लेके आतीहै। तब वुह
बोला देखो दिन अभी बड़त है और भेड़ों के एकट्ठे करने
का समय नहीं तुम भेड़ों को पानी पिलाके चराई पर ले
८ जाओ। वे बोले हम यों नहीं करसक्ते जबलों सारे झुंड
एकट्ठे न होवें कि उस समय वे पत्थर को कूएं के मुंह पर से
९ ढुलकावें और हम भेड़ों को पानी पिलावें। वुह उनसे यह
कहिरहाथा कि राहील अपने पिता की भेड़ों को लेके आई।
१० कि वुह उनकी रखवाल थी और यों ड़आ कि याक़ूब अपने
मामू लाबान की बेटी राहील को और अपने मामू लाबान
की भेड़ों को देखके पास गया और पत्थर को कूएं के मुंह पर
से ढुलकाया और अपने मामू लाबान की भेड़ों को पानी
११ पिलाया। याक़ूब ने राहील को चूमा और चिल्लाके रोया।
१२ और राहील से याक़ूब ने कहा कि मैं तेरे पिता के कुटुम्ब में हों
और रबका का बेटा हों उसने दौड़ के अपने पिता से कहा।
१३ और यों ड़आ कि लाबान अपने भांजे याक़ूब का समाचार
सुनके उसे मिलने दौड़ा और उसको गले लगाया और चूमा
और अपने घर में लाया और उसने यह समस्त समाचार
१४ लाबान को कहि सुनाया। लाबान ने उसे कहा कि निश्चय
तू मेरी हड्डी और मांस है और वुह एक महीना भर
१५ उसके यहां रहा। तब लाबान ने याक़ूब से कहा क्या इस
लिये कि तू मेरा भाई है सेंत से सेवा करेगा सो मुझे कह
१६ कि तेरी क्या बनी होगी। और लाबान की दो बेटियां थीं

बड़की का नाम लीया और छोटकी का नाम राहील था।
१७ लीया की आंखें चौंधली थीं परंतु राहील सुन्दर और
१८ रूपवती थी। और याक़ूब राहील को प्यार करता था सो
उसने कहा कि तेरी छोटी बेटी राहील के लिये सात बरस
१९ तेरी सेवा करोंगा। लाबान बोला कि उसे तुझ को देना उसे
भला है कि दूसरे पुरुष को दिईजावे सो तू मेरे साथ रहा
२० कर। और याक़ूब ने सात बरस लों राहील के लिये सेवा
किई परंतु उस प्रेम के कारण जो उन दोनों से था थोड़े
२१ दिन की नाईं समझ पड़े। याक़ूब ने लाबान से कहा मेरी
पत्नी मुझे दे क्योंकि मेरे समय बीतगये कि मैं उस पास
२२ जाओं। तब लाबान ने उस स्थान में समस्त लोगों को एकट्ठा
२३ करके जेवनार किया। और सांझ को यों हुआ कि उसने
अपनी बेटी लीया को लेके उसको सौंपदिया और वुह उस
२४ पास गया। और लाबान ने अपनी दासी ज़लफा अपनी
२५ बेटी लीया के साथ दिई कि उसकी दासी होवे। और ऐसा
हुआ कि याक़ूब ने बिहान होके देखा कि लीया थी सो
उसने लाबान को कहा कि यह क्या है जो तू ने मुझे किया
क्या मैं ने तेरी सेवा राहील के लिये नहीं किई फिर तू ने किस
२६ लिये मुझे छल किया। लाबान ने कहा हमारे देश में यह
ब्यवहार नहीं कि छोटकी को बड़की से पहिले ब्याह देवें।
२७ उसका अठवारा पूराकर और हम उसेभी और सात
बरस के परिश्रम की संती जो तू मेरे साथ करेगा तुझी को
२८ देंगे। याक़ूब ने ऐसाही किया और उसका अठवारा पूरा
किया तब उसने अपनी बेटी राहील भी उसे ब्याह दिई।
२९ और लाबान ने अपनी दासी बिलहा अपनी बेटी राहील
३० को दिई कि उसकी दासी होवे। तब याक़ूब राहील के
पास गया और वुह राहील को लीया से अधिक चाहताथा
३१ और सात बरस और उसके साथ सेवा किई। और जब

यहवाह ने देखा कि लीया बिरुद्ध हुई उसने उसका गर्भ
३२ खोला और राहील बांझ रही। लीया गर्भिणी हुई और
बेटा जनी और उसने उसका नाम राबिन रक्खा क्योंकि
उसने कहा कि यहवाह ने मेरे दुःख पर दृष्टि किई सो अब
३३ मेरा पति मुझे प्यार करेगा। और वुह फिर गर्भिणी हुई
और वुह फिर बेटा जनी और बोली इसलिये कि यहवाह
ने सुना कि मुझसे बैर हुई तो उसने मुझे उसेभी दिया सो
३४ उसने उसका नाम शमऊन रक्खा। और फिर उसे गर्भ हुआ
और बेटा जनी और बोली कि इसबार मेरा पति मुझे
चाहेगा क्योंकि मैं उसके लिये तीन बेटे जनी इस लिये
३५ उसका नाम लीवी रक्खागया। और उसे फिर गर्भ हुआ
और बेटा जनी और बोली कि अब मैं यहवाह की स्तुति
करोंगी इस लिये उसका नाम यहूदा रक्खा और जन्ने से
रहगई।

३० तीसवां पर्ब्ब।

१ और जब राहील ने देखा कि उससे याक़ूब का बंश नहीं होता
तो राहील को अपनी बहिन पर डाह आया और याक़ूब
को कहा कि मुझे भी बालक दे नहीं तो मैं मरजाऊंगी।
२ तब राहील पर याक़ूब का क्रोध भड़का और उसने कहा
मैं क्या ईश्वर की संती हों जिसने तुझे गर्भ के फल से अलग
३ रक्खा। वुह बोली कि देख मेरी दासी बिलहा उसके पास
जा और वुह मेरे घुठनों पर जनेगी जिसतें मैं भी उससे
४ बालक पाओं। और उसने अपनी दासी बिलहा को दिया
५ कि उसकी पत्नी बने और याक़ूब उस पास गया। और
६ बिलहा गर्भिणी हुई और याक़ूब के लिये बेटा जनी। तब
राहोल बोली कि ईश्वर ने मेरा न्याय किया और मेरा शब्द
भी सुना और मुझे भी एक पुत्र दिया इसलिये उसने उसका

७ नाम दान रक्खा। और राहील की दासी बिलहा फिर
८ गर्भिणी हुई और याक़ूब के लिये दूसरा बेटा जनी। और
राहील बोली कि मैं ने बड़ी बजनी से अपनी बहीन के संग
बजनी किई और बलवती हुई और उसने उसका नाम
९ नफ़ताली रक्खा। जब लीया ने देखा कि जन्ने से रहगई
उसने अपनी दासी जलफा को लेके याक़ूब को दिया कि
१० उसकी पत्नी बने। सो लीया की दासी जलफा भी याक़ूब के
११ लिये एक बेटा जनी। तब लीया बोली कि लेउ सेना आई
१२ और उसने उसका नाम जाद रक्खा। फिर लीया की लौंडी
१३ जलफा दूसरा बेटा जनी। और लीया बोली कि मैं
भाग्यमती हो लड़कियां मुझे भाग्यमती कहेंगी और उसने
१४ उसका नाम अशीर रक्खा। और राओबीन गोहूं के
लवने के समय में घर से निकला और जंगल में मरदुमगैया
पाई और उसे अपनी माता लीया के पास लाया तब
राहील ने लीया से कहा कि अपने बेटे की मरदुमगया स
१५ मुझे कुछ दे। उसने कहा क्या यह छोटी बात है कि तू ने
मेरे पति को लेलिया और मेरे पुत्र की मरदुमगैया को भी
लिया चाहती है राहील बोली कि वुह आज रात तेरे बेटे की
१६ मरदुमगैया की संती तेरे साथ रहेगा। और जब याक़ूब
सांझ को जंगल से आया लीया उसे आगे से मिलने को गई
और कहा कि तू मेरे पास आ क्योंकि मैं ने निश्चय करके
अपने बेटे की मरदुमगैया देके तुझे भाड़े में लियाहै सो वुह
१७ उस रात उसके साथ रहा। और ईश्वर ने लीया की सुनी
वुह गर्भिणी हुई और याक़ूब के लिये पांचवां बेटा जनी।
१८ और लीया बोली कि ईश्वर ने मेरी बनी मुझे दिई क्योंकि
मैं ने अपने पति को अपनी दासी दिईहै और उसने उसका
१९ नाम यसाख़ार रक्खा। और लीया फिर गर्भिणी हुई और
२० याक़ूब के लिये छठवां बेटा जनी। और बोली कि ईश्वर ने

मुझे अच्छा दान दिया अब मेरा पति मेरे संग रहेगा क्योंकि
मैं उसके लिये छः बेटे जनी और उसने उसका नाम जबूलून
२१ रक्खा। और अंत में वुह बेटी जनी और उसका नाम
२२ दैना रक्खा। और ईश्वर ने राहील को स्मरण
किया और उसका श्रोता हुआ और उसके गर्भ को खोला।
२३ वुह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बोली कि ईश्वर ने
२४ मेरी लज्जा दूर किई। और उसने उसका नाम यूसफ रक्खा
और बोली कि यहुहा मुझे दूसरा बेटा भी देगा।
२५ और जब राहील से यूसफ उत्पन्न हुआ तो यों हुआ
याक़ूब ने लाबान से कहा मुझे बिदा कर कि मैं अपने स्थान
२६ और अपने देश को जाऊं। मेरी स्त्रियां और मेरे लड़के
जिनके लिये मैं ने तेरी सेवा किई मुझे दे और बिदा कर क्योंकि
२७ तू जानता है कि मैं ने तेरे लिये कैसी सेवा किई है। लाबान
ने उसे कहा चाहिये कि मैं तेरी दृष्टि में प्रतिष्ठा पाओं कि
मैं ने परीक्षा करके देखलिया है कि यहुहा ने तेरे कारण से
२८ मुझे आशीष दिया। और फिर कहा अब तू अपनी बनी मुझे
२९ ठहरा ले मैं तुझे दिया करोंगा। उसने उसे कहा तू जानता
है कि मैं ने क्योंकर तेरी सेवा किई है और तेरे पशु क्योंकर
३० मेरे साथ थे। क्योंकि वे मेरे आने से पहिले थोड़े थे और झुंड
के झुंड होगये और जब से मैं आया तब से यहुहा ने तुझे
आशीष दिया अब मैं अपने घर के लियभी कब सहेजोंगा।
३१ वुह बोली कि मैं तुझे क्या देउं याक़ूब बोला कि तू मुझे
कुछ मत दे यदि तू मेरे लिये ऐसा करे तो मैं तेरे झुंड
३२ को फिर चराओंगा और रखवाली करोंगा। कि मैं आज
तेरे सारे झुंड में से चल निकलोंगा और भेड़ों में से सारी
फुटफुटियों और चितकबरियों और भूरियों को और
बकरियों में से फुटफुटियों और चितकबरियों को अलग
३३ करोंगा और मेरी वही बनी होगी। और मेरी सचाई आगे

को मेरे लिये उत्तर देगी जब कि मेरी बनी तेरे आगे आवे तो
बुह जो बकरियों में चितकबरी और फुटफुटिया और भेड़ों
३४ में भूरी भी न हो तो वुह मेरे पास चोरी की होगी। लाबान
बोला मैं चाहताहों कि जैसा तू ने कहा ऐसाही होवे।
३५ उसने उस दिन पट्टेवाले और फुटफुटिया बकरें और सब
चितकबरी और फुटफुटिया बकरियां अर्थात हरएक जिस
में कुछ उजलाई थी और भेड़ों में से भूरी अलग किई और
३६ उन्हें अपने बेटों को सौंप दिया। और उसने अपने याक़ूब के
मध्य में तीन दिन की यात्रा का बीच ठहराया और याक़ूब ने
३७ लाबान के बचेऊए झुंडों को चरायाकिया। और याक़ूब ने
हरे चिनार और बादाम और बारतंग की हरी छड़ियां लेके
उनको गंडेवाल किया ऐसा कि छड़ियों की उजलाई प्रगट
३८ ऊई। और उसने उन छड़ियों को जिन पर गंडे बनायेथे
झुंडों के आगे कठरों और नालियों के बीच जब झुंड पानी
पीने आये खड़ा करदिया कि वे सब पीने पावें तो गर्भिणी
३९ होवें। और झुंड छड़ियों के आगे गर्भिणी ऊईं और वे
४० गंडेवाले और फुटफुटियां और चितकबरे बच्चे जनीं। और
याक़ूब ने भेड़ों के बच्चों को अलग किया और झुंडों के मुंह को
चितकबरों के और भूरों के ओर जो लाबान की झुंड में थे
किया और उसने अपने झुंडों को अलग किया और लाबान
४१ के झुंड में न मिलाया। और यों ऊआ कि जब मोटी मोटी
जानवर न गर्भिणी ऊईं तो याक़ूब ने छड़ियों को नालियों में
४२ उनके आगे रक्खा कि वे उन छड़ियों के आगे गर्भिणी होवें। पर
जब कि दुर्बल भेड़ बकरी आईं उसने उन्हें वहां न रक्खा
सो दुर्बल लाबान की और मोटी याक़ूब की थी सो उस पुरुष
की अत्यंत बढ़ती ऊई और वुह बऊत पशु और दास और
दासियों और ऊंटों और गदहों का स्वामी ऊआ।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

१ और उसने लाबान के बेटों को ये बातें करते सुना कि
याक़ूब ने हमारे पिता का सब कुछ लेलिया और हमारे
२ पिता के धन से यह सब बिभव प्राप्त किया। और याक़ूब ने
लाबान का स्वरूप देखा कि वुह आगे की नाईं उसकी ओर
३ नहीं। और यहूहा ने याक़ूब को कहा कि तू अपने पितरों
और अपने कुटुम्बों की भूमि को फिर जा कि मैं तेरे संग
४ होऊंगा। तब याक़ूब ने राहील और लीया को खेत में
५ जहां उसका झुंड था बुलाभेजा। और उनसे कहा कि मैं
देखता हों कि तुम्हारे पिता का स्वरूप आगे की नाईं मेरी
ओर नहीं है परंतु मेरे पिता का ईश्वर मुझ पर प्रगट हुआ।
६ तुम जानती हो कि मैं ने अपने सारे बल से तुम्हारे पिता की
७ सेवा किई है। और तुम्हारे पिता ने मुझे छल दिया और
दसबार मेरी बनी बदल दिई पर ईश्वर ने उसे न छोड़ा
८ कि मुझे दुख देवे। यदि वुह यों बोला कि फुटफुटियां तेरी
बनी होंगी तो सारे चौपाये फुटफुटिया जने यदि उसने
कहा कि पट्टेवाली तेरी बनी में है तो समस्त चौपाये पट्टेवाल
९ जने। ईश्वर ने यों तुम्हारे पिता से पशु लिये और मुझे
१० दिये। और यों हुआ कि जब पशु गर्भिणी हुए तो मैं ने
स्वप्न में अपनी आंख उठाके देखा कि मेंढे जो भेड़ों पर
चढ़ते थे पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकबरे थे।
११ ईश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझे कहा कि हे याक़ूब मैं बोला कि
१२ यहीं हों। तब उसने कहा कि अब अपनी आंख उठा
और देख कि सारे मेंढे जो भेड़ों पर चढ़े हैं पट्टेवाले और
फुटफुटिये और चितकबरे हैं इस लिये कि जो कुछ लाबान
१३ ने तुझे किया मैं ने देखा। बैतईल का ईश्वर जहां तू ने खंभे
पर तेल डाला और जहां तू ने मुझे बाचा बांधा मैं हों अब
उठ इस भूमि से निकल चल और अपने कुटुम्ब की भूमि पर

१४ फिर जा। तब राहील और लीया ने उत्तर देके उसे कहा
क्या अब लों हमारे पिता के घर में हमारा कुछ भाग अथवा
१५ अधिकार है। क्या हम उसके लेखे पराये नहीं ठहरे क्योंकि
उसने तो हमें बेचडाला और हमारे रुपये भी खा बैठा।
१६ परंतु ईश्वर ने जो धन कि हमारे पिता से लिया और हमे
दिया वही हमारा और हमारे लड़कों का है सो अब जो
१७ कुछ कि ईश्वर ने तुझे कहा है सो कर। तब याक़ूब ने उठके
१८ अपने बेटों और पत्नियों को ऊंटों पर बैठाया। और
अपने सब चौपाए और सामग्री जो उसने पाई थी कमाई
के चौपाए जो उसने फद्दानअरम में पाए थे ले निकला
कि अपने पिता इसहाक् पास किनान की भूमि में जावे।
१९ और लाबान गया था कि अपने भेड़ों का रोम कतरे और
राहील ने कईएक मूर्त्ति जो उसके पिता की थी चुरा
२० लिई थी। और याक़ूब अरमी लाबान से अचानक भागा
२१ यहां लों कि वुह उसे न कहिके भागा। सो वुह अपना सब
कुछ लेके भागा और नदी पार उतरगया और अपना
२२ मुंह पहाड़ की ओर किया। और लाबान को तीसरे दिन
२३ संदेश पहुंचा कि याक़ूब भागा। सो वुह अपने भाइयों को
लेके सात दिन के मार्ग लों उसके पीछे गया और गिलियद
२४ के पहाड़ में उसे जा लिया। परंतु ईश्वर अरमी लाबान कने
स्वप्न में रात को आया और उसे कहा कि चौकस रह तू
२५ याक़ूब को भला बुरा मत कहियो। तब लाबान ने याक़ूब
को आ घेरा और याक़ूब ने अपना तंबू पहाड़ पर खड़ा
किया था और लाबान ने अपने भाइयों के साथ गिलियद
२६ के पहाड़ पर तंबू खड़ा किया। तब लाबान ने याक़ूब से
कहा कि तू ने क्या किया कि तू एकाएक मेरे पास से भागा
और मेरी पुत्रियों को उनकी नाईं जो खड्ग से बंधुए किये
२७ जाते हैं लेचला। तू किस लिये चुपके से भागा और मुझे न

जनाया न मुझे कहा कि मैं तुझे आनंद मंगल से भेरी और
२८ ढोल के साथ बिदा करता। और तू ने न माना कि मैं
अपने बेटों और अपनी बेटियों को चूमों तू ने नासमझी से
२९ यह काम किया। यह मेरे हाथ के बल में है कि तुझे दुःख
देऊं परंतु तेरे पिता के ईश्वर ने कल रात मुझे यों कहा कि
३० चौकस रह तू याक़ूब को भला बुरा मत कहियो। और
अब तुझे तो जानाहै क्योंकि तू अपने पिता के घर का
निपट अभिलाषी है पर तू ने किस लिये मेरे देवतों को
३१ चुरा लिया। याक़ूब ने उत्तर दिया और लाबान को कहा
इस लिये कि मैं डरा और मैं ने कहा कि क्या जाने तू अपनी
३२ पुत्रियां बरबस करके मुझ से छीन ले। जिस किसी के पास तू
अपने देवतों को पावे उसे जीता मत छोड़ और हमारे
भाइयों के आगे जाके ढूंढ़ कि तेरा मेरे साथ क्या क्या है
और अपना लेले क्योंकि याक़ूब न जानताथा कि राहील ने
३३ उन्हें चुरा लियाहै। और लाबान याक़ूब के तंबू में गया
और लीया के तंबू में और दोनो दासियों के तंबू में गया
परंतु न पाया तब वुह लीया के तंबू से बाहर जाके राहील
३४ के तंबू में गया। और राहील मूर्त्तिन को लेकर ऊंट की
सामग्री में रख के उस पर बैठी थी और लाबान ने सारा
३५ तंबू ढूंढ़ा और न पाया। तब उसने अपने पिता को कहा
कि मेरे प्रभु इससे उदास मत हूजियो कि मैं तेरे आगे उठ
नहीं सक्तीहों क्योंकि मुझ पर स्त्रियों की रीत है सो उसने
३६ ढूंढ़ा पर मूरतों को न पाया। और याक़ूब क्रुद्ध हुआ और
लाबान से बिबाद करके उत्तर दिया और लाबान को कहा
कि मेरा क्या पाप और क्या अपराध है कि तू इस रीति से मेरे
३७ पीछे झपटा। तू ने जो मेरी सारी सामग्री ढूंढ़ी तू ने अपने
घर की सामग्री से क्या पाई मेरे भाइयों और अपने भाइयों
३८ के आगे रख कि वे हम दोनों के मध्य में न्याय करें। बीस

बरस जो मैं तेरे साथ था तेरे भेड़ों और तेरी बकरियों का
३९ गाभ न गिरा और मैं ने तेरी झुंड के मेंढ़े नहीं खाये। वुह
जो फाड़ागया मैं तुझ पास न लाया उसकी घटी मैं ने उठाई
वुह जो दिन को अथवा रात को चोरीगया तू ने उसे मुझ से
४० लिया। मेरी यह दशा थी कि दिन को घाम से भस्म हुआ
और रात को पाला से और मेरी आंखों से मेरी नींद
४१ जातीरहीथी। मुझ को तेरे घर में बीस बरस यों बीते कि
मैं ने चौदह बरस तेरी दोनों बेटियों के लिये और छः बरस
तेरे पशु के लिये तेरी सेवा किई और तू ने दस बार मेरा
४२ ठीका बदलडाला। यदि मेरे पिता का ईश्वर और
इबराहीम का ईश्वर और इसहाक़ का भय मेरे साथ न
होता तो तू अब मुझे निःसंदेह छूछे हाथ निकाल देता
ईश्वर ने मेरी बिपत्ति और मेरे हाथों के परिश्रम पर दृष्टि
४३ किई और कल रात को तुझे डांटा। लाबान ने उत्तर
दिया और याकूब से कहा कि बेटियां मेरी बेटियां और
लड़के मेरे लड़के और चौपाए मेरे चौपाए और सब जो तू
देखता है मेरे हैं और आज के दिन अपनी इन बेटियों
अथवा इनके लड़कों से जो वे जनी हैं क्या करसक्ताहों।
४४ सो अब तू आ कि हम आपुस में एक वाचा बांधें और
४५ वही मेरे और तेरे मध्य में साक्षी रहे। तब याक़ूब ने एक
४६ पत्थर लेके खंभासा खड़ा किया। और अपने भाइयों से
कहा कि पत्थर एकट्ठा करो उन्हों ने पत्थर एकट्ठा करके
४७ एक ढेर किया और उन्हों ने उसी ढेर पर खाया। और
लाबान ने उसका नाम साक्षी का ढेर रखा और याक़ूब ने
४८ जलईद नाम रखा। और लाबान बोला कि यह ढेर आज
के दिन मुझ में और तुझ में साक्षी है सो इस लिये उसका
४९ नाम जलईद हुआ। और चौकस का गर्गज इस लिये कि
उसने कहा कि जब हम आपुस से अलग होवें तो यहुवा

५० मेरे तेरे ऊपर चौकस रहेगा। यदि तू मेरी बेटियों को
दुःख देवे अथवा उनसे अधिक स्त्रियां करे देख हमारे साथ
५१ कोई दूसरा नहीं ईश्वर मेरा और तेरा साक्षी है। लाबान
ने याक़ूब से कहा देख यह ढेर और खंभा जो मैं ने आप में
५२ और तुझ में रक्खा है। यही ढेर और खंभा साक्षी है कि
मैं इस ढेर से उधर तेरी ओर तुझे सताने को न जाऊंगा
और तू भी इस ढेर और इस खंभे से इधर मेरी ओर
५३ मुझे सताने को मत आइयो। इबराहीम का ईश्वर और
नाहूर का ईश्वर और उनके पिता का ईश्वर हमारे मध्य में
न्याय करे और याक़ूब ने अपने पिता इसहाक़ के भय की
५४ किरिया खाई। तब याक़ूब ने उस पहाड़ पर बलिदान
चढ़ाया और अपने भाइयों को रोटी खाने को बुलाया और
उन्हों ने रोटी खाई और सारी रात पहाड़ पर रहे।
५५ और भोर को तड़के लाबान उठा और अपने बेटों और
बेटियों को चूमा और उन्हें आशीष दिया और लाबान
बिदा हुआ और अपने घर को फिरा।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ और याक़ूब अपने मार्ग चला गया और ईश्वर के दूत उसे
२ आमिले। और याक़ूब ने उन्हें देख के कहा कि यह ईश्वर की
सेना है और उसने उस स्थान का नाम दो सेना रक्खा।
३ और याक़ूब ने अपने आगे अदूम के देश और शईर की
४ भूमि में अपने भाई ऐसौ पास दूतों को भेजा। और उसने
यह कहके उन्हें आज्ञा किई कि तू मेरे प्रभु ऐसौ को यों
कहियो कि तेरा दास याक़ूब यों कहता है कि मैं ने लाबान
५ कने बास किया और अब लों वहीं रहा। और मैं बैल
और गदहे और झुंड और दास और दासियां रखता हों
और मैं ने अपने प्रभु को कहला भेजा है जिसतें मैं तेरी दृष्टि

६ में अनुग्रह पाओं। दूतों ने याक़ूब के पास फिर आके कहा
कि हम तेरे भाई ऐस पास गये और वुह और उसके
७ साथ चार सै मनुष्य तेरी भेंट को आतेहैं। तब याक़ूब
निपट डरगया और घबरा उठा और उसने अपने साथ
८ के लोगों और भुंडों और ऊंटों के दो जथा किये। और
कहा कि यदि ऐस एक जथा पर आवे और उसे मारे तो
९ दूसरा जथा जो बच रहाहै भागेगा। फिर याक़ूब ने कहा
कि हे मेरे पिता इबराहीम के ईश्वर और मेरे पिता इसहाक़
के ईश्वर वुह यहूहा जिसने मुझे कहा कि अपने देश और
अपने कुनबे में फिर जा और मैं तुझ से अच्छा व्यवहार करोंगा।
१० मैं तो उन सब दया और उन सब सत्यता से जो तू ने अपने
दास के संग किये किसीके योग्य नहीं क्योंकि मैं अपने दंड
से उस अर्दन के पार गया और अब मैं दो जथा हुआ।
११ मैं तेरी बिनती करताहों मुझे मेरे भाई के हाथ से अर्थात
ऐस के हाथ से बचा ले क्योंकि मैं उस्से डरताहों न होवे
कि वुह आके मुझे और लड़कों को माता समेत नष्ट
१२ करे। और तू ने कहाहै कि मैं निश्चय तुझ से भलाई करोंगा
और तेरे बंश को समुद्र के बालू की नाईं करोंगा जो बहुताई
१३ से गिना नहीं जासक्ता। और वुह उस रात वहीं टिक
रहा और जो उसके हाथ आया अपने भाई ऐस के भेंट के
१४ लिये लिया। दो सै बकरियां और बीस बकरे दो सौ भेड़ें
१५ और बीस मेंढे। और तीस दूधवाली ऊंटनियां बच्चा समेत
चालीस गाय और दस बैल बीस गदहियां और दस उनके
१६ बच्चे। और उसने उन्हें अपने सेवकों के हाथ हर जथाको
अलग अलग सौंपा और अपने सेवकों को कहा कि मेरे
आगे पार उतरो और जथा को जथा से अलग रक्खो।
१७ और पहिले को उसने कहा कि जब मेरा भाई ऐस तुझे
मिले और पूछे कि तू किसका है और किधर जाताहै और

१८ ये जो तेरे आगे हैं किसके हैं। तो कहियो कि तेरे सेवक
याक़ूब के हैं यह अपने प्रभु ऐसव के लिये भेंट भेजाहै और
१९ देख वुह आप भी हमारे पीछे है। और वैसा उसने दूसरे
और तीसरे को और उन सबको जो जथा के पीछे जातेथे
यह कहके आज्ञा किई कि जब तुम ऐसव को पाओ तो उस
२० भांति से कहियो। और अधिक यह कहियो कि देख तेरा
सेवक याकूब हमारे पीछे आताहै क्योंकि उसने कहाहै कि
मैं उस भेंट से जो मुझसे आगे जाताहै उससे मिलाप करलेउंगा
तब उसका मुंह देखोंगा क्या जाने वुह मुझे ग्रहण करे।
२१ सो वुह भेंट उसके आगे पार गया और वुह आप उस रात
२२ जथा में रहा। और उसी रात उठा और अपनी दो पत्नियों
और दो सहेलियों और ग्यारह बेटों को लेके याबूक
२३ घाट से पार उतरा। और उनको लेके और उसे जो कुछ
२४ उसका था नदी के पार उतरा। और याक़ूब अकेला
रहगया और वहां पौफटे लों एक जन उससे बजनी करताथा।
२५ और जब उसने देखा कि वुह उस पर बलवान न हुआ तो
उसकी जांघ को भीतर से छूआ तब याक़ूब की जांघ की नस
२६ उसके संग बजनी करने में चढ़गई। तब वुह बोला कि मुझे
जाने दे कि पौफूटतीहै वुह बोला कि मैं तुझे जाने न देउंगा
२७ जबलों तू मुझे आशीष न देवे। तब उसने उसका नाम
२८ पूछा वुह बोला कि याक़ूब। तब उसने कहा कि तेरा नाम
आगे को याकूब न होगा परंतु इसराईल होगा क्योंकि तूने
ईश्वर के और मनुष्य के आगे पराक्रम पाया और बलवान
२९ हुआ। तब याक़ूब ने पूछा और कहा कि मैं तेरी बिनती
करताहों अपना नाम बता वुह बोला कि तू मेरा नाम क्यों
३० पूछता है और उसने उसे वहां आशीष दिया। और याक़ूब
ने उस स्थान का नाम पनीएल रक्खा कि मैं ने ईश्वर को
३१ प्रत्यक्ष देखा और मेरा प्राण बचाहै। और जब वुह पनीएल

से चला तो सूर्य की ज्योति उस पर पड़ी और वुह अपनी
३२ जांघ से लंगड़ाताथा। इसलिये इसराईल के बंश उस नस
को जो जांघ में भीतर है आजलों नहीं खाते क्योंकि उसने
याक़ूब की जांघ की नस को जो भीतर से चढ़ गई थी छूआ था।

३३ तैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और याक़ूब ने आंखें ऊपर उठाईं और देखा कि ऐसौ और
उसके साथ चार सौ मनुष्य आते हैं तब उसने लड़कों क
दो भाग करके लीया और राहील और दो सहेलियों को
२ दिये। और उसने सहेलियों और उनके लड़कों को सब से
आगे रक्खा और लीया और उसके लड़कों को पीछे और
३ राहील और यूसफ को सब के पीछे। और वुह आप उनके
आगे पार उतरा और अपने भाई पास पहुंचते पहुंचते
४ सात बार भूमि पर झुका। और ऐसौ उसे मिलने को दौड़ा
और उसे गले लगाया और उसके गले से लिपटा और
५ उसे चूमा और वे रोये। फिर उसने आंखें उठाईं और
स्त्रियों को और लड़कों को देखा और कहा ये तेरे साथ कौन
हैं वुह बोला लड़के जो ईश्वर ने अपनी कृपा से तेरे सेवक को
६ दिये। तब सहेलियां और उनके लड़के निकट आये और
७ झुकगये। फेर लीया अपने लड़के समेत पास आई और
झुकी अंत को यूसफ और राहील पास आये और झुके।
८ उसने कहा कि इस बड़े जथा से तेरी क्या इच्छा है वुह बोला
९ कि अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाओं। तब ऐसौ बोला
मुझ पास बहुत है भाई मेरे जो तेरा है अपनेही लिये रख।
१० याक़ूब बोला मैं आप की बिनती करताहों यदि मैं ने आपकी
दृष्टि में अनुग्रह पायाहै तो मुझसे मेरा भेंट ग्रहण कीजिये
क्योंकि मैं ने निश्चय यों तेरा मुंह देखा जानों मैं ने ईश्वर का
११ मुंह देखा और तू मुझसे प्रसन्न हुआ। मेरे आशीष को जो

आप के आगे लायागयाहै ग्रहण कीजिये इस लिये कि
ईश्वर ने मुझ पर दया किई है और इस लिये कि मुझ पास
बहुत है सो वुह यहां लों गिड़गिड़िया कि उसने लेलिया।
११ और कहा कि आओ कूच करें और चलें और मैं तेरे आगे
१२ आगे चलोंगा। उसने उसे कहा कि मेरा प्रभु जानता है कि
लड़केबाले कोमल हैं और झुंड और गांय दूध पिलानेवालियां
मेरे साथ हैं और यदि वे दिनभर हांके जायें तो सारे
१४ झुंड मरजायेंगे। सो मेरे प्रभु अपने सेवक से पहिले पार
जाइये और मैं धीरे धीरे जैसा कि पशु आगे चलेंगे और
लड़के सह सकेंगे चलोंगा यहां लों कि सैर को अपने प्रभु
१५ पास आ पहुंचों। तब एस ने कहा कहिये तो मैं कईएक उन
लोगों में से जो अब मेरे साथ हैं तेरे साथ छोड़ जाऊं वुह
बोला क्या काम है मैं अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाओं।
१६ तब एस अपना मार्ग पकड़ के सैर को फिर गया।
१७ और याक़ूब यात्रा करके सकूस को आया वहां अपने लिये
एक घर बनाया और अपने पशु के लिये कई स्थान बनाया
१८ और इसी लिये उस स्थान का नाम सकूस हुआ। और
याक़ूब फदानअराम से बाहर होके शलीम में जो किनान
के देश में जो शकीम का नगर है आया और नगर के बाहर
१९ अपना तंबू खड़ा किया। और उसने कुछ खेत को जहां
उसका तंबू खड़ा था शखाम के पिता अमूर के लड़कों से सौ
२० रुपए पर मोल लिया। और उसने वहां एक बेदी बनाई
और उसका नाम ईश्वर इसराईल का ईश्वर रक्खा।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब।

१ और देना लीया की बेटी जो लीया उसे याक़ूब के लिये जनी
२ थी उस देश की लड़कियों के देखने को निकली। और जब
उस देश के अध्यक्ष हब्बीहमूर के बेटे शखाम ने उसे देखा

तो उसे ले गया और उसके साथ सोआ और उसे अयोग्य
३ कर्म्म किया। और उसका मन याक़ूब की बेटी दैना से
लगा और उसने उस लड़की को प्यार किया और उसे
४ मीठी मीठी बातें किईं। और शखाम ने अपने पिता हमूर
५ से कहा कि उस लड़की से मेरा ब्याह करदे। याक़ूब ने
सुना कि उसने उसकी बेटी को अशुद्ध किया उस समय में
उसके बेटे उसके चौपायों के साथ खेत में थे याक़ूब उनके
६ आने लों चुप रहा। और शखाम का पिता हमूर याक़ूब
७ पास गया कि उसे बातचीत करे। और याक़ूब के बेटे
सुनतेही खेत से आपहुंचे और वे उदास हुए और अति क्रुद्ध
हुए क्योंकि उसने इसराईल का अपमान किया कि याक़ूब
८ की बेटी के साथ अनुचित रीति से मिल बैठा। और हमूर
ने उनके साथ यों बातचीत किई कि मेरे बेटे शखाम का मन
९ तुम्हारी बेटी से अंटका उसके साथ ब्याह दीजिये। हमारे
साथ समधियाना करो अपनी बेटियां हम को देउ और
१० हमारी बेटियां आप लेउ। कि तुम हमारे साथ बास करोगे
और यह भूमि तुम्हारे बश में है उसमें रहो और ब्यापार
११ करो और इसमें अधिकार प्राप्त करो। शखाम ने उसके
पिता और भाइयों से कहा कि तुम्हारी दृष्टि में मुझे अनुग्रह
१२ मिले और तुम जो कुछ मुझे कहोगे मैं देउंगा। तुम मुझसे
अत्यंत भारी दैना और भेंट चाहो और जो कुछ मुझसे
१३ मांगोगे मैं देऊंगा पर बेटी को मेरे साथ ब्याह देउ। तब
याक़ूब के बेटों ने शखाम और उसके पिता हमूर को उस
कारण से कि उसने उनकी बहिन दैना से अयोग्य कर्म्म किया
१४ कपट से उत्तर दिया। और कहा कि हम यह नहीं
करसक्ते कि हम अपनी बहिन उस जनको जो अखतनः है
१५ देवें क्योंकि इसमें हमारी हंसी होगी। परंतु यदि तुम ऐसे
होजाओ जैसे हम हैं तो हम तुम से प्रसन्न होंगे तुम्में हर पुरुष

१६ का खतनः कियाजावे। तब हम अपनी बेटियां तुम्हें देंगे
और तुम्हारी बेटियां लेंगे और हम तुम्में निवास करेंगे
१७ और हम सब एक लोग होंगे। और यदि तुम हमारी सुनके
खतनः न करवाओ ता हम अपनी लड़की लेलेंगे और
१८ चलेजायेंगे। उनकी बातें शखाम और उसके पिता हमूर का
१९ भी प्रसन्न झई। और उसने उस बात के करने में ढील न
किई क्योंकि वुह याकूब की बेटी से बझत प्रसन्न था वुह अपने
२० पिता के सारे घर से अधिक कुलीन था। फिर हमूर
और उसका बेटा शखाम अपने नगर के द्वार पर आये
२१ और उन्होंने अपने नगर के लोगों से यों बातचीत किई। कि
ये लोग हमारे साथ मेल से रहतेहैं सा ये इस भूमि में रहें
आर व्यापार करें कि इस भूमि की पूंजी उनके लिये बस है
सा हम उनकी बेटियें का लेंगे और अपनी बेटियां उनका
२२ देंगे। परंतु केवल इस डौल से वे हमारे साथ निवास और
नाते और संबंध पर प्रसन्न होंगे कि हम्में हर पुरुष का
२३ खतनः जैसा उनका कियागयाहै कियाजावे। क्या उनके पशु
और उनका धन और उनका हरएक चैापाया हमारा न
होगा केवल हम उनसे उस बात के मान लेवें कि वे हमारे
२४ साथ निवास करेंगे। और वे सब जा अपने नगर के द्वार से
आते जातेथे हमूर और उसके बेटे शखाम की बात का सुन
लिया और वे सब पुरुष जा अपने नगर के द्वार से आते
२५ जातेथे उनमें से हर पुरुष ने खतनः करवाया। और तीसरे
दिन जबलों वे पीड़ा में पड़ेथे यों झआ कि याकूब के बेटों में
से दैना के दो भाई शमऊन और लीवी ने अपने खड्ग लिये
साहस से नगर पर आपड़े और सब पुरुषों का मारडाला
२६ और उन्होंने हमूर और उसके बेटे शखाम का खड्ग की धार से
मारडाला और शखाम के घर से दैना का लेके निकल गये।
२७ और याकूब के बेटे उन पास जा मारेगयेथे आये और

नगर को नष्ट किया क्योंकि उन्होंने उनकी बहिन से निर्लज्ज
२८ कर्म्म किया था। उन्होंने उनकी भेड़ बकरियां और उनकी
गाय बैल और उनके गदहे और जो कुछ कि नगर में और
२९ खेत में था लूट लिया। और उनके सब धन और उनके
सब बच्चे और उनकी स्त्रियां लेलिईं और सब जो कुछ कि
३० घर में था लूट के छूछा किया। और याकूब ने शमऊन और
लीवी को कहा कि तुम ने मुझे दुःख दिया कि इस भूमि के
बासियों में से किनानियों और फर्ज़ियों के मध्य में मुझे
घिनैना करदिया और हम थोड़े हैं वे सब मेरे सन्मुख एकट्ठे
होंगे और मुझे मारडालेंगे और मैं और मेरा घर नष्ट
३१ होवेगा। वे बोले कि उसे योग्य था कि हमारी बहिन के
साथ बेश्या की नाईं ब्यवहार करे।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और ईश्वर ने याकूब से कहा कि उठ बैतईल में जा और
वहीं रह और ईश्वर के लिये जो तुझे जब तू अपने भाई ऐस
२ के मुंह से भागाथा दिखाई दिया एक बेदी बना। तब याकूब
ने अपने घराने और अपने सब संगियों को कहा कि
परदेशी देवतन को जो तुम्में हैं निकाल फेंको और शुद्ध
३ होओ और अपने कपड़े बदलो। और आओ हम उठें और
बैतईल को जावें और मैं वहां ईश्वर के लिये जिसने मेरी
सकेती के दिन मेरी प्रार्थना ग्रहण किई और जिस मार्ग में मैं
४ चला वुह मेरे साथ रहताथा बेदी बनाओंगा। और उन्होंने
सारी परदेशी देवतन को जो उनके हाथों में थी और कुंडल
जो उनके कानों में थे याक़ूब को दिये और याक़ूब ने उन्हें बलूत के
५ वृक्ष के तले शिकम के पास गाड़दिया। और यात्रा किई और
उनके आसपास के नगरों पर ईश्वर का भय आपड़ा और
६ उन्होंने याकूब के बेटों का पीछा न किया। सो याक़ूब

और जितने लोग उसके साथ थे किनान की भूमि में लूज़ को
७ जो बैतईल है गये। और उसने वहां बेदी बनाई और उसने
इसलिये कि जब वुह अपने भाई के पास से भागा तो वहां
उसे ईश्वर दिखाई दिया उसका नाम ईलबैतईल रक्खा।
८ और रबका की दाई दबूरा मरगई और बैतईल के निकट
बलूत के वृक्ष तले गाड़ीगई और उसका नाम रोने का खेत
९ रक्खा। और ईश्वर याक़ूब को जब कि वुह फदानअराम से
१० निकला फिर दिखाई दिया और उसे आशीष दिया। और
ईश्वर ने उसे कहा कि तेरा नाम याकूब है तेरा नाम आगे
को याकूब न होगा परंतु तेरा नाम इसराईल होगा सो
११ उसने उसका नाम इसराईल रक्खा। फिर ईश्वर ने उसे
कहा कि मैं ईश्वर सर्व सामर्थी हो तू फलमान हो और बढ़
तुझ से मंडली और मंडली की मंडली और तेरी कटि से
१२ राजा निकलेंगे। और यह भूमि जो मैं ने इबराहीम और
इसहाक़ को दिई है तुझे और तेरे पीछे तेरे बंश को देउंगा।
१३ और ईश्वर उस स्थान में जहां उसने उससे बातें किईं थीं
१४ उस पास से उठगया। याकूब ने उस स्थान में जहां उसने
उससे बातें किईं पत्थर का एक खंभा खड़ा किया और उस
१५ पर पीने की भेंट चढ़ाई और उस पर तेल डाला। और
याक़ूब ने उस स्थान का नाम जहां ईश्वर उससे बोला था
१६ बैतईल रक्खा। और उन्होंने बैतईल से कूच किया और
वहां से अफरात बहुत दूर न था और राहील को पीर
१७ लगी और उस पर बड़ी पीड़ा हुई। उस पीड़ा की दशा में
जनाई दाई ने उसे कहा कि मत डर अब की भी तेरे बेटा
१८ होगा। और यों हुआ कि उसका प्राण जाने पर था यहां
लों कि वुह मरहीगई तो उसने उसका नाम उदास का
पुत्र रक्खा पर उसके पिता ने उसका नाम बनीयामीन रक्खा।
१९ यों राहील मरगई और अफरात के मार्ग में जो बैतलहम है

२० गाड़ीगई। और याकूब ने उसके समाधि पर एक खंभा
खड़ा किया और वही खंभा राहील का समाधि आजलों है।
२१ फिर इसराईल ने कूंच किया और अपना तंबू ईदार के
२२ गर्गज के उसपार खड़ा किया। और जब इसराईल उस
देश में जा रहा तो यों ऊआ कि राबबीन गया और अपने
पिता को सुरैतिन के संग सोआ और इसराईल ने सुना तब
२३ याक़ूब के बारह बेटे थे। लीया के बेटे ये थे राबबीन याकूब
का पहिलौंठा और शमऊन और लीबी और यहूदा और
२४ यसाखार और ज़बूलून। और राहील के बेटे यूसफ और
२५ बनियामीन। और राहील की सहेली बिल्हा के बेटे दान
२६ और नफताली थे। और लीया की सहेली ज़लफा के बेटे
जाद और अशीर याक़ूब के बेटे जो फदानआराम में
२७ उत्पन्न ऊए ये हैं। और याक़ूब अरबा के नगर में जो
हबरून है ममर के बीच है अपने पिता इसहाक़ पास जहां
२८ इबराहीम और इसहाक़ ने निवास कियाथा आया। और
इसहाक़ एक सौ अस्सी बरस का ऊआ। और इसहाक़ ने
प्राण त्यागकिया और बूढ़ा और दिनी होके अपने लोगों में
जा मिला और उसके बेटों ऐस और याक़ूब ने उसे गाड़ा।

३६ छत्तीसवां पर्ब्ब।

१।२ ऐस का जो अदूम है बंशाउरी यह है। ऐस ने किनान
की लड़कियों में से इलूनहत्ती की बेटी आदा को और
अहलिबामा को जो अन्ना की बेटी हवी जबियून की बेटी
३ थी। और बासमास को जो इस्माईल की बेटी और
४ नबायूस की बहिन थी ब्याह लाया। और आदा ऐस से
एक बेटा जो अलीफ़ाज़ है और बासमासे रऊईल उत्पन्न
५ ऊआ। और अहलिबामा से यऊस और यालाम और
कूरह उत्पन्न ऊए ये ऐस के बेटे हैं जो उसके लिये किनान

६ की भूमि में उत्पन्न ऊए। और ऐसा अपनी पत्नियों और
बेटों और बेटियों और अपने घर के हरएक प्राणी और
अपनी गाय बैल को और अपनी सारी संपत्ति को जो उसने
किनान की भूमि में प्राप्त कियेथे लेके अपने भाई याक़ूब के
७ पास से देश को निकल गया। क्योंकि उनका धन ऐसा
बढ़गया था कि उनकी समाई एकट्ठे न होसकी और भूमि
जिसमें वे परदेशी थे उनके पशु के कारण से उनका भार
८ न उठासकी। और ऐसा जो अदूम है शईर के पहाड़
९ में आरहा। सो ऐसा की बंशावली जो सर के पहाड़
१० के मनुष्यों का पिता है ये हैं। ऐस के बेटों के नाम ये हैं
अलीफाज़ ऐस की पत्नी आदा का बेटा रूऐल ऐस की पत्नी
११ बासमास का बेटा। अलीफ़ाज़ के बेटे तीमान और ऊमार
और ज़ीफू और गामाम और कनाज़ और ऐस के बेटे
अलीफाज़ की सहेली तमना थी सो वुह अलीफ़ाज़ के लिये।
१२ अमालिक को जनी सो ऐस की पत्नी आदा के बेटे ये थे।
१३ रऊईल के बेटे ये हैं नाहस और ज़ारह और शम्मा और
१४ मिज़ा जो ऐस की पत्नी बासमास के बेटे थे। और ऐस की
पत्नी के बेटे जो अहलिबामा जो सबऊन के बेटे की बेटी थी
ये हैं यऊश और यऊश और यालाम और क़ूरह जो ऐस
१५ के बेटे हैं। ऐस के बेटों में जो अध्यक्ष ऊए ये हैं ऐस के
पहिलौठे बेटे अलीफाज के बेटे अर्थात अध्यक्ष तीमान
१६ अध्यक्ष ओमार अध्यक्ष ज़ीफू अध्यक्ष कनाज़। अध्यक्ष क़ूरह
अध्यक्ष गाताम अध्यक्ष अमालिक ये वे अध्यक्ष हैं जो
अलीफ़ाज़ से जो अदूम की भूमि में उत्पन्न ऊए और आदा
१७ के संतान थे। और रऊईल के बेटे जो ऐस का बेटा था ये
हैं अध्यक्ष नाहस अध्यक्ष राह अध्यक्ष शम्मा अध्यक्ष मज्जा
ये वे अध्यक्ष हैं जो रूईल से अदूम में उत्पन्न ऊए और ऐस
१८ की पत्नी बासमास के बेटे थे। और ऐस की पत्नी अहलिबामा

के ये बेटे हैं अध्यक्ष यऊस अध्यक्ष यालाम अध्यक्ष कूरह ये
वे अध्यक्ष हैं जो ऐसकी पत्नी अहलिबामा अना की बेटी के
१९ संतान थे। सो ऐसके जो अदूम है ये बेटे हैं ये उनके
२० अध्यक्ष हैं। और सायर के बेटे हूरी जो इस भूमि के
बासी थे ये हैं लूतान और शैाबाल और ज़बिऊन और
२१ अना। और दैशून और ईज़र और दैशान ये सब हूरियों
२२ के अध्यक्ष हैं और अदूम की भूमि में शायर के बेटे हैं। और
लूतान के बेटे हूरी और हीमाम और लूतान की बहिन
२३ का नाम तमन्ना था। और बाल के बेटे ये हैं अलवान और
२४ मानाहत और ईबाल और शीफू और ओनाम। और
सबऊन के बालक ये हैं आजा और अना यह वुह अना है
जिसने बन में जिस समय वुह अपने पिता जबियून के गदहों
२५ को चराताथा खच्चर पाये। और अना के बेटे ये हैं
२६ दैशून अहलिबामा अन्ना की बेटी। और दैशान के संतान
२७ अमदान और अशबान और यथरान और खिरान। और
२८ ईज़र के बेटे ये हैं बलहान और जावान और अकान। और
२९ दैशान के बेटे ऊज़ और अरान। वे अध्यक्ष जो हूरानियों
३० में के थे ये हैं अध्यक्ष लूतान अध्यक्ष शोबाल। और अध्यक्ष
जबिऊन अध्यक्ष अना अध्यक्ष दैशून अध्यक्ष ईसर अध्यक्ष
दैशान ये उन हूरियों के अध्यक्ष हैं जो साईर की भूमि में
३१ थे। और राजा जो अदूम पर राज्य करताथा उससे पहिले
३२ कि इसराईल के बंश का कोई राजा ऊए येही हैं। बिऊर
का बेटा बाला जो अदूम में राज्य करताथा और उसके
३३ सिंहासन के स्थान का नाम दनहाबा था। और बाला
मरगया और ज़ार का बेटा यूबाब जो बसरी था उसकी
३४ संती राज्य किया। फिर यूबाब मरगया और हूशाम जो
३५ तमनी की भूमि का था उसकी संती राज्य किया। और
हूशाम मरगया और बिदाद का बेटा हदद जिसने मुआब के

चौगान में मदयानियों को मारडाला उसके आसन पर बैठा
३६ और उसके सिंहासन के स्थान का नाम अवीत था। और
हदाद मरगया और मसरी का कासमला उसके आसन
३७ पर बैठा। और साऊल जो फुरात की नदी का बासी
३८ उसके आसन पर बैठा। और साऊल मरगया और
अख़बूर का बेटा बाअलहनान उसके आसन पर बैठा।
३९ और अख़बूर का बेटा बाअलहनान मरगया और हद्दाद़
उसके आसन पर बैठा उसके सिंहासन के स्थानका नाम
फाऊ था और उसकी पत्नी का नाम महीतबाईल था जो
४० मतरीद की बेटी मिजाहब की बेटी थी। सो ये ऐसके
अध्यक्षों के नाम हैं और उनके घरानों और स्थानों के नाम
उन्हीं के ओर कियेगये अध्यक्ष तमना अध्यक्ष अलवा अध्यक्ष
४१ यतीत। अध्यक्ष अहलीबामा अध्यक्ष ऐलाब अध्यक्ष पैनून।
४२।४३ अध्यक्ष क़नाज अध्यक्ष तीमान अध्यक्ष मिबसार। अध्यक्ष
मगदील अध्यक्ष आईराम ये अपने अपने भिन्न भिन्न स्थान में
इस भूमि में जो उन्होंने लेलिई अध्यक्ष ये सो अदूमियों के
पिता ऐस का समाचार यह है।

३७ सैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और याक़ूब ने किनान की भूमि में जहां उसका पिता परदेशी
२ था निवास किया। और याक़ूब की बंशाउरी यह है यूसफ
सतरह बरस का बय होके अपने भाइयों के साथ झुंड
चराताथा और यह तरुण अपने पिता की पत्नियों बिलहा
और ज़ल्फा के बेटों के साथ रहताथा और यूसफ उनके
३ पिता के पास उनके बुरे कामों का संदेश लाताथा। और
इसराईल यूसफ को अपने सब लड़कों से अधिक प्यार
करताथा इसलिये कि वुह उसको बुढ़ापे का बेटा था और
४ उसने उसके लिये रंग रंग का पहिरावा बनाया। और

उसके भाइयों ने यह देखके कि उनका पिता उनके सब
भाइयों से उसे अधिक प्यार करताथा उस पर डाह किया
५ और उसे कुशल की बात न करसक्तेथे। फिर यूसफ
ने एक स्वप्न देखा और उसे अपने भाइयों से कहा वे उसे
६ अधिक विरोध किये। और उसने उनसे यूं कहा कि यह
७ स्वप्न जो मैं ने देखाहै सुनिये। कि हम खेत पर गट्ठिया
बांधतेथे और क्या देखताहों कि मेरी गट्ठी उठी और सीधी
खड़ी ऊई और तुम्हारी गट्ठियां आसपास खड़ी ऊईं और
८ मेरी गट्ठी को दंडवत किया। तब उसके भाइयों ने उसे कहा
क्या तू सचमुच हम पर राज्य करेगा अथवा तू हमारा
अध्यक्ष होगा और उन्होंने उसके स्वप्न और उसकी बातों से
९ उसे अधिक डाह किया। फिर उसने दूसरा स्वप्न
देखा और उसे अपने भाइयों से कहा कि देखो मैं ने एक
और स्वप्न देखा और क्या देखताहों कि सूर्य और चंद्रमा और
१० ग्यारह तारों ने मुझे दंडवत किया। और उसने यह अपने
पिता और भाइयों से बर्णन किया उसके पिता ने उसे डांटा
और कहा कि यह क्या स्वप्न है जो तूने देखाहै क्या मैं और तेरी
मा और तेरे भाई सचमुच तेरे आगे भूमि पर झुकके तुझे
११ दंडवत करेंगे। और उसके भाइयों को डाह आया परंतु
१२ उसके पिता ने उस बात को मन में रखछोड़ा। फिर उसके
१३ भाई अपने पिता की झुंड चराने को शकीम को गये। तब
इसराईल ने यूसफ से कहा क्या तेरे भाई शकीम में नहीं
चराते आ मैं तुझे उनके पास भेजों उसने उसे कहा कि मैं यहीं
१४ हों। और उसे कहा कि जाय अपने भाइयों और झुंडों की
कुशलता को देखे और मुझ पास संदेश लावे सो उसने उसे
१५ हबरून की नीचाई से भेजा और वुह शकीम में आया। तब
कोई जन उसे मिला और देखा कि वुह खेत में भरमताहै
१६ तब उस पुरुष ने उसे पूछा कि तू क्या ढूंढताहै। वुह बोला मैं

अपने भाइयों को ढूंढताहों मुझे बतलाइये वे कहां चरातेहैं।
१७ और वुह पुरुष बोला वे यहां से चलेगये कि मैं ने उन्हें यह
कहते सुना कि आओ दोथान को जावें यूसफ अपने भाइयों
१८ के पीछे चला और उन्हें दोथान में पाया। और ज्योंहीं
उन्होंने उसे दूरसे देखा तो उस्से पहिले कि वुह निकट पहुंचे
१९ उसके मारडालने को परामर्श किया। और एक ने दूसरे से
२० कहा देखो यह स्वप्नदर्शी आताहै। आओ अब हम इसे
मारडालें और किसी कूएं में डालदेवें और कहें कि कोई
बन्यपशु ने उसे भक्ष किया और देखेंगे कि उसके स्वप्नों का
२१ अंत क्या होगा। तब राओबीन ने सुन के उसे उनके हाथों से
बचाया और बोला कि चाहिये कि हम उसे मार न डालें।
२२ और राओबीन ने उनसे कहा कि लोहू मत बहाओ परंतु
उसे उस कूएं में जो बनमें है डाल देउ और उस पर हाथ
न डालो कि वुह उसे उनके हाथों से बचा के उसको पिता
२३ पास फिर पहुंचावे। और यों हुआ कि जब यूसफ अपने
भाइयों पास आया तो उन्होंने उसका रंग रंग का पहिरावा
२४ जो वुह पहिने था उतार के उसे नंगा किया। और उसे लेके
कूएं में डालदिया वुह कूआं अंधा था उसमें कुछ पानी
२५ नथा। तब वे रोटी खाने बैठे और आंख उठाई और देखा
कि इस्माईलियों का एक जथा गिलियद से मिसर को
जवैया सुगंध द्रव्य और चिकनाई और बासान और मुर
२६ ऊंटों पर लादेहुए आई। और यहूदा ने अपने भइयोंसे
कहा कि यदि हम अपने भाई को मारडालें और उसका
२७ लोहू छिपावें तो क्या लाभ होगा। आओ उसे इस्माईलियों
के हाथ बेचें और उस पर अपने हाथ न डालें कि वुह
हमारा भाई और हमारा मांस है और उसके भाइयों ने
२८ मान लिया। और उस समय वे मदयानी ब्यापारी उधर
से जातेथे सो उन्होंने यूसफ को कूएं से बाहर निकालके

इस्माईलियों के हाथ बीस रुपए को बेचा वे यूसफ को
२९ मिसर में लाये। तब राऊबीन कूएं पर फिर आया
और देखके कि यूसफ उसमें न था उसने अपने कपड़े फाड़े।
३० और अपने भाइयों के पास फिर आया और कहा कि
३१ लड़का तो नहीं अब मैं कहां जाऊं। फिर उन्होंने यूसफ
का पहिरावा लिया और एक बकरी का बच्चा मारा और
३२ उसे उसके लोहू में चुभोड़ा। और उन्होंने उस रंगरंग
पहिरावे को भेजा और अपने पिता के पास ले आये और
कहा कि हम ने इसे पाया और आप इसे पहिचानिये कि
३३ यह आप के बेटे का पहिरावा है कि नहीं। और उसने
उसे पहिचाना और कहा कि यह तो मेरे बेटे का पहिरावा
है और कोई बड़ा फाड़नेवाला उसे खागया यूसफ निःसन्देह
३४ फाड़ागया। तब याकूब ने अपने कपड़े फाड़े और टाट
अपने कूले पर डाला और बहुत दिनलों अपने बेटे के
३५ लिये शोक किया। उसके सब बेटे बेटियां उसे शांति देने
उठीं पर वुह शांत न हुआ और बोला कि मैं अपने बेटे
पर रोताहुआ समाधि में उतरोंगा सो उसका पिता उसके
३६ लिये रोयाकिया। और मदयानियों ने उसे मिसर में
फूतिफार के हाथ बेंचा जो फरऊन का एक प्रधान और
सेना का पति था।

३८ अठतीसवां पर्व्व।

१ और उस समय में यों हुआ कि यहूदा अपने भाइयों से
अलग होकर हैरा नाम एक अदल्लमी के पास गया।
२ यहूदा ने वहां एक किनानी जिसका नाम शूअ था उसकी
बेटी को देखा उसने उसे लिया और उसके साथ संगम
३ किया। वुह पेटसे हुई और एक बेटा जनी उसने उसका
४ नाम ईर रक्खा। और उसे फिर पेट रहा और बेटाही

५ जनी उसने उसका नाम ओनान रक्खा। और वुह फिर
गर्भिणी ऊई और बेटा जनी उसका नाम शैला रक्खा और
६ जब वुह उसे जनी तो यहूदा कुजैब में था। और यहूदा
अपने पहिलौठे ईर के लिये एक स्त्री व्याहलाया उसका
७ नाम तामर था। और यहूदा का पहिलौठा ईर यहोवा की
८ दृष्टि में अधम था सो यहोवा ने उसे मारडाला। तब
यहूदा ने ओनान को कहा कि अपने भाई की पत्नी के पास
जा और व्याह कर और अपने भाई के लिये वंश चढ़ा।
९ और ओनान ने जाना कि यह वंश मेरा न कहावेगा और
यों ऊआ कि जब वुह अपने भाई की पत्नी पास जाताथा
तो बीर्य को भूमि पर गिरादेताथा तो न होवे कि उसका
१० भाई उस्से वंश पावे। और उसके उस कार्य से ईश्वर क्रुद्ध
११ ऊआ इस लिये उसने उसेभी नाश किया। तब यहूदा ने
अपनी पतोह तामार को कहा कि अपने पिता के घर में
रांड बैठी रह जबलों कि मेरा बेटा शैला बड़ा हो क्योंकि
उसने कहा न होवे कि वुह भी अपने भाइयों की नाईं मरजावे
१२ सो तामार अपने पिता के घर जारही। और बऊत
दिन बीते कि शुआह की बेटी यहूदा की पत्नी मरगई और
यहूदा उसके शोक को भूला तब वुह और उसका मित्र
अजलमीहीरा अपनी भेड़ों के रोम कतरने को तमनास को
१३ गये। और तामार से यह कहा गया कि देख तेरा ससुर
१४ तमनास को जाताहै कि अपनी भेड़ों के रोम कतरे। उसने
रंडसाले के कपड़ों को उतार फेंका और घूंघट ओढ़ा और
अपने को पलटा और तमनास के मार्ग में एक खुलेऊए
स्थान में बैठी क्योंकि उसने सोचा कि शैला बड़ा ऊआ और
१५ मुझे उसकी पत्नी न करदिया। जब यहूदा ने उसे देखा तो
जाना कि कोई बेश्या है इस लिये कि वुह अपना मुंह छिपाये
१६ ऊर थी। और मार्ग से उसकी ओर फिरा और उसे कहा

कि चलिये और मुझे अपने साथ संगम करने दीजिये और
न जाना कि वुह उसकी पतोह थी वुह बोली कि तू जो मेरे
१७ साथ संगम करेगा मुझे क्या देगा। वुह बोला मैं झुंड में से
बकरी का एक बच्चा भेजोंगा उसने कहा कि तू मुझे जबलों कि
१८ उसे भेजे कुछ बंधक दे। वुह बोला क्या गिरौं तुझे देउं
वुह बोली अपनी छाप और अपने बिजायठ और लाठी जो
तेरे हाथ में है उसने दिया और उसके साथ संगम किया
१९ वुह उससे गर्भिणी हुई। फिर वुह उठी और चली गई और
घूंघट उतार फेंका और रंडसाले का जोड़ा पहिन लिया।
२० और यहूदा ने अपने मित्र अदूल्ली के हाथ बकरी का बच्चा
भेजा कि उस स्त्री के हाथ से अपना बंधक फेर लेवे परंतु
२१ उसने उसको न पाया। तब उसने वहां के लोगों से पूछा कि
वुह वेश्या जो मार्ग में बैठी थी कहां है वे बोले कि यहां वेश्या
२२ कधी न थी। तब वुह यहूदा के पास फिर आया और कहा
मैं उसे नहीं पाता और वहां के लोग भी कहते हैं कि वेश्या
२३ वहां नहीं थी। यहूदा बोला कि अब वही लेवे न हो कि
हम लज्जित होवें देख कि मैं ने बकरी का बच्चा भेजा और
२४ तू ने उसे न पाया। और यूं हुआ कि तीन महीने के
पीछे यहूदा से कहागया कि तेरी पतोह तमार ने ब्यभिचार
किया और देख कि उसे छिनाले का गर्भ भी है यहूदा बोला
२५ कि उसे बाहर लाओ और जलादेउ। जब वुह निकालीगई
उसने अपने ससुर को कहलाभेजा कि मुझे उस जनका पेट
है जिसकी ये बस्तें हैं और कहा बिचार कीजिये यह छाप
२६ और बिजायठ और लट्ठी किसकी है। तब यहूदा ने
मानलिया और कहा वुह मुझसे अधिक सच्ची है इस लिये
कि मैं ने उसे अपने बेटे शैला को न दिया पर वुह आगे को
२७ उसके संग न सोया। और उसके जन्ने के समय में यूं
२८ हुआ कि उसके पेट में दो बच्चे थे। और जब वुह जन्ने लगी तो

एक का हाथ निकला और जनाई दाई ने पकड़ के उसके
हाथों में तागा बांध के कहा कि यह पहिले प्रगट हुआ।
२९ और यूं हुआ कि उसने अपना हाथ फिर खींच लिया और
देखो कि हूहीं उसका भाई निकल पड़ा तब वुह बोली कि
तूने क्योंकर जीता यह जीतना तुझी पर आवे इस लिये
३० उसका नाम फारस हुआ। उसके पीछे उसका भाई जिसके
हाथ में तागा बंधा था उत्पन्न हुआ और उसका नाम
ज़राह रक्खा।

३९ उन्तालीसवां पर्व।

१ और यूसफ को मिसर में लाये और फूतीफार मिसरी ने
जो फरऊन का प्रधान और राजा का सेनापति था उसको
इस्माईलियों के हाथ से जो उसे वहां लायेथे मोल लिया।
२ परंतु यहूहा यूसफ के साथ था और वुह भाग्यमान हुआ सो
३ वुह अपने मिसरी स्वामी के घर में रहा। और उसके स्वामी
ने यह देखा कि यहूहा उसके साथ है और यह कि यहूहा ने
४ उसके सारे कार्यों में उसे भाग्यमान किया। ऐसा कि यूसफ
ने उसकी दृष्टि में अनुग्रह पाया और उसने उसकी सेवा
किई और उसने उसे अपने घर पर प्रधान किया और
सब जो कुछ कि उसका था उसके हाथों में करदिया।
५ और यों हुआ कि जबसे उसने उसे अपने घर पर और
अपनी सब वस्तुन पर प्रधान किया यहूहा ने उस मिसरी
के घर में यूसफ के कारण से बढ़ती किई और उसकी
सारी वस्तुन में जो घर में और खेत में थीं यहूहा की ओर से
६ बढ़ती हुई। और उसने अपना सब कुछ यूसफ के हाथों
में करदिया और उसने रोटी से अधिक जिसे खालेताथा
किसी वस्तु से काम न रक्खा और यूसफ रूपमान और
७ प्रिय दर्शन था। और उसके पीछे यों हुआ कि उसके

स्वामी की पत्नी की आंख यूसफ से लगी और वुह बोली कि
८ मेरे साथ सो। परंतु उसने न माना और अपने स्वामी की
पत्नी से कहा देख मेरा स्वामी अपनी रोटी के अधिक जिसे
खालेताहै किसी वस्तु को नहीं जानता और उसने अपना
९ सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया। इस घर में मुझसे
बड़ा कोई नहीं और उसने तुझ को छोड़ कोई वस्तु मेरे
हाथ से बाहर नहीं रक्खी और यह इस लिये है कि तू
उसकी पत्नी है भला फिर मैं ऐसी बड़ी बुराई कैसे करों
१० और ईश्वर का अपराधी होओं। सो वुह बारंबार
यूसफ को प्रतिदिन कहतीरही परंतु उसने उसकी न सुनी
११ कि उसके साथ सोवे अथवा उसके साथ रहे। और यों
ऊआ कि एक दिन वुह अपने कार्य के लिये घर के भीतर
१२ गया और घर के लोगों में से वहां कोई न था। तब उसने
उसका पहिरावा पकड़ के कहा कि मेरे साथ सो वुह अपना
पहिरावा उसके हाथ में छोड़कर भागा और बाहर निकल
१३ गया। अब जो उसने देखा कि उसने अपना पहिरावा मेरे
१४ हाथ में छोड़गया और भाग निकला। तो उसने अपने
घर के लोगों को बुलाया और कहा कि देखो वुह एक इबरानी
को हमारे घर में लाया कि वुह हम से ठट्ठा करे वुह भीतर
१५ घुस आया कि मेरे साथ सोवे और मैं चिल्लाउठी। जब
उसने देखा कि मैं ने बड़ा शब्द किया और चिल्लाई तो
अपना पहिरावा मेरे हाथ में छोड़ भागा और बाहर निकल
१६ गया। सो उसने उसका पहिरावा अपने पास रक्खा जब
१७ लों कि उसका स्वामी घर में आया। तब उसने ऐसीही बातें
उस्से कहीं कि यह इबरी दास जो तू ने हम पास लारक्खा
१८ घुस आया कि मुझसे ठट्ठा करे। और जब मैं ने बड़ा शब्द
किया और चिल्लाउठी तो वुह अपना पहिरावा मेरे पास
१९ छोड़कर बाहर निकल भागा। जब उसके स्वामी ने ये बातें

सुनी जो उसकी पत्नी ने कहीं कि मेरे दास ने मुझसे यों
२० किया तो उसका क्रोध भड़का। और यूसफ के स्वामी ने
उसको पकड़ा और उसको एक स्थान में जहां राजा के बंधुए
बंद थे बंधन में डाला वुह वहां बंदीगृह में रहाकरताथा।
२१ परंतु यहोवा यूसफ के साथ उसने उस पर दया किई
२२ और बंदीगृह के प्रधान को उस पर दयाल किया। और
बंदीगृह के प्रधान ने सब बंधुओं को जो बंदीगृह में थे यूसफ
के हाथ में सौंपा और जो काम वहां कियाजाताथा उसका
२३ प्रधान वही था। और बंदीगृह का प्रधान सब कामों से जो
उसके हाथ में थे निश्चिंत था इसलिये कि यहोवा उसके
साथ था और यहोवा ने उसे उन कार्यों में जो उसने किये
भाग्यमान किया।

४० चालीसवां पर्ब्ब।

१ इन बातों के पीछे यूं हुआ कि मिसर के राजा का पिलावनिहार
ने और रोटी करनिहार ने अपने प्रभु मिसर के राजा का
२ अपराध किया। और फरऊन अपने दो प्रधानों पर जिनमें
एक पिलावनिहारों और दूसरा रोटी करनिहारों का
३ प्रधान था क्रुद्ध हुआ। और उसने उनकी चौकसी के लिये
बंदीगृह के प्रधान के घर में जहां यूसफ बंद था बंदीगृह में
४ डाला। बंदीगृह के प्रधान ने उन्हें यूसफ के पास सौंप दिया
उसने उनकी सेवा किई और कितने दिन लों बंद रहे।
५ और हरएक ने उन दोनों में से अर्थात मिसर के राजा के
पिलावनिहार और रोटी करनिहार ने जो बंदीगृह में बंद थे
६ एकही रात एक एक स्वप्न अपने अर्थ के समान देखा। और
बिहान को यूसफ उन पास भीतर गया और उन पर दृष्टि
७ किई और उन्हें उदास देखा। उसने फरऊन के प्रधानों से
जो उसके साथ उसके प्रभु के घर में चौकसी के लिये बंद थे

८ पूछा कि आज तुम किस लिये उदास देखपड़ते हो। वे बोले
हम ने स्वप्न देखा है जिसका अर्थकारक कोई नहीं यूसफ
ने उन्हें कहा क्या अर्थ करना ईश्वर का नहीं मुझे कहो।
९ तब पिलानेवालों के प्रधान ने अपना स्वप्न यूसफ को कहि
सुनाया और उसे कहा देख मेरे स्वप्न में एक लता मेरे आगे
१० थी। उस लता में तीन डालियां थीं उनमें कलियां निकलीं
और उसमें फूल आया और उसके सब गुच्छों में पक्के दाख
११ निकले। और फरऊन का कटोरा मेरे हाथ में था मैं ने
उन दाखों को लेके फरऊन के कटोरे में निचोड़ा और वुह
१२ कटोरा मैं ने फरऊन के हाथ में दिया। तब यूसफ बोला
१३ इसका यह अर्थ है कि ये तीन डालियां तीन दिन हैं। और
फरऊन अब से तीन दीन में तेरा बिचार करेगा और तुझे
तेरी सेवा फिर देगा और तू आगे की नाईं जब तू फरऊन
का पिलानेवाला था उसके हाथ में फिर कटोरा देगा।
१४ परंतु जब तेरा भला होये तो मुझे चेत कीजियो और मुझ
पर दयाल ऊजियो और फरऊन से मेरी चर्चा करियो और
१५ मुझे इस घर से छुड़वाइयो। क्योंकि निश्चय इबरानियों के
देश से मुझे चुरा लाये और यहां भी मैं ने ऐसा काम नहीं
१६ किया कि वे मुझे इस बंदीगृह में रक्खें। जब रोटी करनेवालों
के प्रधान ने देखा कि अच्छा अर्थ ऊआ तो यूसफ से कहा कि
मैं भी स्वप्न में था और देख कि मेरे सिर पर तीन श्वेत
१७ टोकरियां थीं। और ऊपर की टोकरी में फरऊन के लिये
भांति भांति का पका ऊआ मांस था और पक्षी मेरे सिर
१८ पर उस टोकरी में से खाते थे। यूसफ ने उत्तर दिया और
कहा उसका अर्थ यह है कि ये तीन टोकरियां तीन दिन
१९ हैं। फरऊन अब से तीन दिन में तेरा सिर तेरे देह से
अलग करेगा और एक पेड़ पर तुझे टांग देगा और पक्षी
२० तेरा मांस नोच नोच खायेंगे। और तीसरे दिन जो

फरऊन को जन्मगांठ का दिन था तो यूं ऊआ कि उसने
अपने सब सेवकों का नेउंता किया और उसने पिलानेवालों
के प्रधान और रोटी करनेवालों के प्रधान का विचार किया।
२१ और उसने पिलानेवाले के प्रधान को उसकी सेवा पर फिर
२२ रक्खा उसने फरऊन के हाथ में कटोरा दिया। परंतु उसने
रोटी करनेवालों के प्रधान को फांसी दिई जैसा यूसफ ने
२३ उसे अर्थ कियाथा। तथापि पिलानेवालों के प्रधान ने
यूसफ को चेत न किया और उसे भूलगया।

४१ एकतालीसवां पर्ब्ब।

१ फिर फरऊन ने दूसरे बरस के अंत्य के दिनों में स्वप्न देखा
२ कि साथ नदी के तीर पर खड़ाहै। और क्या देखताहै कि
नदी से सात सुंदर और मोटी गायें निकलीं और चराव
३ पर चरने लगीं। और क्या देखताहै कि उनके पीछे और
सात गायें कुरूप और डांगर नदी से निकलीं और नदी
४ के घाट पर उन सात गायों के पास खड़ी ऊईं। और
उन कुरूप और डांगर गायों ने उन सुंदर और मोटी सात
५ गायों को खालिया तब फरऊन चउंका। और सो गया और
दूहरा के स्वप्न देखा कि अन्न से भरी ऊईं और अच्छी सात
६ बालें एक डांठी में प्रगट ऊईं। और क्या देखताहै कि उनके
पीछे और सातबालें छितरी और पूरबी पवन से मुरझाई
७ ऊईं प्रगट ऊईं। और वे छितरी सात बालें उन अच्छी फली
ऊईं सात बालों को निंगलगईं और फरऊन जागा और
८ देखा कि स्वप्न है। और यूं ऊआ कि बिहान को उसका
जीव घबराया तब उसने मिसर के सारे टोनहों और
बुद्धिमानों को बुला भेजा और अपना स्वप्न उनसे कहा परंतु
९ उनमें से कोई फरऊन के स्वप्न का अर्थ न करसका। उस
समय में पिलानेवालों के प्रधान ने फरऊन से कहा कि मेरा

१० अपराध आज मुझे चेत आताहै। कि फरऊन अपने दास
पर क्रुद्ध था और मुझे और रोटी करनेवालों के प्रधान
११ को बंदीगृह के प्रधान के घरमें बंद कियाथा। और हम्में
हरएक ने एकही रात एक एक स्वप्न अपने स्वप्नके अर्थके समान
१२ देखा। और एक इब्रानी तरुण बंदीगृह के प्रधान का सेवक
हमारे साथ था हमने उसे कहा उसने हमारे स्वप्नका अर्थ
किया और हरएक के स्वप्न का उसके समान अर्थ किया।
१३ और जैसा उसने अर्थ किया वैसाही हुआ मुझे अपनी सेवा
१४ पर स्थिर किया और उसे फांसी दिई। तब फ़रऊन ने
यूसफ़ को बुलवाया वे उसे बंदीगृह से शीघ्र ले आये और
उसने सिर मुंड़ाया और कपड़े बदलके फ़रऊन के आगे
१५ आया। फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा मैं ने स्वप्न देखा जिसका
अर्थ कोई नहीं करसक्ता और मैं ने सुनाहै कि तू स्वप्न को
१६ सुन के अर्थ कर सक्ताहै। यूसफ़ ने उत्तर में फ़रऊन से कहा
कि मेरा क्या सामर्थ्य ईश्वरही फ़रऊन को कुशल का उत्तर
१७ देगा। तब फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा कि मैं ने स्वप्न में देखा कि
१८ मैं नदी के तीर पर खड़ाहों। और क्या देखताहों कि मोटी
और सुंदर सात गायें नदी से नीकलीं और चराव पर
१९ चरने लगीं। आर क्या देखताहों कि उनके पीछे अत्यंत
कुरूप और बुरी और डांगर और सात गायें निकलीं ऐसी
२० बुरी कि मैं ने मिसर की सारी भूमि में कभी न देखी। और
वे डांगर और कुरूप गायें अगिली मोटी सात गायों को
२१ निंगलगईं। जब वे उन्हें खागईं तब यह समुझ न पड़ा कि
वे उनके पेट में गईं और वे वैसीही कुरूप थीं जैसी पहिले
२२ थीं तब मैं चउंका। और फिर स्वप्न में देखा कि अच्छी घनी
२३ सात बालें एक नाल पर निकलीं। और क्या देखताहों कि
और सात बालें सूखी हुईं और पूरबी पवन से मुरझानी
२४ उनके पीछेउगीं। और उन सूखी सात बालों ने उन अच्छी

सात बालों को निगल लिया मैं ने यह टोनहों से कहा परंतु
२५ अर्थ न कर सके। तब यूसफ़ ने फ़रऊन से कहा कि फ़रऊन
का स्वप्न एकही है ईश्वर ने जो कुछ कि आप किया चाहता है
२६ फ़रऊन को दिखलाया। वे सात अच्छी गायें सात बरस हैं
और वे अच्छी सात बालें सात बरस हैं स्वप्न एकही है।
२७ और वे डांगर और कुरूप सात गायें जो उनके पीछे निकलीं
सात बरस हैं और वे सात छूछी बालें जो पुरबी पवन से
२८ मुरझाई ऊई हैं सो काल के सात बरस हैं। यह वही बात है
जो मैं ने फ़रऊन से कही ईश्वर जो कुछ किया चाहता है
२९ फ़रऊन को दिखाया। देख कि सात बरस लों मिसर की
३० सारी भूमि में बड़ी सस्ती होगी। और उनके पीछे सात
बरस का काल होगा और मिसर की भूमि की सारी भरपूरी
३१ नष्ट होजायगी और यह काल भूमि को नष्ट करेगा। और
वुह अधिकाई देश में आवनिहार काल के कारण से ठीक
३२ समुझ पड़ेगी क्योंकि बड़ा काल होगा। और फ़रऊन ने जो
निश्चय स्वप्न देखा सो इस लिये है कि यह बस्तु ईश्वर से
३३ ठहराई है कि और ईश्वर शीघ्र उसे करेगा। इस लिये
फ़रऊन को चाहिये कि एक चतुर बुद्धिमान मनुष्य ढूंढे और
३४ उसे मिसर की भूमि पर प्रधान करे। और फ़रऊन उसे
आज्ञा देवे कि वुह इस भूमि पर उगहनेवालों को ठहरावे
और अधिकाई के सात बरस लों मिसर की भूमि में पांचवां
३५ भाग लिया करे। और वे उन अच्छे बरसों के जो आते हैं
सब खाने की बस्तें एकट्ठे करें और अन्न फ़रऊन की आज्ञा
३६ में रक्खें सब खानेकी बस्तुन को नगरों में जतन से रक्खें। और
वही खाने की बस्तु काल के सात बरस के लिये जो मिसर की
भूमि में पड़ेगा एकट्ठी होगी जिसतें यह देश काल के कारण
३७ से नष्ट न हो। यह बात फ़रऊन की दृष्टि में और उसके
३८ सेवकों की दृष्टि में भली समुझ पड़ी। तब फ़रऊन ने अपने

सेवकों को कहा क्या हम इस मनुष्य के तुल्य जिसमें ईश्वर
३९ का आत्मा है पासक्ते हैं। और फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा
जैसा कि ईश्वर ने तुझे इन सब में दृष्टि दिई है सो कोई
४० तेरे तुल्य बुद्धिमान और चतुर नहीं है। तू मेरे घर का
प्रधान हो और मेरी समस्त प्रजा तेरी आज्ञा में रहेंगी
४१ केवल सिंहासन के बैठने में मैं तुझ से श्रेष्ठ रहोंगा। फिर
फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा कि देख मैं ने तुझे मिसर की
४२ समस्त भूमि पर प्रभुता दिई। और फ़रऊन ने अपनी अंगूठी
को अपने हाथ से निकाल के यूसफ़ के हाथ में पहिना दिई
और उसे महीन कपड़े का पहिरावा पहिनाया और सोने की
४३ सिकरी उसके गले में डाली। और उसने उसे अपने दूसरे
रथ में चढ़ाया तब उसके आगे डौंडी पीटी गई कि सब भय
से रहो और उसने उसे मिसर के समस्त राज्य पर अध्यक्ष
४४ किया। और फ़रऊन ने यूसफ़ को कहा मैं फ़रऊन हों और
बिना तेरे मिसर की सारी भूमि में कोई मनुष्य अपना हाथ
४५ अथवा पांव न उठावेगा। और फ़रऊन ने यूसफ़ का नाम
भेद प्रकाशक रक्खा और उसने उनके नगर के याजक
फूतीफारह की बेटी असनास को उसे ब्याह दिया और
४६ यूसफ़ मिसर की भूमि में सर्व्वत्र फिरा। और यूसफ़ जब
मिसर के राजा फ़रऊन के आगे से निकल कर मिसर की
४७ सारी भूमि में फिरा। और सस्ती के सात बरस में भूमि से
४८ मुट्ठी भर भर उत्पन्न ऊआ। तब उसने उन सात बरसों के
भोजन मिसर की भूमि में एकट्ठे किये और उसने समस्त
भोजन को बस्तियों में ढेर किया और उन खेतों की जो हर
बस्ती के आसपास थे खाने की बस्तें उसी बस्ती में रक्खीं।
४९ और यूसफ़ ने अन्न बऊत अधिकाई से एकट्ठे किया जैसे
समुद्र का बालू ऐसा कि उसने गिनती छोड़ दिया क्योंकि
५० वुह अगणित था। और यूसफ़ के दो बेटे उस नगर के अध्यक्ष

फूतीफारह की बेटी असनास के पेट से काल के बरस से
५१ पहिले उत्पन्न ऊए। सो यूसफ़ने पहिले का नाम मनश्शा
रक्खा इस लिये कि उसने कहा कि ईश्वर ने मेरी और मेरे
५२ पिता के घर का सब परिश्रम भुलाया। और दूसरे का नाम
अफराईम रक्खा इस लिये कि ईश्वर ने मुझे मेरे दुःख की
५३ भूमि में फलमान किया। और सस्ती के सात बरस जो मिसर
५४ की भूमि में थे बीतगये। और महंगी के सात बरस जैसा कि
यूसफ़ ने कहा था आपऊंचे और सारी भूमि में महंगी पड़ी
५५ परंतु मिसर की सारी भूमि में रोटी थी। पर जब कि
मिसर की सारी भूमि भूख से नष्ट होनेलगी ते। प्रजा रोटी
के लिये फ़रऊन के आगे चिल्लाई फ़रऊन ने सब मिसरियों
को कहा कि यूसफ़ पास जाओ वुह जो तुम्हें कहे सो करो।
५६ और समस्त पृथिवी के मुंह पर काल था और यूसफ़ ने ढेर
किएऊए अन्न के खत्ते खोल के मिसरियों के हाथ बेचे और
५७ मिसर की भूमि में कठिन काल पड़ाथा। और सारे मिसर
देश में यूसफ़ से मोल लेने आये क्योंकि समस्त देश में बड़ा
काल था।

४२ बयालीसवां पर्ब्ब।

१ जब याक़ूब ने देखा कि मिसर में अन्न है तब उसने अपने
२ बेटों से कहा कि तुम क्यों एक दूसरे को तकतेहो। देखो
मैं सुनताहों कि मिसर में अन्न है तुम उधर जाओ और
वहां से हमारे लिये मोल लेउ जिसतें हम जीवें और न
३ मरें। सो यूसफ के दस भाई अन्न मोल लेने को मिसर में
४ आये। पर याक़ूब ने यूसफ के भाई बिनियामीन को उसके
भाइयों के साथ न भेजा इस लिये कि उसने कहा कहीं
५ ऐसा न हो कि उस पर कुछ बिपत आपड़े। और
इसराईल के बेटे औरों के साथ मोल लेने आये क्योंकि

६ किनान की भूमि में काल था। और यूसफ तो देश का
अध्यक्ष था कि वुह सारी भूमि के सारे लोगों के हाथ अन्न
बेचताथा सो यूसफ के भाई आये और उन्हों ने उसको
७ प्रणाम किया। यूसफ ने अपने भाइयों को देखा और उन्हें
पहिचानगया पर उसने आप को अनजान बनाया और
उसने कठोर बचन बोला और उसने पूछा तुम कहां से
आयेहो वे बोले किनान की भूमि से अन्न मोल लेनेको।
८ यूसफ़ ने तो अपने भाइयों को पहिचाना पर उन्हों ने उसे
९ न पहिचाना। और यूसफ़ को वे स्वप्न को जो उसने उनके
विषय में देखे थे चेत आया और उन्हें कहा तुम भेदिये
१० होकर आयेहो कि इस भूमि की उजड़पन को देखो। उन्होंने
उसे कहा नहीं हे प्रभु तेरे दास भोजन मोललेने आये हैं।
११ हम सब एकही जनके बेटे हैं हम सच्चे हैं तेरे दास भेदिये
१२ नहीं हैं। वुह बोला कि नहीं परंतु निश्चय भूमि की नंगापन
१३ देखने आयेहो। तब उन्होंने कहा कि तेरे दास बारह
भाई किनान के बीच एकही जनके बेटे हैं और देख छोटका
१४ आज के दिन हमारे पिता पास है और एक नहीं है। तब
यूसफ़ ने उन्हें कहा वही जो मैं ने तुम्हें कहा कि तुम भेदिये
१५ हो इसीसे तुम जांचेजाओगे। फ़रऊन के जीवन की किरिया
कि तुम यहां से कि बिना उसके कि तुम्हारा छोटा भाई
१६ इधर आवे जाने न पाओगे। एकको आपमें से भेजो कि
तुम्हारे भाई को लावे और तुमलोग बंदीगृह में रहोगे कि
जिसतें तुम्हारी बातें जांचीजावें कि तुम सच्चे हो कि नहीं
और नहीं तो फ़रऊन के प्राण की किरिया तुम निश्चय
१७ भेदिये हो। फिर उसने उन सभों को तीन दिन लों
१८ दृष्टिबंध रक्खा। और तीसरे दिन यूसफ़ ने उन्हें कहा
१९ यों करके जीते रहो क्योंकि मैं ईश्वर से डरताहों। कि यदि
तुम सच्चे हो तो एक को अपने भाइयों में से बंदीगृह में बंद

रहने देउ और तुम काल के लिये अपने घर में अन्न लेजाओ।
२० परंतु अपने छोटे भाई को मुझ पास लेआइयो सो तुम्हारी
बातें यों ठहरजायंगी और तुम न मरोगे सो उन्हों ने ऐसाही
२१ किया। और उन्हों ने आपुस में कहा कि हम निश्चय अपने
भाई के बिषय में दोषी हैं कि जब उसने हमारी बिनती किई
और बिलाप किया और उसके मन की पीड़ा को देखा और
२२ उसकी न सुनी इस लिये यह बिपत्ति हम पर पड़ी। तब
राओबीन ने उत्तर में उन्हें कहा क्यों मैं तुम्हें न कहताथा कि
इस बच्चे पर अंधेर न करो और तुम ने न सुना इस लिये
२३ देखो उसके लोहू की भी खोज ऊई। और वे न जानतेथे
कि यूसफ़ उनकी बातें समुझताहै इस लिये कि वुह उनसे
२४ एक बुझवैया की ओर से कहताथा। तब वुह उनमें से
अलग गया और रोया और फिर उन पास आया और
उसने बातें किईं और उनमें से शमऊन को लेके उनकी
२५ आंखों के सामने बांधा। तब यूसफ़ ने आज्ञा किई कि उनके
थैले अन्न से भरें और हर जन के रुपये उसके थैले में रखके
फेरदेवें और मार्ग के लिये उन्हें भोजन देवें उनसे यों ब्यवहार
२६ कियागया। और उन्हों ने अपने गदहों पर अनाज लादा
२७ और वहां से चलनिकले। जब उनमें से एक ने अपना थैला
खोला कि अपने गदहे को टिकान पर दाना घास देवे तो
२८ उसने अपना रोकड़ देखा कि वुह थैले में ऊपर था। तब
उसने अपने भाइयों से कहा कि मेरा रोकड़ फेर दियागया
और देखो कि वुह मेरे थैलेही में है सो उनका मन ठेकाने में
न रहा और वे डरके एक दूसरे को कहनेलगे ईश्वर ने हम
२९ से यह क्या किया। अंत को वे किनान की भूमि में अपने
पिता के पास पऊंचे और जो कि उनपर बीतगयाथा कहा।
३० कि वुह जन जो उसदेश का प्रधान है हम से कठोरता से
३१ बोला और हमें भूमि का भेदिया ठहराया। हमने उसे

कहा कि हम तो सच्चे मनुष्य हैं हम भेदिये नहीं हैं।
३२ बारह भाई एक पिता के बेटे हैं हम्में से एक नहीं मिलता
और सब से जो छोटा है आज अपने पिता के पास किनान
३३ की भूमि में है। तब उस जन ने जो उस देश का प्रधान है
हम को कहा मैं इसे तुम्हें जांचोंगा कि सच्चे हो अथवा नहीं
अपना एक भाई मुझ पास छोड़ो और अपने घराने के लिये
३४ अकाल का भोजन लेउ और जाउ। और अपने छोटे भाई
को मेरे पास लेआओ तब मैं जानोंगा कि तुम भेदिये नहीं
और सच्चे हो फिर मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें देदेउंगा और तुम
३५ देश में व्यापार कीजियो। और यों हुआ कि जब उन्हों ने
अपने थैले छूछे किये तो देखा कि हर जन का रोकड़ बंधा
हुआ उसके थैले में था और वे और उनका पिता रोकड़
३६ की थैलियां देखके डरगये। और उनके पिता याकूब ने उन्हें
कहा तुम ने मुझे निःसंतान किया यूसफ़ तो नहीं है और
शमऊन भी नहीं बिनियामीन को भी ले जाओगे यह सब
३७ बातें मुझ्से विरुद्ध हैं। तब राओबीन अपने पिता को पुकार
के कहा कि यदि मैं उसको तुझ पास न लाओं तो तू मेरे
बेटों को मारडालियो उसे मेरे हाथ में सौंप दे कि मैं उसे
३८ फिर तुझ पास पहुंचाओंगा। उसने कहा मेरा बेटा तुम्हारे
संग न जायगा कि उसका भाई मरगया और वुह अकेला
रहिगया यदि उस पर जिस मार्ग में कि तुम जाते हो कुछ
बिपत्ति हो तो तुम मेरे बुढ़ापे के बालों को शोक के साथ
समाधि में उतारोगे।

४३ तैंतालीसवां पर्ब्ब।

१।२ और भूमि पर अकाल बड़ा कठिन था। और यों हुआ
कि जब वुह अनाज जो मिसर से लाये थे वे खाचुके तो उनके
पिता ने उन्हें कहा कि फिर जाओ और हमारे लिये थोड़ा

३ भोजन मोल लेउ। तब यहूदा ने उसे कहा कि उस पुरुष ने
हम को अत्यंत चिताके कहा कि तुम अपने भाई को अपने
४ साथ लिये बिना मेरा मुंह न देखोगे। सो यदि हमारा
भाई हमारे साथ भेजताहै तो हम जायेंगे और तेरे लिये
५ भोजन मोल लेंगे। और यदि नहीं भेजताहै तो हम न
जायेंगे कि उस पुरुष ने हम से कहा कि जब लों तुम्हारा भाई
६ तुम्हारे साथ न हो तुम मेरा मूंह न देखोगे। तब इसराईल
ने कहा कि तुम ने मुझे क्यों यह बुराई किई कि उस पुरुष
७ से कहा कि हमारा और एक भाई है। वे बोले कि उस
पुरुष ने हमें संकेती से हमारा और हमारे कुटुम्ब का
समाचार पूछा कि क्या तुम्हारा पिता अब लों जीता है क्या
तुम्हारा और कोई भाई है सो हम ने बातों के व्यवहार के
समान उसे कहा क्या हम निश्चय जानतेथे कि वुह हमें कहेगा
८ कि अपने भाई को लेआओ। तब यहूदा ने अपने पिता
इसराईल को कहा इस तरुण को मेरे साथ करदे कि हम
उठें और जावें कि हम और तू और हमारे बालक जीवें
९ और मर नजावें। और मैं उसका बिचवई होताहों तू
मेरे हाथ से उसे चाहियो यदि मैं उसे तेरे पास न लाऊं
और तेरे आगे न बैठा देऊं तो तू यह पाप सर्वदा लों मेरे
१० सिर पर रखियो। क्योंकि यदि हम बिलंब न करते तो
११ निश्चय अब लों दोहरा के फिर आये होते। तब उनके पिता
इसराईल ने उन्हें कहा कि यदि अब योंहीं है तो यों करो
कि कुछ अच्छा फल इस भूमि का अपने पात्रों में रखलेउ
और उस पुरुष के लिये भेंट लेजाओ थोड़ा निर्यास थोड़ा
मधु कुछ सुगंधद्रव्य और बोल और बतम और बदाम।
१२ और दना रोकड़ हाथ में लेउ और वुह रोकड़ जो तुम्हारी
थैलियों में फेर लायागयाहै अपने हाथ में फेर ले जाउ
१३ क्या जाने वुह भूल से ऊआहो। अपने भाई को भी लेउ उठो

१४ और उस पुरुष पास जाउ। और सामर्थी ईश्वर उस
पुरुष को तुम पर दयाल करे कि वुह तुम्हारे दूसरे भाई
और बनियामीन को छोड़देवे मैं यदि निर्बंश हुआ तो हुआ।
१५ तब उन्होंने वुह भेंट लिया और दूने रोकड़ को
अपने हाथ में बनियामीन समेत लिया और उठे और
मिसर को नीचे चले और यूसफ के आगे जा खड़े हुए।
१६ जब यूसफ ने बनियामीन को उनके संग देखा तो उसने अपने
घर के प्रधान को कहा कि इन पुरुषों को घर में लेजा और
कुछ मारके सिद्ध कर क्योंकि ये मनुष्य दो पहर को मेरे
१७ संग खायेंगे। सो जैसा कि यूसफ ने कहाथा उस पुरुष ने
१८ वैसाही किया और उन्हें घर में लाया। तब वे डरे कि यूसफ
के घर में लायेगये और उन्हों ने जाना कि उस रोकड़ के
कारण जो पहिले बार हमारी थैलियों में फिर गया हम
यहां लायेगयेहैं कि वुह हमारे लिये एक कारण ढूंढे
और हम पर लपके और हम को पकड़ के दास बनावे
१९ और हमारे गदहों को छीन लेवे। तब उन्होंने यूसफ के घर
के प्रधान पास आके घर के द्वार पर उस्से बातचीत किई।
२० और कहा कि महाशय हम निश्चय पहिले बेर जो भोजन
२१ मोल लेने आयेथे। तो यों हुआ कि जब हम ने टिका श्रय
पर उतर के अपने थैलों को खोला तो देखा कि हरजन का
रोकड़ उनके थैले में ऊपर था हमारा रोकड़ सब पूरा था
२२ सो हम उसे अपने हाथ में फेर लायेहैं। और हम और
रोकड़ भोजन मोल लेने को अपने हाथों में लायेहैं और हम
नहीं जानते कि हमारा रोकड़ किसने हमारे थैलों में
२३ रखदिया। उसने कहा कि तुम्हारा कुशल होवे मत डरो तुम्हार
ईश्वर और तुम्हारे पिता के ईश्वर ने तुम्हारे थैलों में तुम्हें धन
दिया तुम्हारा रोकड़ मुझ को मिल चुका फिर वुह शमऊन
२४ को उन पास निकाल लाया। और उस जन ने उनको

यूसफ के घर में लाके पानी दिया और उन्हों ने अपने चरण
२५ धोये और उसने उसके गदहों को दाना घास दिया। फिर
उन्हों ने यूसफ की बाट जोहने में कि दो पहर को आवेगा
भेंट सिद्ध किया क्योंकि उन्हों ने सुना था कि हमें भोजन यहीं
२६ खाना होगा। और जब यूसफ घर आया तो वे वुह
भेंट जो उनके पास थी भीतर लाये और उसके लिये प्रणाम
२७ करने को भूमि पर गिरे। उसने उनसे कुशल क्षेम पूछा और
कहा कि तुम्हारा पिता आनन्द है वुह वृद्ध जिसकी चर्चा
२८ तुम ने किई थी अब लों जीता है। उन्हों ने उत्तर दिया कि
तेरा सेवक हमारा पिता चैन से है वुह अबलों जीता है फिर
२९ उन्हों ने सिर झुकाये और प्रणाम किये। फिर उसने अपनी
आंखें उठाईं और अपने भाई बनियामीन अपनी माता के
बेटे को देखा और कहा कि तुम्हारा छोटा भाई जिस की चर्चा
तुम ने मुझ से किई थी यही है फिर कहा कि हे मेरे बेटे ईश्वर
३० तुझ पर दयाल रहे। तब यूसफ ने शीघ्रता किई क्योंकि
उसका जी अपने भाई के लिये भर आया और चाहा कि
३१ रोये और वुह कोठरी में गया और वहां रोया। फिर
उसने अपना मुंह धोया और बाहर निकला और आप को
३२ रोका और आज्ञा किई कि भोजन परोसो। तब उन्हों ने
उसके लिये अलग और उनके लिये अलग और मिसरियों
के लिये जो उसके संग खाते थे अलग परोसा इस लिये क्योंकि
मिसर के लोग इबरानियों के संग भोजन नहीं खा सक्ते क्योंकि
३३ वुह मिसरियों के लिये घिन है। और वे उसके सन्मुख बैठे
पहिलौंठा अपनी पहिलौंठाई के और छोटका अपनी छोटाई
३४ के समान तब वे आश्चर्य से एक दूसरे को देखने लगे। और
उसने अपने आगे से भोजन उनको उठा दिये परंतु बनियामीन
का भोजन हरएक के भोजन से पंचगुन था और उन्हों ने
उसके साथ पीया और मगन हुए।

४४ चौआलीसवां पर्ब्ब।

१ और उसने अपने घर के प्रधान को यह आज्ञा किई कि
उन मनुष्यन के थैले अन्न से जितना कि वे ले जासकें भरदे
२ और हरएक जन का रोकड़ उसके थैलेमें डालदे। और
मेरा रुपे का कटोरा छोटकेके थैलेमें ऊपर उसके अन्न के
दाम समेत रखदे सो उसने यूसफ की आज्ञाके समान
३ किया। और भोरहीं बिहान का उंजियाला हुआ वे सब
४ अपने गदहे लेके चल निकले। जब वे नगर से थोड़ी दूर
बाहर गये यूसफ ने अपने घर के प्रधान को कहा कि उठ
और उन लोगों का पीछा कर और जब तू उन्हें पावे तो
उन्हें कह तुम ने किस लिये भलाई की संती बुराई किई।
५ क्या यह वुह नहीं जिसमें मेरा प्रभु पीताहै उसकी नाई
कोई आगम का सच्चा संदेश देताहै तुमने इसमें बुरा
६ कियाहै। और उसने उन्हें जालिया और ये बातें
७ उन्हें कहीं। तब उन्होंने उसे कहा कि हमारा प्रभु ऐसी
बातें क्यों कहताहै ईश्वर न करे कि तेरे सेवक ऐसा काम
८ करें। देख यह रोकड़ जो हमने अपने थैलोंमें ऊपर पाया
सो हम किनान की भूमि से तुझ पास फेर लायेथे सो
क्योंकर होगा कि हम ने तेरे प्रभु के घर से रुपा अथवा
९ सोना चुरायाहो। तेरे सेवकों में से वुह जिसके पास
निकले वुह मारडालाजाय और हम भी अपने प्रभु के दास
१० होंगे। उसने कहा कि तुम्हारी बातों के समान होगा जिसके
पास वुह निकले सो मेरा दास होगा और तुम निर्दोष
११ ठहरोगे। तब तुरंत हरएक पुरुष ने अपना थैला भूमि पर
१२ उतारा और हरएक ने अपना थैला खोला। और वुह
बड़े से आरंभ करके छोटेलों ढूंढने लगा और कटोरा
१३ बनियामीन के थैलेमें पाया। तब उन्होंने अपने कपड़े फाड़े
और हरएक पुरुष ने अपना गदहा लादा और नगर को

१४ फिरा। और यहूदा और उसके भाई यूसफ के घर
आये क्योंकि वुह अब लों वहीं था और वे उसके आगे भूमि
१५ पर गिरे। तब यूसफ ने उन्हें कहा तुम ने यह कैसा काम
किया क्या तुम न जानते थे कि मेरे ऐसा जन निश्चय आगम
१६ कहता है। यहूदा बोला कि हम अपने प्रभु से क्या कहें
और क्या बोलें और क्योंकर अपने को निर्दोष ठहरावें इस
कारण कि ईश्वर ने तेरे सेवकों की बुराई प्रगट किई देख
कि हम और वुह भी जिस पास से कटोरा निकला अपने
१७ प्रभु के दास हैं। तब वुह बोला कि ईश्वर न करे कि मैं
ऐसा करों यह जन जिसके पास कटोरा निकला वही मेरा
दास होगा और तुम अपने पिता पास कुशल से जाउ।
१८ तब यहूदा उसके समीप आके बोला कि हे मेरे प्रभु अपने
सेवक को आज्ञा दीजिये कि अपने प्रभु के कान में एक बात कहें
और अपने सेवक पर अपने क्रोध की आग को मत भड़कने
१९ दीजिये क्योंकि तू फरऊन के तुल्य है। मेरे प्रभु ने अपने
सेवकों से यों कहके प्रश्न किया कि तुम्हारा पिता अथवा
२० भाई है। और हम ने अपने प्रभु से कहा कि हमारा एक
वृद्ध पिता है और उसके बुढ़ापे का एक छोटा लड़का है
और उसका भाई मरगया और वुह अपनी माता का
२१ एकही रहा और वुह अपने पिता का अति प्रिय है। तब
तू ने अपने सेवकों को कहा कि उसे मेरे पास लाओ कि
२२ उसे देखों। हम ने अपने प्रभु से कहा कि वुह तरुण अपने
पिता को छोड़ नहीं सक्ता कि यदि वुह छोड़े तो वुह मर
२३ जायगा। फिर तू ने अपने सेवकों को कहा जब लों तुम्हारा
छोटा भाई तुम्हारे साथ न आवे तुम मेरा मुंह फिर न
२४ देखोगे। और यों हुआ कि जब हम तेरे सेवक अपने पिता
के पास गये तो हम ने अपने प्रभु की बातें उसे कहीं।
२५ हमारा पिता बोला फिर जाओ और हमारे लिये थोड़ा

२६ अन्न मोल लेउ। तब हम बोले कि हम नहीं जासक्ते यदि
हमारा छोटा भाई हमारे साथ होवे तो हम जायंगे क्योंकि
जब लों हमारा छोटका भाई हमारे साथ न हो हम उस
२७ जन का मुंह न देखने पावेंगे। और तेरे सेवक मेरे पिता ने
हम को कहा तुम जानतेहो कि मेरी पत्नी मुझ से दो बेटे जनी।
२८ एक मुझ से अलग ज़आ और मैं ने कहा निश्चय वुह फाड़ागया
२९ और मैं ने उसे अब लों न देखा। अब यदि तुम इसको भी
मुझ से अलग करतेहो और इस पर कुछ विपत्ति पड़े तो
तुम मेरे बुढ़ापे के बालों को शोक से समाधि में उतारोगे।
३० अब इस लिये यदि मैं तेरे सेवक अपने पिता पास जाऊं
और वुह तरुण हमारे साथ नहो और इस कारण से कि
३१ उसका जीवन इस तरुण के जीवन से बंधा है। तो अंत को
यही होगा कि वुह यह देखकर कि तरुण नहीं है मरजायगा
और तेरे सेवक अपने पिता के बुढ़ापे के बालों को शोक से
३२ समाधि में उतारेंगे। क्योंकि तेरे सेवक ने अपने पिता पास
इस तरुण का बिचवई होके कहा कि यदि मैं इसे तुझ पास न
पज़ंचाऊं तो मैं सर्वदा लों अपने पिता का अपराधी होंगा।
३३ इस लिये अब मुझे छुट्टी दीजिये कि तेरा सेवक तरुण की
संती अपने प्रभु के दासत्व में रहे और तरुण को उसके
३४ भाइयों के संग जानेदीजिये। क्योंकि यदि तरुण मेरे साथ
न होवे मैं अपने पिता पास कैसे जाऊं ऐसा न होवे कि जो
बिपत्ति मेरे पिता पर पड़े मैं उसे देखों।

४५ पैंतालीसवां पर्व।

१ तब यूसफ़ उन सब के आगे जो उस पास खड़े थे अपने को
रोक नसका और चिल्लाया कि हरएक को मुझ पास से
बाहर करो सो जब यूसफ़ ने अपने को अपने भाइयों पर
२ प्रगट किया तब उस समय में कोई उसके संग न था। और

वुह चिल्ला के रोया और मिसरियों और फ़रऊन के घराने
३ ने सुना। और यूसफ़ ने अपने भाइयों को कहा मैं यूसफ़
हों क्या मेरा पिता अब लों जीता है तब उसके भाई उसे
४ उत्तर न दे सके क्योंकि वे उसके आगे घबरागये। और यूसफ़
ने अपने भाइयों से कहा कि मेरे समीप आइये वे पास आये
वुह बोला मैं तुम्हारा भाई यूसफ़ हों जिसको तुम ने मिसर
५ में बेचा। सो इस लिये कि तुम ने मुझे यहां बेचा उदास न
होओ और अपने मन में व्याकुल मत होओ क्योंकि ईश्वर ने
६ तुम से आगे मुझे प्राण बचाने के लिये भेजा। इस लिये कि दो
बरस से भूमि पर अकाल है और अभी और पांच बरस लों
७ बोना लवना न होगा। और ईश्वर ने मुझ को तुम्हारे आगे
भेजा जिसतें तुम्हारा बंश पृथिवी पर रहे और बड़े उद्धार
८ से तुम्हारे प्राण बचावे। सो अब न तुम ने परंतु ईश्वर ने मुझे
यहां भेजा और उसने मुझे फ़रऊन के पिता के तुल्य बनाया
और उसके सारे घर का प्रभु और मिसर की सारी भूमि का
९ अध्यक्ष बनाया। तुम शीघ्रता से मेरे पिता पास जाओ और
उसे कहियो कि तेरा पुत्र यूसफ़ यों कहता है कि ईश्वर ने
मुझे सारे मिसर का स्वामी किया मुझ पास चले आइये अबेर
१० न कीजिये। और आप गोशन की भूमि में रहियेगा और आप
और आप के लड़के और आपके लड़कों के लड़के और
आप की भेड़ बकरी और गाय बैल और जो कुछ आप का है
११ मेरे पास होंगे। और यहां मैं तेरा प्रतिपाल करोंगा क्योंकि
अब भी अकाल के पांच बरस हैं क्या जाने कि तू और तेरा
१२ घराना और सब जो आप के हैं कंगाल होजायं। और देखो
तुम्हारी आंखें और मेरे भाई बनियामीन की आंखें देखती हैं
१३ कि मैं हीं हों जो तुम्हारे साथ मुंह से बोलता हों। और
तुम मेरे बाप से मेरे बिभव की जो मिसर में है और सब
कुछ की जो तुम ने देखा है चर्चा कीजियो और तुम शीघ्र करो

१४ और मेरे पिता को यहां ले आओ। और वुह अपने भाई
बनियामीन के गले लग के रोया और बनियामीन भी उसके
१५ गले लग के रोया। और उसने अपने सब भाइयों को चूमा
और उनसे मिल के रोया उसके पीछे उसके भाइयों ने उस्से
१६ बातें किईं। और यही बातें फरऊन के घराने में सुनीगईं
कि यूसफ़ के भाई आये और उस्से फ़रऊन और उसके सेवक
१७ बहुत आनन्द हुए। और फ़रऊन ने यूसफ़ को कहा कि
अपने भाइयों को कह तुम अपने पशुलें लादो और जाओ
१८ और किनान की भूमि में जा पहुंचो। और अपने पिता और
अपने घराने को लेउ और मुझ पास आओ और मैं तुम
को मिसर की भूमि की अच्छी बस्तें देउंगा और तुम इस भूमि
१९ का पदारथ खाओगे। अब तुझे आज्ञा मिली कि तू उनको
कहे तुम यह करो कि अपने लड़के और अपनी पत्नियों के
लिये मिसर की भूमि से गाड़ियां लेउ और अपने पिता को
२० लाओ और आओ। और अपनी सामग्री की कुछ चिंता
न करो क्योंकि मिसर की सारी भूमि की उत्तमता तुम्हारे
२१ लिये है। इसराईल के संतानों ने यंहीं किया और यूसफ़ ने
फ़रऊन के कहे के समान उनको गाड़ियां दिईं और मार्ग का
२२ भोजन दिया। और उसने उन सब में से हरएक को बस्त्र
दिये परंतु उसने बनियामीन को तीन सौ रुपए और पांच
२३ जोड़े बस्त्र दिये। और अपने पिता के पास इस रीति से भेजा
दस गदहे मिसर की अच्छी बस्तुन से लदेहुए और दस
गदहियां अनाज और रोटी और भोजन से लदीहुईं अपने
२४ पिता की यात्रा के लिये। सो उसने अपने भाइयों को बिदा
किया और वे चल निकले तब उसने उन्हें कहा देखो मार्ग
२५ में कहीं आपुस में बिवाद न हो। और वे मिसर से सिधारे
और किनान की भूमि में अपने पिता याक़ूब के पास पहुंचे।
२६ और उस्से कहा यूसफ़ तो अब लों जीता है और वुह मिसर

की सारी भूमि का अध्यक्ष है और याक़ूब का मन सनसनागया
२७ क्योंकि उसने उनकी बात प्रतीति न किई। और उन्हों ने
उसे सारी बातें दुहराईं जो यूसफ़ ने उन्हें कहीथीं और जब
उसने गाड़ियां जो यूसफ ने उसको बुलाभेजने के लिये भेजी
थीं देखीं तो उनके पिता याक़ूब का जीवन नवीन हुआ।
२८ और इसराईल बोला यह बस है कि मेरा बेटा यूसफ़
अब लों जीता है मैं जाऊंगा और अपनी मृत्यु से पहिले
उसे जा देखोंगा।

४६ छयालीसवां पर्ब्ब।

१ और इसराईल ने अपना सब कुछ लेके यात्रा किई और
बीरसबा पर आके अपने पिता इसहाक़ के ईश्वर को
२ बलिदान चढ़ाया। और ईश्वर ने रात को स्वप्न में इसराईल
से बातें किईं और कहा हे याक़ूब याक़ूब वुह बोला मैं हों।
३ उसने कहा मैं ईश्वर तेरे पिता का ईश्वर हों मिसर में
४ जातेऊए मत डर मैं तुझे वहां बड़ी मंडली बनाओंगा। मैं
तेरे साथ मिसर को जाऊंगा मैं तुझे अवश्य फिर ले आओंगा
५ और यूसफ़ अपना हाथ तेरी आंखों पर रक्खेगा। तब
याक़ूब बीरसबा से उठा और इसराईल के बेटे अपने पिता
याक़ूब को और अपने लड़कों और अपनी स्त्रियों को गाड़ियों
६ पर जो फ़रऊन ने उसके पऊंचाने को भेजीथी ले चले। और
उन्हों ने अपने चौपाए और अपनी सामग्री जो किनान की
भूमि में पाईथी लेलीई और याक़ूब अपने समस्त वंश समेत
७ मिसर में आया। वुह अपने बेटों और बेटों के बेटों और
बेटियों और अपने बेटों की बेटियों और अपने सारे वंश
८ को मिसर में लाया। और इसराईल के बेटों के नाम जो
मिसर में आये अर्थात याक़ूब के बेटे ये हैं याक़ूब का
९ पहिलोंठा राओबीन। राओबीन के बेटे खनूख और फ़ब

१० और हजरून और करमी। शमऊन के बेटे यमूईल यामीन
और औहद याखीन ज़ोहर और किनानी स्त्री का बेटा
११ शाऊल। और लूई के बेटे गरशून कोहास और मरारी।
१२ यहूदा के बेटे ईर ओनान शीलाफारस ज़राह परंतु ईर
और ओनान किनान की भूमि में मरगये और फारस के बेटे
१३ हसरून और हामूल हैं। यसाखार के बेटे तूलाअ और
१४ फवाय और यूब और शमरून। ज़बूलून के बेटे सारद ईलून
१५ जालील। ये लीया के बेटे हैं जो फदानअराम में याक़ूब के
लिये जनी उसकी बेटी दैना के संग जो उसके सारे बेटे
१६ बेटियां तैंतीस हैं। ग़ाद के बेटे सफीऊन और हजी और
शूनी और अज़बून और ईरी और अरूदी और अरीली।
१७ और अशीर के बेटे जिमनाइशुआ ईशवी और बिरीया और
सारह उनकी बहिन और बरीया के बेटे हिबर और
१८ मलकील। ये उस जुल्फा के पेट से हैं जिसे लाबान ने अपनी
बेटी लीया को देदियाथा यह याक़ूब से सब के सब सोलह
१९ बालक जनी। याक़ूब की पत्नी राहील के पेट से यूसफ़ और
२० बनियामीन। और यूसफ़ से मिसर की भूमि में मनस्सा और
अफराईम उत्पन्न ऊए ये उनके याजक फूतीफारअ की बेटी
२१ असनास के पेट से उत्पन्न ऊए। बनियामीन के बेटे बाला
और बाखर और अशबील और जीरा और नामान और
२२ ईही और रूश और मुपिम और हुफीम और अरद। ये वे
सब हैं जिन्हें राहील याक़ूब के लिये जनी और ये सब चौदह
२३।२४ हैं। दान का बेटा होशीम। नफताली के बेटे ज़ाजील और
२५ गूनी और जीज़र और शलीम। ये सब उस बिलहा के पेट
से थे जिसे लाबान ने अपनी बेटी राहील के साथ करदियाथा
२६ सो ये सब सात जन हैं जिन्हें वुह याक़ूब के लिये जनी। सो वे
सब के सब जो याक़ूब के साथ मिसर में आये और उसकी
कटि से उत्पन्न ऊए उनसे अधिक जो याक़ूब के बेटों की

२७ स्त्रियां थीं छियासठ थे। और यूसफ़ के दो बेटे थे जो मिसर
की भूमी में उत्पन्न हुए सो वे सब जो याक़ूब के घराने के थे
२८ और मिसर में आये सत्तर जन थे। और उसने यहूदा
को यूसफ़ पास अपने आगे भेजा कि गोशन लों उसकी
२९ अगुआई करे और वे गोशन की भूमि में आये। और यूसफ़
ने अपना रथ सिद्ध किया और अपने पिता इसराईल से
भेंट करने के लिये गोशन को चला और उस पास पहुंचा
३० और उसके गले में लपटा और अबेर लों रोया। इसराईल
ने यूसफ़ से कहा अब मुझे मरना आनन्द है कि मैं ने तेरा
३१ मुंह देखा कि तू अब भी जीता है। और यूसफ़ ने अपने भाइयों
और अपने पिता के घराने को कहा मैं संदेश देने को फ़रऊन
पास जाता हों और उसे कहता हों कि मेरे भाई और मेरे
पिता का घराना जो किनान की भूमि में था मेरे पास आया।
३२ और वे लोग चरवाहे हैं क्योंकि चौपाय चराना बहुत दिन
से उनका उद्यम है और वे अपनी भेड़ बकरी और गाय
३३ बैल और सब कुछ जो उनका है ले आये हैं। और यों
होगा कि फ़रऊन तुम को बुलावेगा और कहेगा कि तुम्हारा
३४ उद्यम क्या है। तो तुम कहियो तेरे दास तरुणाई से लेके
अब लों चरवाही करते रहे हैं क्या हम और क्या हमारे
बाप दादे कि तुम गोशन की भूमि में रहो क्योंकि मिसरियों
को हरएक गड़ेरिये से घिन है।

४७ सैंतालीसवां पर्ब्ब।

१ तब यूसफ़ ने आकर फ़रऊन से कहा कि मेरा पिता और
मेरे भाई और उनकी भेड़ बकरी और गाय बैल और सब
जो उनके हैं किनान की भूमि से निकल आये और देख कि
२ गोशन की भूमि में हैं। और उसने अपने भाइयों में से पांच
३ जन लेके उन्हें फ़रऊन के आगे किया। और फ़रऊन ने

उसके भाइयों से कहा तुम्हारा उद्यम क्या है उन्हों ने फ़रऊन
को कहा कि तेरे सेवक क्या हम और क्या हमारे बाप दादे
४ गड़रिये हैं। फिर उन्हों ने फ़रऊन से कहा कि हम इस
भूमि में रहने को आये हैं इस लिये कि तेरे सेवकों के झुंडों
के लिये चराई नहीं है क्योंकि किनान की भूमि में बड़ा
अकाल पड़ा है अब इस लिये अपने सेवकों को गोशन की
५ भूमि में रहने दीजिये। तब फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा कि
६ तेरा पिता और तेरे भाई तुझ पास आये हैं। मिसर की
भूमि तेरे आगे है अपने पिता और अपने भाइयों को सब
से अच्छी भूमि में बसा वे गोशन की भूमि में रहें और यदि
तू उनमें चालाक मनुष्य जानता हो तो उनको मेरे चौपाये
७ पर प्रधान कर। तब यूसफ़ अपने पिता याक़ूब को भीतर
लाया और उसे फ़रऊन के आगे खड़ा किया और याक़ूब ने
८ फ़रऊन को आशीष दिया। और फ़रऊन ने याक़ूब से पूछा
९ कि तेरे जीवन के वय के बरसों के दिन कितने हैं। याक़ूब
ने फ़रऊन से कहा कि मेरी यात्रा के दिनों के बरस एक सौ
तीस हैं और मेरे जीवन के बरसों के दिन थोड़े और बुरे
ऊए हैं और वे मेरे पितरों के जीवन के बरसों के दिनों को
१० जब वे यात्रा करते थे नहीं पऊंचे। और याक़ूब ने फ़रऊन
को आशीष दिया और फ़रऊन के आगे से बाहर गया।
११ और यूसफ़ ने अपने पिता और भाइयों को मिसर की
भूमि में सब से अच्छी भूमि में रमसस की भूमि में जैसा
१२ फ़रऊन ने कहा था रक्खा और अधिकारी किया। और
यूसफ़ ने अपने पिता और अपने भाइयों और अपने पिता
के सब घराने का उनके लड़केबालों के समान प्रतिपाल
१३ किया। और समस्त भूमि पर रोटी न थी क्योंकि ऐसा
कठिन अकाल था कि मिसर की भूमि और किनान की
१४ भूमि अकाल के कारण से मूर्छित हो गई थी। और यूसफ़ ने

सारा रोकड़ जो मिसर और किनान की भूमि में था उस
अन्न की संती जो लोगों ने मोल लिया बटोरा और यूसफ़
१५ उस रोकड़ को फ़रऊन के घर में लाया। और जब मिसर
और किनान की भूमि में रोकड़ होचुका तो सारे मिसरियों
ने आकर यूसफ़ से कहा कि हम को रोटी दे कि तेरे होते
१६ ऊए हम क्यों मरें क्योंकि रोकड़ होचुका। यूसफ़ ने कहा
कि यदि रोकड़ नहीं मिलसक्ता तो अपने चौपाये देउ मैं
१७ तुम्हारे चौपाये की संती देउंगा। वे अपने चौपाये यूसफ़ के
पास लाये यूसफ़ ने घोड़ों और भेड़ बकरी और गाय बैल
के गल्लों और गदहों की संती उनको रोटियां दिईं और
१८ उसने उनके चौपाये की संती में उन्हें उस बरस पाला। जब
वुह बरस बीत गया वे दूसरे बरस उस पास आये और
उसे कहा कि हम अपने प्रभु से नहीं छिपाते कि हमारा
रोकड़ उठचुका हमारे प्रभु ने हमारे चौपाये के झुंड भी
लिये सो हमारे प्रभु की दृष्टि में हमारे देहों और भूमि से
१९ अधिक कुछ न बचा। सो हम अपनी भूमि समेत तेरी आंखों
के सन्मुख क्यों नष्ट होवें हम को और हमारी भूमि को
रोटी पर मोल ले और हम अपनी भूमि समेत फ़रऊन की
दासता में रहेंगे और बीज दे कि हम जीवें और न मरें कि
२० भूमि उजड़ न जाय। और यूसफ़ ने मिसर की सारी भूमि
फ़रऊन के लिये मोल लिई क्योंकि मिसरियों में से हरएक ने
अपनी भूमि बेची कि अकाल ने उन्हें निपट सकेत कियाथा
२१ सो वुह भूमि फ़रऊन की ऊई। रहे वे लोग सो उसने
उनको नगरों में मिसर के एक सिवाने से दूसरे सिवाने लों
२२ भेजा। उसने केवल याजकों की भूमि मोल न लिई क्योंकि
याजक ने फ़रऊन से एक भाग पायाथा और अपने भाग को
जो फ़रऊन ने उन्हें दियाथा खातेथे इस लिये उन्होंने अपनी
२३ भूमि को न बेचा। तब यूसफ़ ने लोगों से कहा कि देखो मैं ने

आज के दिन तुम को और तुम्हारी भूमि को फ़रऊन के लिये
मोल लिया सो यह बीज तुम्हारे लिये है खेत में बोओ।
२४ और जब यह अधिक होतो यों होगा कि तुम पांचवां भाग
फ़रऊन को देउगे और चार भाग खेत में बीज बोने को और
तुम्हारे और उनके जो तुम्हारे घराने के हैं और तुम्हारे
२५ बच्चों के भोजन के लिये होंगे। वे बोले कि तू ने हमारे प्राण
बचाये हम अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पावें और हम
२६ फ़रऊन के दास होंगे। और यूसफ़ ने सारी मिसर की
भूमि के लिये यह रीति जो आज के दिन लों है ठहराई
कि फ़रऊन पांचवां भाग लेवे परंतु केवल याजकों की भूमि
२७ फ़रऊन की न हुई। और इसराईल ने मिसर की भूमि में
गोशन के देश में निवास किया और वे वहां अधिकार
२८ रखतेथे और वे बढ़े और बहुत अधिक हुए। और याक़ूब
मिसर की भूमि में सत्रह बरस जीया सो याक़ूब के जीवन के
२९ बरसों के दिन एक सौ सैंतालीस बरस के हुए। और
इसराईल के मरने का समय निकट पहुंचा तब उसने
अपने बेटे यूसफ़ को बुलाकर कहा अब यदि मैं ने तेरी दृष्टि
में अनुग्रह पाया अपना हाथ मेरी जांघ तले रखदीजिये
और दया और सच्चाई से मेरे संग ब्यवहार कीजिये मुझ
३० को मिसर में मत गाड़ियो। परंतु मैं अपने पितरों के संग
सोओंगा और तू मुझे मिसर से बाहर लेजाइयो और
उनके समाधिस्थान में गाड़ियो तब वुह बोला कि जैसा तू ने
३१ कहा है मैं करोंगा। और उसने कहा कि मेरे आगे किरिया
खा उसने उसके आगे किरिया खाई और इसराईल ने
अपने को खाट के सिरहाने पर झुकादिया।

४८ अठतालीसवां पर्व्व।

१ और उन बातों के पीछे यों ज्ञआ कि किसीने यूसफ़ से कहा
देख तेरा पिता रोगी है सो उसने अपने दो बेटों मनस्सा
२ और इफ़राईम को अपने साथ लिया। और याक़ूब को
संदेश दियागया कि देख तेरा बेटा यूसफ़ तुझ पास आताहै
३ और इसराईल खाट पर संभल बैठा। और याक़ूब ने
यूसफ़ से कहा कि सर्व्व सामर्थी ईश्वर लूज़ के बीच किनान की
४ भूमि में मुझे दिखाई दिया और मुझे आशीष दिया। और
मुझे कहा कि देख मैं तुझे फलमान और अधिक करोंगा
और तुझे बज्ञतसी मंडली उत्पन्न करोंगा और तेरे पीछे
५ यह भूमि तेरे वंश के सर्व्वदा का अधिकार करोंगा। और
अब तेरे दो बेटे इफ़राईम और मनस्सा जो तुझ से मिसर
की भूमि में उस्से पहिले कि मैं मिसर में तुझ पास आया
उत्पन्न ज्ञए मेरे हैं वे राऊबीन और शमऊन की नाईं मेरे
६ होंगे। और तेरा वंश जो उनके पीछे उत्पन्न होवे तेरा होगा
और वे अपने अधिकार में अपने भाइयों के नाम पावेंगे।
७ और मैं जो हों सो जब फदान से आया राहील मार्ग में जब
अफरास थोड़ी दूर रहगयाथा मेरे पास किनान की भूमि
में मरगई और मैं ने उसे वहीं अफ़रास के मार्ग में गाड़ा
८ बैतुल्लहम वही है। फिर इसराईल ने यूसफ़ के बेटों को देख
९ के कहा ये कौन हैं। तब यूसफ़ ने अपने पिता से कहा ये मेरे
बेटे हैं जिन्हें ईश्वर ने मुझे यहां दिया वुह बोला उन्हें मुझ
१० पास ला मैं उन्हें आशीष देऊंगा। अब इसराईल की आंखें
बुढ़ापे से धुंधलीं ज्ञईथीं कि वुह देख न सक्ताथा और वुह
उन्हें उसके पास लाया और उसने उन्हें चूमा और उन्हें गले
११ लगाया। और इसराईल ने यूसफ़ से कहा मुझे तो तेरेही
देखने की आशा न थी और देख ईश्वर ने तेरा वंश भी मुझे
१२ दिखाया। यूसफ़ ने उन्हें अपने घुटनों में से निकाला और

१३ अपने को भूमि पर झुकाया। और यूसफ़ ने उन दोनों को
लिया अफ़राईम को अपने दहिने हाथ से इसराईल के
बाएं हाथ के साम्ने और मनस्सा को अपने बाएं हाथ से
इसराईल के दहिने हाथ के साम्ने और उसके पास लाया।
१४ इसराईल ने अपना दहिना हाथ लंबा किया और
अफ़राईम के सिर पर जो छोटका था रक्खा और अपना
बायां हाथ मनस्सा के सिर पर जान बूझ के अपने हाथ को
१५ यों रक्खा क्योंकि मनस्सा पहिलौंठा था। और उसने
यूसफ़ के लिये आशीष चाहा और कहा वुह ईश्वर जिसके
आगे मेरे पिता इबराहीम और इसहाक़ चले और वुह
ईश्वर जिसने जीवनभर आज लों मेरी रखवाली किई।
१६ और वुह दूत जिसने मुझे सारी बुराइयों से बचाया इन
तरुणों को आशीष देवे और मेरा नाम और मेरे पितर
इबराहीम और इसहाक़ का नाम उन पर होवे और भूमि
१७ पर उन्हें रेल पेल के मंडली उत्पन्न करे। यूसफ़ यह देखकर
कि उसके पिता ने अपना दहिना हाथ अफ़राईम के सिर
पर रक्खा उदास ऊआ और उसने अपने पिता का हाथ
थाम लिया कि उसे अफ़राईम के सिर पर से उठा के
१८ मनस्सा के सिर पर रखे। और यूसफ़ ने अपने पिता से कहा
कि हे मेरे पिता यों नहीं क्योंकि यह पहिलौंठा है अपना
१९ दहिना हाथ उसके सिर पर रख। उसके पिता ने न माना
और कहा मैं जानताहों हे बेटे मैं जानताहों इस्से भी लोग
होंगे और यह भी महान होगा परंतु निश्चय इसका छोटा
भाई इस्से बड़ा होगा और उसके बंश से बऊत मंडली
२० होगी। और उसने उनको उस दिन आशीष दिया कि
इसराईल के संतान तेरा नाम लेके आपुस में कुशल की
प्रार्थना करेंगे कि ईश्वर तुझ को अफ़राईम और मनस्सा के

ऐसा करे सो उसने अफराईम को मनस्सा से आगे किया।
२१ और इसराईल ने यूसफ़ को कहा देख मैं मरताहों परंतु
ईश्वर तुम्हारे साथ होगा और तुम को तुम्हारे पितरों की भूमि
२२ में फिर ले जायगा। इसे अधिक मैं ने तुझे तेरे भाइयों से
एक भाग जो मैं ने अमूरियों के हाथ से अपने खड्ग और
धनुष से निकाला अधिक दियाहै।

४९ उंचासवां पर्ब्ब।

१ और याक़ूब ने अपने बेटों को बुलाया और कहा तुम एकट्ठे
होओ कि जो तुम पर अंत्य के दिनों में बीतेगा मैं तुम से
२ कहों। हे याक़ूब के बेटो एकट्ठे होजाओ और सुनो और अपने
३ पिता इसराईल की ओर कान धरो। हे राओबीन
मेरे पहिलौंठे तू मेरे बूता और मेरे सामर्थ्य का आरंभ
४ और महिमा का प्रथम और प्रतिष्ठा में उत्तम है। जल की
नाईं अस्थिर तू श्रेष्ठ न होगा इस कारण कि अपने पिता की
खाट पर चढ़ा और तू ने मेरे बिछौने पर चढ़के उसको
५ अशुद्ध किया। शमऊन और लीवी भाई हैं और
६ अंधेर के हथियार उनके घरों में हैं। हे मेरे प्राण तू
उनके भेद में मत जा मेरी प्रतिष्ठा तू उनमें मत मिल
क्योंकि उन्होंने अपने क्रोध से मनुष्य को बधन कियाहै और
७ अपनी इच्छा की चाल से नगर की भीत ढा दिईहै। उनके
क्रोध पर धिक्कार कि प्रचंड था और उनकी रिस पर कि
कड़ी थी मैं उन्हें याक़ूब में अलग करोंगा और इसराईल में
८ छितराऊंगा। हे यहूदा तू वुह है जिसकी तेरे भाई
स्तुति करेंगे तेरा हाथ तेरे बैरियों के गले पर होगा तेरे
९ पिता के बंश तेरे आगे झुकेंगे। यहूदा सिंह का बाच्चा है मेरे
बेटे तू अहेर पर से उठचला वुह सिंह की नाईं बड़े सिंह की

१० नाईं झुका और बैठा उसको कौन उठावेगा। यहूदा से
राजदंड अलग न होगा और न अध्यक्ष उसके बंश से जायगा
जब लों शीलो न आवे और लोग उसके पास एकट्ठे होंगे।
११ उसने अपना गदहा दाख से और अपनी गदही का बच्चा
चुनेऊए दाख से बांधकर और अपने कपड़े दाखरस में और
१२ अपना पहिरावा दाख के लोहू में धोया। उसकी आंखें
दाखरस से लाल होंगी और उसके दांत दूध से श्वेत होंगे।
१३ जबलून समुद्र के तीर पर निवास करेगा और
जहाज़ों का कोल होगा और उसका सिवाना ज़ैदून तक होगा।
१४ इसाखार बलवंत गदहा है जो परतलों तले बैठा
१५ है। और उसने देखा कि बिश्राम अच्छा है और
भूमि सुदृश्य है अपना कांधा बोझ उठाने को झुकाया और
१६ करदेने का दास ऊआ। दान इसराईल के लोगों में
१७ से एक की नाईं अपने लोगों का न्याय करेगा। दान मार्ग
का सर्प और पथ का नाग होगा जो घोड़े की नलियों पर
१८ ऐसा डंसेगा कि उसका चढ़वैया पिछाड़ी गिरपड़ेगा। हे
१९ यहूवा मैं तेरी मुक्ति को जोहताहों। एक सेना जाद को
२० जीतेगी परंतु वुह अंत को आप जीतेगा। आशीर की
रोटी चिकनी होगी और पदारथ जो राजाओं के योग्य
२१ हैं वुह प्राप्त करेगा। नफताली एक छूटा ऊआ
२२ हरिन है जिसकी सींग सुदृश्य हैं। यूसफ़ एक फलमय
डाल है वुह फलदायक डाल जो सोते के समीप है और
२३ जिस की डालियां भीत पर दौड़ गई हैं। धनुषधारियों ने
उसको निपट सताया और मारा और उस्से डाह रक्खा।
२४ पर उसका धनुष बल में दृढ़ रहा और याकूब के शक्तिमान
अर्थात उस गड़रिये के नाम से जो इसराईल का पत्थर है
२५ उसके हाथों की भुजाओं ने बल पाया। वही तेरे पिता का

ईश्वर जो तेरा सहाय करेगा और सर्वसामर्थी है जो तुझे
ऊपर से स्वर्गीय आशीष और नीचे से गहिराव की आशीष
२६ और स्तनों का और गर्भों का आशीष देगा। तेरे पिता के
आशीष मेरे माता पिता के आशीषों से इतने अधिक हैं कि
सनातन पर्वतों के अंतलों पहुंचे और ये आशीष यूसफ़ के
सिर पर और उसके सिर के मुकुट पर होंगे जो अपने
२७ भाइयों से अलग था। बनियामीन फड़वैया हुंडार है
विहान में अहेर खायगा और सांझ को लूट बांटेगा।
२८ ये सब इसराईल की बारह गोष्ठी हैं और जो उनके
पिता ने उनसे कहा यह है और हर एक के विषय में अलग
२९ अलग बर दिया। फिर उसने उन्हें आज्ञा किई और
कहा कि मैं अपने लोगों में एकट्ठे होने पर हों मुझे अपने
पितरों के पास उस कंदला में जो हट्टी अफ़रून के खेत में है
३० गाड़ियो। उस कंदला में जो मखपीला के खेत में ममरा के साम्ने
किनान की भूमि में है जिसे इबराहीम ने खेत समेत अफ़रून
हट्टी से मोल लिया कि वुह एक समाधि स्थान का अधिकारी
३१ होवे। वहीं उन्होंने इबराहीम और उसकी पत्नी सारा को
गाड़ा वहीं उन्होंने इसहाक़ और उसकी पत्नी रबका को
३२ गाड़ा और वहीं मैं ने लिया को गाड़ा। उन्होंने वुह खेत
उस कंदला समेत जो उसमें था हेस के बेटों से मोल लिया।
३३ और जब याक़ूब अपने बेटों को आज्ञा कर चूका तो उसने
बिछौना पर अपने पावं को समेट लिया और प्राण त्याग
किया और अपने लोगों में जा मिला।

५० पचासवां पर्व।

१ तब यूसफ़ अपने पिता के मुंह पर गिर पड़ा और उस पर
२ रोया और उसको चूमा। और यूसफ़ ने अपने वैद्य

सेवकों को कहा कि उसके पिता में सुगंध भरें सो बैद्यों ने
२ इसराईल में सुगंध भरा। और उस पर चालीस दिन
बीतगये क्योंकि जिन पर सुगंध मलाया जाताहै उतने
दिन बीततेहैं और मिसरी उसके लिये सत्तर दिन लों
४ रोये किये। और जब उस पर रोने के दिन बीतगये तो
यूसुफ़ ने फ़रऊन के घराने से कहा कि यदि मैं ने तुम्हारी
दृष्टि में अनुग्रह पायाहै तो फ़रऊन के कानें में कह देउ।
५ कि मेरे पिता ने मुझे यह किरिया लेके कहाहै कि देख
मैं मरताहों तू मुझको मेरी समाधि में जो मैं ने किनानकी
भूमि में अपने लिये खोदीहै गाड़ियो सो इस लिये मुझे छुट्टी
दे कि जाऊं और अपने पिता को गाड़ों और मैं फिर
६ आओंगा। फ़रऊन ने कहा कि जा और अपने पिता को जैसा
७ उसने तुझे किरिया लिई गाड़ियो। सो यूसुफ़ अपने
पिता को गाड़ने गया और फ़रऊन के सारे सेवक और
उसके घर के प्राचीन और मिसर की भूमि के समस्त प्राचीन
८ उसके संग गये। और यूसुफ़ का सारा घराना और उसके
भाई और उसके पिता का घराना सब उसके संग गये और
उन्होंने केवल अपने लड़के और गाय बैल और भेड़ बकरी
९ गोशन की भूमि में छोड़ दिये। और गाड़ियां और घोड़
१० चढ़े उसके साथ गये और बड़ी मंडली थी। और वे अटाद
में उस खलिहान पर जो अर्दन के पार है आये और वहां
बिलाप से रोये और उसने अपने पिता के लिये सात दिन
११ लों शोक किया। और जब उस भूमि के बासियों अर्थात
किनानियों ने अटाद के खलिहान पर यह शोक करते देखा
तो बोले मिसरियों के लिये यह बड़ा पीड़ामय शोक है सो
वुह स्थान मिसरीम अबील कहलाया और वुह अर्दन के
१२ पार है। और उसके बेटों ने जैसा उसने उन्हें आज्ञा किईथी

१३ उसके साथ किया। उसके बेटे उसे किनानकी भूमि में ले
गये और उसे उस मखपीला के खेत की कंदला में जिसे
इबराहीम ने समाधिस्थान के अधिकार के लिये अफरून हती
१४ से ममरा के साम्ने मोल लियाथा गाड़ा। और यूसफ़
आप और उसके भाई और वे सब जो उसके साथ उसके
पिता को गाड़ने गयेथे उसके पिता को गाड़ के मिसर को
१५ फिरे। और जब यूसफ़ के भाइयों ने देखा कि हमारा
पिता मरगया तो उन्होंने कहा कि यूसफ़ क्या जाने हम से
बैर करेगा और सारी बुराई का जो हम ने उस्से किई है
१६ निश्चय पलटा लेगा। तब उन्होंने यूसफ़ को यों कहलाभेजा
१७ कि तेरे पिता ने अपने मरने से पहिले आज्ञा किई। कि तुम
यूसफ़ से कहियो अपने भाइयों के पाप और उनके अपराध
क्षमा कर क्योंकि उन्होंने तुस्से बुराई किई सो अब अपने
पिता के ईश्वर के दासों के पाप क्षमा कीजिये और जब
१८ उन्होंने यह कहा तो यूसफ़ रोया। और उसके भाई भी
गये और उसके आगे गिरपड़े और उन्होंने कहा देख
१९ हम तेरे सेवक हैं। यूसफ़ ने उन्हें कहा मत डरो क्योंकि मैं
२० ईश्वर की संती हों। पर तुम जो हो तुम ने मुस्से बुराई
करने की इच्छा किई परंतु ईश्वर ने उसे भलाई कर दिई
कि बहुत से लोगों का प्राण बचावे जैसा कि आज प्रगट हुआ।
२१ इस लिये तुम मत डरो मैं तुम्हारा और तुम्हारे लड़कों का
२२ प्रतिपाल करोंगा और उसने उन्हें धीरज दिया।
और यूसफ़ और उसके पिता के घराने ने मिसर में निवास
२३ किया और यूसफ़ एक सौ दस बरस जीया। और यूसफ़ ने
अफ़राईम की तीसरी पीढ़ीतक देखा और मनस्सा के बेटे
२४ माखीर के भी लड़के यूसफ़ के घुठनों पर जनायेगये। और
यूसफ़ ने अपने भाइयों से कहा मैं मरताहों और ईश्वर तुम

से निश्चय भेंट करेगा और तुम को इस भूमि से बाहर उस
भूमि में जिसके बिषय में उसने इबराहीम और इसहाक़
२५ और याक़ूब से किरिया खाई है ले जायगा। और यूसफ़ ने
इसराईल के संतानों से यह किरिया लेके कहा ईश्वर निश्चय
तुम से भेंट करेगा और तुम मेरे हाड़ को यहां से ले जाइयो।
२६ सो यूसफ़ एक सौ दस बरस का बूढ़ा होके मरगया और
उन्हों ने उसमें सुगंध भरा और उसे मिसर में मंजूषा में
रक्खा।

CALCUTTA: PRINTED AT THE CHURCH MISSION PRESS.